मोड़पर

मोड़पर

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

MORPAR (मोड़पर)
A Maithili Novel by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-81-951070-4-9
दाम: 250/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2021)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण भाव

अपना-ले सभ जीबै-मरै छी
अपने-ले जीबैक लूरि सीखू
अपने-आन आनमे अपने
सम समदाउन गाएब सीखू।
अपना-ले सभ...।

सम-समदाउनिक गति सीखिते
दिन, दिन-चरिया बनाएब सीखू।
दिने चरिया चरिये दिनक
दिन-चरिया चलाएब सीखू।
दिन-चरिया...।

सभ चाहैए आगू दौड़ी
दौड़-दौड़ीक रूप बनाएब सीखू।
दौड़ा-दौड़ी करैत-करैत
कुदि समुद्रक टपान सीखू।
कुदि समुद्रक टपान...।

अनुक्रमः

पहिल पड़ाव

अंगरेजी शासनक अवसानक समय। जहिना सत्ताक हस्तांतरण भेने शासनक संक्रमण होइए तहिना जन-गणो आ समाजोक बीच संक्रमणक स्थिति बनियेँ गेल छल। एक दिस विदेशी शासनक अन्त आ अपन शासनक आगमनक उत्साहसँ जनगणक मन लबालब भरल तँ दोसर दिस शासनसूत्रसँ बँधल गाम-समाजक सत्ता सेहो उखैर रहल छल। देश सेवाक भावना कहियौ आकि समाज सेवाक भावना, भारतक आइ धरिक इतिहासमे सभसँ उत्साहित छेलैहे। रंग-रंगक कल्पना जनगणक मनक बीच पकड़नहि छल। ओही परिवेशमे कामेसर अछि।

मिथिलाक गामक पहचान, देशक कोनो राज्य हौ आकि राज्यक दोसर क्षेत्र, अप्पन अछिए। एक तँ देशक ग्रामीण इलाकामे मिथिला जहिना जनसंख्याक घनत्वमे सघन अछि तहिना कामो-बेवहारोमे अछिए। यएह छी मिथिला। एक्के काजकेँ अनेको ढंगसँ करैक कला (लूरि) मिथिलामे सभ दिनसँ आबि रहल अछि आ अखनो अछि। यएह बौद्धिक स्रोत मिथिलाक रहल जेकर परिमरजनक संग अपन क्रियाक परिमार्जन करैत समयक संग सभ दिनसँ चलैत आबि रहल अछि। खाएर जे अछि, पलारपुर सेहो एकटा गाम मिथिलाक बिच्चेमे अछि। ओना, ई गाम तीन परगनाक बीचक मोड़मे अछि, माने पलारपुरक पच्छिमक टोल जे जमीनक हिसाबसँ पछबरिया परगनामे पड़ैए, आ गामक पुबरिया टोल, जे छी तँ पलारपुरे गामक टोल, काजो-उदम पलारपुरेबलाक संग अछि मुदा परगनाक हिसाबसँ पुबरिया परगनामे पड़ैए। परगना-परगनाक बीच किछु सामाजिक बेवहारो आ विचारो विचारसँ एक रहितो किछुमे दूरी बनले अछि। पछबरिया परगनाक खेतो आ खेत नपैबला लग्गियो दोसर परगनासँ नमहर अछिए। तहिना पुबरिया परगनाबलाकेँ मालगुजारी[1]

[1] खेतक टैक्स

आठअना कट्ठा बेसी आन परगनाबलासँ लगैए। खाएर जे अछि से अछि मुदा पलारपुरोक अपन पहचान नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि।

आन केतेको गामसँ केतेको मानेमे पलारपुर नीको अछि माने अगुआएलो अछि आ केतेको मानेमे आन गामसँ पछुआएलो तँ अछिए। बेवसायिक हिसाबसँ माने जीवनक क्रियाक हिसाबसँ जे जाति विभाजित समाजमे अछि तइमे पलारपुरक दुर्भाग्य रहल जे खेतमे काज करैबला जे जाति अछि ओ कम अछि आ आन-आन वृत्तिसँ जुड़ल जाति बेसी रहने गामक आधासँ बेसी जमीनमे गाछी-कलम तड़बोनी, खजुरबोनी अछि आ बाँकीमे बाड़ी-झाड़ी घराड़ीक संग किछु जोतसीम जमीन अछि। खाएर जे अछि से अछि। लोकोकेँ ते एते स्वतंत्रता अछिए किने जे अपना गाछीमे नीक आमक गाछ लगाबह कि ताड़े-खजुरक बोन लगाबह आकि सागवाने-सखुआ लगाबह। तेहेन विचार पलारपुरबलामे नहि छैन, सेहो तँ छैन्हे। जहिना जोड़ा लगा-लगा ताड़क गाछ रोपने छैथ तहिना खजुरोक रोपनहि छैथ, मुदा पछबरिया परगनाबला जकाँ गुड़ बनबैक लूरि नहि छैन। तँए कहब जे पलारपुरबलाकेँ गुड़ बनबैक लूरिये नहि छैन सेहो बात नहियेँ अछि। कुशियारक खेती करिते छैथ, कौल्ह-कराह सेहो रखनहि छैथ जइसँ अपन गुड़ो बनबै छैथ आ टीनक-टीन राव सेहो बनैबते छैथ।

देशक आजादीक पहिनेसँ मिथिलांचलक लोक गरीबीक चलैत चाकरी करए बंगालक ढाकासँ लऽ कऽ आसाम, मोरंग धरि जाइ छला। मुदा जाइ छला मरदा-मरदी, स्त्रीगण परिवारमे रहि परिवार चलबै छेलखिन। माने ई जे खेती-बाड़ीसँ लऽ कऽ माल-जालक संग अपनो बच्चा-बुच्चीक सेवा करैत अपन परिवारोक सुरक्षाबल बनले आबि रहल छैथ।

जहिना आर्थिक[2] दृष्टिसँ पलारपुर गाम पछुआएल छल तहिना शैक्षणिक दृष्टिसँ इलाकामे अगुआएलो छल आ अखनो अछि। ओही गामक मध्यमवर्गीय जाति, ऐठाम मध्यमवर्गीयक माने आर्थिक दृष्टिसँ नहि समाजक जातीय दृष्टिसँ अछि, जइमे देवनक परिवार सेहो छैन। ओही

---

[2] कृषि आधारित

देवनक परिवारमे कामेसरक जन्म 1946 इस्वीमे भेल।

आजुक परिवेशमे तँ अधिकांश परिवारक बच्चाक छठियारक समय अस्पतालेमे बीतैए तँए छठियार की हएत आ दाइये-माइ भवितव्य की लिखती वा भोजे-भात की हएत। मुदा से कामेसरकेँ नहि भेल। दुनू भेल। माने दाइ-माइ बैस छठियार दिन कामेसरक नामकरणो केलैन आ भवितव्य सेहो लिखबे केलैन। तहिना नहि पान तँ पानक डंटीए जकाँ भोज सेहो भेबे कएल।

जहिना देशक भीतर अनेको रंगक संस्था अछि आ अपन-अपन क्षेत्रक सीमामे सभ काज करैए तहिना समाजक भीतर दाइ-माइक संस्थाक सीमा सेहो छैन, जहिक अन्तर्गत अपन विधो-विधान लिखबे करै छैथ। माने भेल जे छठियारक राति जे दाइ-माइ एकठाम बैस धरतीपर आएल छह दिनक बच्चाक भाग्य-रेख लिखै छैथ ओ बच्चाक समाजक ओकातिक हिसाबसँ लिखै छैथ। जेहेन परिवारमे जन्म तेहेन भाग्य रेखा। पढ़ल-लिखल सम्पन्न परिवार हुअ आकि धन-बीत सम्पन्न परिवार हुअ, ओहन परिवारक भाग-रेखा लिखैकाल दाइ-माइकेँ जेहेन कलमक प्रयोजन होइ छैन तेहेन कलमक प्रयोजन मूर्ख वा विपन्न[3] परिवारमे नहियेँ होइ छैन। बजैकाल सभ बजिते छैथ जे 'तोहर भाग्य मोटका कलमसँ लिखल छह ते महींका बात केना बुझबहक।' तहिना महींका कलमसँ लिखेलहा सेहो कहिते छैथ जे 'तोरा जकाँ कि हमरा कपारमे मोटका घँसल अछि.!' खाएर ई तँ गप-सप्प भेल।

कामेसरक भाग्य-रेख लिखैकाल जे दाइ-माइ एकठाम बैसली तँ ओहने दाइ-माइ ने बैसली जे ने राजाघर कहियो देखने छेली आ ने बनिया घर। तँए किए राज-सत्तेक विचार आकि कल-कारखानेक विचार मनमे अबितैन। देवन सन ओहन मटिया-मजदूर, मटिया-मजदूर ओ भेला जे कोनो गोदाम वा कार्यालयमे वस्तुक उठा-बैसी करै छैथ। माने एक गोदामसँ अन्न वा कोनो आने वस्तुक बोरा वा आने वस्तु उठा दोसर गोदाममे वा आने ठाम लऽ जाइ छैथ। पचीस बर्खक देवन पाँच बर्खसँ

---

[3] आर्थिक दृष्टिसँ

कलकत्ताक सरकारी गोदाममे मटिया मजदूरक काज करैत आबि रहल छला।

खाएर देवन जे छला से रहौथ, मुदा निष्पक्ष दाइ-माइक कचहरीमे तँ कामेसर ओहने बेटाक रूपमे जन्म नेने छल, जहिना परब्रह्म परमेश्वर राम वा कृष्ण, दशरथ आ नन्दक परिवारमे जन्म नेने छला। मुदा दाइ-माइक प्रवल विचार रहितो जीवनक विचार माने जेहेन जीवनक परिवार अछि, तही अनुकूल ने केकरो भाग्य-रेख लिखती। एते तँ दाइ-माइक बीच सहमत बनले छैन जे समझदार चिलकौर अपन समझदारीसँ बच्चाक सेवा करत। जहिना बिनु दूधोक, माने कोनो कारणेँ माएकेँ दूध नहि भेने, चिलकौर बच्चाकेँ ओहिना पोसि-पालि दुनियाँक रंगमंचपर ठाढ़ करै छैथ जेना सभ तरहक सम्पन्न चिलकौर करै छैथ। दाइ-माइक समूहक बीच सहमत ई बनल छेलैन जे मनुक्खक बच्चा छी तँए मनुक्खे जकाँ फुलेबो-फड़बो करए आ मनुक्खेक वृक्ष जकाँ ऐगला पीढ़ीक जीवनो दिअए। सर्वसम्मति विचार लिखलैन जे बच्चा अपन पूर्ण[4] औरुदाक जीवन पाबए। दोसर विचार जखन जीवन आ जीविका दिस एलैन तखन किछु गोरेक विचार रहैन जे एक लोढ़ी बोनि लिखल जाए, तँ किछु गोरेक विचार रहैन जे जँ भीख मांगि गुजर करत तँ विधि-विधान फुसि भऽ जाएत। जीवन तँ दुनू रंगक अछिए। ..तत्-मत् करैत सभ अही विचारपर सहमत भेली जे जेहेन अपन लूरि-मुँह हेतइ तेहेन जीवन बना अपन दुनियाँ ठाढ़ करैत जीब लेत। सएह भेल कामेसरक छठियार रातिक भाग्य-रेख।

पलारपुर ओहन गाम अछि जइमे विविधतोक भरमार अछि आ एकरूपतो ओहन अछिए जेहेन सभ गाम-समाजमे रहैए। देखबे करै छी जे जखन केतौ आगि लगै छै, गाम समाजक दृष्टिये, बजारू समाज बदैल कऽ ओइठाम पहुँच गेल अछि जे एक मकानक बीच एक डेरामे जँ गौंओं-घरूओ रहै छैथ तँ भेँट होइ छैन मास दिनपर। खाएर ई तँ गौंआँ-घरूआक बात भेल, जे अपन परिवारक भीतर भैयारियो आ बालो-बच्चाक बीच ओहन जीवन बनले जा रहल अछि जे महिना-महिना एक-दोसरमे गप-

[4] सोल्होअना

सप्प भेला भऽ जाइए। सबहक अपन-अपन कारोबार, जइसँ अपन-अपन जीवन सेहो बनियेँ रहल अछि, तइसँ वैचारिक दूरी बनब सोभाविके अछि। मुदा आगि-छाइक समय सभकियो एक भऽ जाइए। आने गाम जकाँ पलारपुरोमे व्यक्तिगत रूपमे दरबज्जो आ पूजो घर बेकता-बेकती सेहो अछि तहिना सामाजिक रूपमे मन्दिर, मस्जिदक संग ठकुरवारी, गहबर, दीना-भद्री आ सलहेसक स्थान इत्यादि सेहो अछिए। जहिना पूजाक दोहरी रूप, धर्मक दृष्टिये, परिवार-परिवारमे अछि तहिना सार्वजनिक माने सामाजिक रूपमे सेहो अछिए। अनेको देवी-देवता ओहन छथिए जे सामाजिक रूपमे सर्वमान्य छैथ, तँ ओहन नहि छैथ जे जातीय रूपमे विभाजित भऽ खास जाइतिक छैथ, सेहो छथिए। सार्वजनिक रूपमे जहिना देवी-देवताक परसाद सर्वमान्य अछि तहिना जातीय रूपमे विभाजित भऽ अमान्य नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि। ओना, जातीय रूपमे विभाजित जे देवी-देवता छैथ तैसंग समाजिको जे छैथ, अपन-अपन मनकामनानुसार कबुला-पाती सेहो करिते छैथ, फल जेहेन भेटौन वा जे भेटौन से तँ अपन-अपन सभकेँ भेटतैन।

बेकतीगत रूपमे जे दरबज्जा बनल अछि ओ बेकतीगत घरक (परिवारक) सामाजिक रूपमे अछि। परिवारक जे घर होइए माने आश्रमी घर ओइमे दोसरक आवाजाही आन जकाँ होइए मुदा दरबज्जाक रूप से नहि अछि। दरबज्जाक रूप समाजक घरक रूपमे अछि। जैठाम आनो (अनठियो) केँ पहुँचला पछाइत घरवारी माने दरबज्जा बनौनिहार, खेबा-पीबासँ लऽ कऽ आराम करै धरिक भार उठबै छैथ तहिना विचार-विमर्शक संग जीवन-मरणक सहारा सेहो बनिते छैथ। यएह छी मिथिलाक दरबज्जा। जइ दरबज्जाक रूप रहल जे कनैतकेँ हँसा विदा करब। जे दरबज्जाक मान प्रतिष्ठा भेल। ओना, लक्ष्मीनाथ गोसाईं सेहो अनेको गाममे अनेको दरबज्जा बनैलैन मुदा हुनकर दरबज्जाक रूखियो आ बेवहारो दोसर छेलैन। हुनकर दरबज्जाक रूखि छेलैन दरबज्जाक आगूक पोखैर। जे पोखैर जनसमूहक सहारासँ खुनबै छला। आ दरबज्जाक नाम बदैल 'कुट्टी' वा 'स्थान' रखै छला, जइमे जीवनक मूल-तत्त्वक प्रवचन

सेहो करै छला आ मूल-तात्विक सेहो सहयोगीकेँ बनबै छला, जइसँ जाति-पाँजिकेँ लथाइर मनुक्खक जीवनकेँ श्रेष्ठ मानै छला। अपन जीवनकालमे लक्ष्मीनाथ गोसाईं बीससँ ऊपर रौदी, जेकरा मिथिलांचलमे अकाल सेहो कहल जाइए; लगसँ देखि-भोगि चुकल छला तँए पानिक की महत्व जीवनमे अछि तेकरा नीक जकाँ ओ जनैत रहैथ। अपन ऐ विचारकेँ दोसरोकेँ जना लक्ष्मीनाथ गोसाईं पोखरिक निर्माण करबो केलैन आ करेबो केलैन।

शिक्षण संस्थानक रूपमे पलारपुरमे मात्र एकटा संस्कृत विद्यालय अछि, बाँकी विद्यालय माने सामान्य विद्यालय गाममे नहि अछि। पलारपुर, सोनवरसा, नवनगर, धनकरही इत्यादि सात गाम मिला सोनवरसा नामक पंचायत अछि। मिडिल स्कूल तकक पढ़ाइ पंचायतमे होइए। पलारपुरक संस्कृत विद्यालयमे गामोक किछु खास जातिक आ आनो-आन गामक लोक पढ़िते छैथ। कामेसर जइ जातिक अछि तइ जातिक बच्चा सभ गामक विद्यालयमे नहि पढ़ैए। ओना, संस्कृत विद्यालयमे जहिना नीक शिक्षा भेटैए तहिना बच्चाकेँ, छात्रकेँ भोजनो आ पढ़ै-लिखैक किताबो-कॉपी विद्यालयेसँ भेटैए। सभसँ पैघ विचार अछि जे शिक्षको आ छात्रो एक्के भोजनालयक भोजनो करै छैथ आ एक्के ओछाइन-बिछाइनपर रहितो छैथ। तँए कहब जे परिवार नहि छैन सेहो बात नहियेँ अछि। लग-पासक जे शिक्षक छैथ ओ अपन परिवारेसँ, माने गामेसँ विद्यालय अबै छैथ मुदा जे बाहरक छैथ ओ छात्रेक संग जीवनधारण केने छैथ। यएह छी जीवनक संक्रमणक क्रिया। चौबीस घन्टा, माने दिन-राति नियमित रूपसँ जीवन जेहेन चलब गढ़ब तँ ओहने जीवन ने ठाढ़ हएत। खाएर जे हएत से पलारपुरबला अपन सीखता।

पलारपुर गामोमे आ परोपट्टोमे माने आनो-आन गाममे जहिना किछु क्रियामे एकरूपता अछि तहिना बहुरूपतो अछिए। तइ बीच ईहो प्रक्रिया चलिते अछि जे जहिना किछुमे तोड़ होइए तहिना जोड़ सेहो भइये जाइए। यएह तोड़-जोड़ जे अछि ओ गतिशीलतो अनैए आ गतिहीनो तँ बनैबते अछि। आने गाम जकाँ पलारपुरमे बेटा-बेटीक बिआहो-दुअरागमन आ बेटाक मूड़नोमे जहिना एकरूपता अछि तहिना बहुरूपता सेहो

अछिए। ओना, जहिना आन समाजक (आन गामक जातीय समाजक) किछु बेवहार पलारपुरोमे अछि तहिना पलारपुरक बेवहार आनो गाममे अछिए। तेतबे नहि अछि, गामक बीचक बेवहारमे सेहो विविधता अछि, एक जातिक क्रियाक चलैन किछु आरो अछि आ दोसर जातिक क्रियागत चलैन किछु आर। तेतबे नहि अछि जइ जातिक बीच एक चलैन अछि ओहू बीचमे आर्थिक ओकातिक हिसाबसँ सेहो विभिन्नता अछिए। यएह विषमता समाजक नियमसूत्र बनबैए जइसँ समाज भविस दिस बढ़ैत ठाढ़ रहैए। अपना ऐठाम माने मिथिलामे, समाजक बीच जे चलैन अछि ओ एक काज वा बेवहार रहितो अनेक रूपमे लतरल-चतरल सेहो अछिए। तँए केतौ एक साए आठक चलैन अछि तँ केतौ सोझे आठक चलैन अछि। एक यज्ञ-जपक अनेको रूप अछि। जइसँ कहल जाइए जे भावमे जँ पूर्ण पान अछि, जेकर खेबाक चलैन भोजनक पछातिक अछि, तैठाम ईहो तँ अभावमे कहले जाइए जे नहि पान तँ पानक डंटियोसँ यज्ञ पूर्ति कऽ लेबाक चाही।

बिआहो-दानमे देखिते छी जे जैठाम एक गोटाक बरियातीसँ विवाह यज्ञ पूर्ण होइक सम्पूर्णता प्राप्त करैए तैठाम सइयो गोटाक बरियातीसँ अपूर्णता नहि प्राप्त करैए सेहो बात नहियेँ अछि। तैठाम ई कहब जे पलारपुरमे बरियातीक धमगज्जर नहि होइए, सेहो बात नहियेँ अछि। एकठाम जहिना देखै छी जे पितो अपन इमान बँचा पुत्रकेँ अपनो योग्य बनबैक परियास नहि करै छैथ तैठाम इमान गमा नहि बनबै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि सेहो बनैबते छैथ। ऐठाम इमानक अनेको रूप गुणानुकूल अछि, तँए अखन से नहि। अखन एतबे जे सबहक सभकेँ माने जहिना पुत्रकेँ तहिना पिताकेँ माने जन्मदाताकेँ अपने ऊपरसँ अपन बिसवास कमल जा रहल अछि। तैठाम आन तँ सहजे आन भेला। किए अपना ऊपरसँ सबहक बिसवास अपने उठल जा रहल अछि? की ओइ बिसवासकेँ पुन: घुमा कऽ नहि आनल जा सकैए सेहो बात नहियेँ अछि। आने गाम जकाँ पलारपुरोमे रंग-रंगक गुरुआइ करैबला गुरु-गोसाईं सबहक आगमनो छैन्हे। तैसंग गामक अपनो गुरुआइ करैक धन्धा नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि। जहिना जाति-धर्मक नामपर तहिना कर्म-

क्रियाक नामपर गुरुक वन पसरले अछि। माता-पिता लगसँ जे गुरुआइ बच्चाकेँ शुरू होइए ओ परिवार समाज होइत देश-दुनियाँक सेहो होइते अछि.! एक समाज रहितो कियो कहता ‘माछ खाएब शरीरक लेल हितकर अछि’ तँ कियो कहता, ‘माछ खाएबे पाप छी।’ कियो कहता, ‘बेसी खाएब अहितकर अछि’ तँ कियो कहता, ‘कम खाएब अहितकर अछि।’ तँ कियो कहता, ‘कम खाएब हितकर अछि।’ एहेन-एहेन मुँह फँसौल झगड़ा-झंझट आने गाम जकाँ पलारपुरोमे अछिए।

सिंहेश्वर दास, मनधन दास, कृत्तिधर दास आ रघु दास चारू गोटा अपन-अपन सम्प्रदायक बेना उठा दिन-राति लगले रहै छैथ। चारूक अपन-अपन चास-बास छैन्हे। चारू अपन-अपन इलाका जोति-कोरि महंथाइयो करै छैथ आ अपन पंथक प्रचार-प्रसार सेहो करिते छैथ। एक-सँ-एक चारू महंथक महंथाइक इतिहास समाजमे ओहिना जगजगा रहल छैन जेना कोनो आन गामक जगजगाइए। पहिल महंथ- सिंहेश्वर दासक अपन गुण छैन। माने बिआह-दुरागमन भेला पछाइत अपने मनमे पत्नीसँ वैराग्य जगि गेलैन। जगिते सोझे जा कऽ अपन ससुरकेँ कहलखिन जे अपन बेटीक दोसर बिआह करा दियौ, हमहूँ सोझामे बैसल रहब। अपन पत्नीकेँ अपने सोझामे दोसराइतक संग लगा अपने ओहिना महंथाइ कइये रहला अछि। पहिने माने शुरूमे तँ सालमे मास-दू मास अपन पितृभूमि बुझि गाममे रहबो करै छला मुदा आब तँ तेते भारी महंथ भऽ गेला जे दस-दस सालक पछाइत गोटे दिन ले गाम अबै छैथ। तँए कहब जे ओहन महंथ नहि छैथ जे तीन-तीनटा बिआह नहि केलैन वा पुलिसक हाथे मारि नहि खेने छैथ। सेहो छथिए।

आने गाम जकाँ पलारपुरमे सेहो सालमे एक बेर अष्टयाम-कीर्तन महावीरजीक स्थानमे होइए तहिना महादेव स्थानमे सेहो नवाहो आ शिवरातिक उत्सव होइते अछि तैसंग दुर्गास्थानमे आसीनक नवरात्रा होइए तँ ठकुरवारीमे सौनक शुक्ल एकादशीसँ पूर्णिमा दिन तक झूला सेहो होइते अछि। जहिना गाममे अनेको जाति अछि तहिना घरे-घर माने परिवारे-परिवार अनेको रंगक देवी-देवताक पूजा सेहो होइते अछि। जइसँ किछु-ने-किछु एक-दोसरमे अन्तर सेहो अछिए। स्पष्ट रूपेँ दूटा अन्तर तँ देखिये

पड़ि रहल अछि। पहिल अछि जे देवी-देवताक अपन-अपन खास फूलो आ फलोसँ सिनेह रहने किछु-ने-किछु अन्तर अछिए। ओना, एहनो चलैन अछिए जे खास फूल-फल पसिन रहितो सहरगंजा माने सतरंगा फूलो आ फलोक जहिना चढ़ौआ तहिना पूजो होइते अछि। मुदा किछु अछि आ केतबो अछि तैयो सौंसे गामक लोक एकटा अपृथक समाज बनि एकठाम बास करिते छैथ।

जहिना गाममे अष्टयाम, कीर्तन, पूजा-पाठ होइए तहिना कबीरपंथक माने निर्गुण पंथक बेकतीगतो आ सामूहिको रूपमे सेहो चौको-पान आ भनडारो होइते अछि। रमाउत पंथक सेहो भनडारो आ रामो-धुन होइते अछि। तैसंग दीनाभद्रीक (दादाजीक) गहबरो आ सलहेसो, धर्मराज स्थानमे सेहो सालमे एक बेर भगैत-भगताइ होइते अछि। जे सामाजिक रूपमे सेहो होइते अछि। खाएर जे अछि मुदा एते तँ स्पष्ट अछिए जे जेते परिवार पलारपुरमे छैथ ओ सभ कोनो-ने-कोनो पंथो-सम्प्रदाय आ जातियोसँ जुड़ल छथिए। तँए कहब जे समाजमे एकरूपता नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए। जहिना जातीय भोजन-भजन बेकतीगत अछि तहिना सामाजिक सेहो अछिए। भलेँ श्राद्धक भोजकेँ जातीय भोज मानि पितृक उद्धार मानल जाइए मुदा एगारह जन कहि समाज नहि मानल जाइए, सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए।

जहिना पंथ-पथीक पथक बीच समाजमे सीमा-रेखा खिंचल अछि तहिना विधि-बेवहारसँ लऽ कऽ समाजक जीवनक संग कला-कौशल-साहित्य-संस्कृतिमे सेहो अछिए। पलारपुर गाममे चारिटा नाच-नाटकक मेड़िया अछि। ओना, कीर्तनिया-मण्डली आ छकरवाजीक मेड़िया सेहो अछि मुदा ओ मेड़िया नहि मेड़ जकाँ छोट आँटक अछि। माने ई जे जहिना नचनिया तहिना बजनिया अछि। जहिना कीर्तन केनिहारक संग एकटा तबला वा ढोलक बजौनिहार, एकटा झालि-मजीरा बजौनिहार रहै छैथ तहिना छकरवाजीमे सेहो बजनियाक संग झलिवाह रहिते छैथ जिनकर सहयोगसँ छकरवाजी चलैत अछि। मुदा नाट्य पार्टी से नहि होइए। अनेको जातीय भावक संग अनेको कलाकारो आ कलाकारक कलाकारी, माने कौशलक कौशल मिश्रित भऽ चलिते अछि। रामलीला पार्टीमे जहिना

दर्जनो कलाकार अपन-अपन भार फुटा कियो राम तँ कियो रावण बनि अपन जीवनक अदाकारी देखैबते छैथ। मुदा से रासलीला आ कदमलीलामे नहि होइए। जहिना ज्ञानी ब्रह्मानन्दमे लीन होइ दिस बढ़ै छैथ तहिना भक्त प्रेमानन्द दिस बढ़िते छैथ। खाएर जे जे छैथ ओ तँ अपन-अपन मनराजक बात भेल। ऐठाम तँ मात्र पलारपुर गामेक बात टा अछि।

जहिना आन-आन गाममे बेकतीसँ समाज आ समाजसँ बेकती बनैक अनेको रास्ता अछि तहिना पलारपुरमे सेहो अछिए। जीवनक सभ क्षेत्रमे एहेन रास्ताक ढबाहि लगले अछि जइमे एक-दोसरक बीच संक्रमण होइते रहैए।

अखन स्वतंत्रता दौड़क, माने अंगरेजी शासनसँ मुक्त हेबाक दौड़क, समयक चर्च भऽ रहल अछि तँए ने बहुत पाछूक चर्च भऽ रहल अछि आ ने बीर्तमानक, जे आजादीक बहत्तैर-तिहत्तैर बर्खक पछातिक अछि। जहिना मिथिलांचलक भूमि सभ दिन उर्वर रहल तहिना जनसंख्याक बाढ़ि सेहो रहबे कएल। जइसँ गरीबक बीच गरीबियो सभ दिनसँ आबिये रहल अछि। अपना ऐठामक लोक जेर बना-बना माने सामूहिक रूपमे दस-बीस, पचीस-पचास, किसानी जीवनसँ जुड़ल काज करैले नेपालक पुबरिया इलाकासँ लऽ कऽ आसाम, बंगाल धरि कमाइले जाइ छला। पलारपुरक लोक सेहो साले-साल माने सालक छह मास, धनरोपनीसँ धनकटनी धरि करैले ग्रामीण इलाकामे जाइ छला। कलकत्ता शहरक रूप औझुका जकाँ तँ नहि छल, मुदा कलो-कारखाना आ कारोबारक उद्योगो-धन्धा तँ चलिते छल। गमैया मजदूर, खेतमे काज करैबला मजदूर जखन कलकत्ता जाए लगला तखन हुनकर हाथक काज बदललैन। जइसँ रिक्सा, ठेला चलौनाइक संग उट्ठा श्रमक श्रमिक, उट्ठा श्रमिक भेल जेकर ने काजक समय निर्धरित अछि आ ने मजदूरी निर्धारित अछि, बनि काज करै छला। जैठाम जेहेन काज रहल तैठाम तेहेन मजदूरी भेटै छेलइ। किछु दिन पूर्व तक माने जखन देशक बीच आजादीक आन्दोलन चलि रहल छल, मुदा ग्रामीण इलाकामे ओ रूप नहि पकैड़ पेने छल जे 1942 इस्वीक पछाइत पकड़लक, ताधरिक जे समय छल तइ समयक चर्च छी।

एक्के-दुइये, गामसँ, मुदा परोपट्टाक समूह रूपमे, माने दस-बीस, पचीस-पचासक जेर बनि कलकत्ता सेहो जाए लगल छला। पलारपुरसँ सेहो पान-सात आदमी साले-साले, माने सालक आठ-नअ मास, कलकत्ता मटिया-मजदूरक काज करए जाइ छला। बरसातक समयमे काजमे किछु कमी अबै छल, माने जखन काज कमि जाइ छल, तखन ओ सभ गाम आबि खेतीक काजसँ पुन: जुड़ि जाइ छला। बंगालमे अपना सभसँ बेसी बरखा होइए, से एके-दुइये साल नहि, सभ साल होइए। बंगालक खाड़ीसँ जेहेन मानसून बनैए ओही अनुकूल अपना सभकेँ बरखा होइए।

अठारह बर्खक देवन, किसानी जीवनक अनेको काज सीख नेने छल। अपना ऐठामक जे किसानक जीवन छल ओ ओहन बनले छल जे बरखा भेलापर धनरोपनी चलै छल आ अगहनमे जखन धान तैयार होइ छल माने धान पाकि जाइ छल, तखन धनकटनी होइ छल। जहिना अपना ऐठाम लोकक (जन संख्याक) सघनता अछि तहिना गामोक सघनता अछिए जइसँ उपजाउ भूमि कम अछिए। अखन मध्य मिथिलाक चर्च भऽ रहल अछि। मध्य मिथिलामे जहिना लोकक सघनता अछि तहिना गामोक अछिए। जे आन भागमे नहि अछि। मिथिलांचलक जे पुबरिया-उतरबरिया भाग अछि ओइमे जहिना जनसंख्याक पतराहट अछि तहिना गामो पतराएल अछिए। जेकर जीवन्त रूप अखनो एहेन अछि जे जहिना कोस-कोस भरिपर गाम अछि तहिना मध्य भागमे कोसक बीच चरि-चरि पँच-पँचटा गाम अछि।

अखन तक देवन खेतोक मजदूर ओहन नहि बनि सकल छल जे अपन उकीतसँ काज करैत। अपन उकीतक माने भेल ओहन श्रमिक जिनका कोनो काजक पूर्ण ज्ञान छैन। माने भेल जे जिनका काज करैक तौर-तरीकाक दक्षता छैन। जिनका से नहि छैन जे अपन उकीते कोनो काज सिरैज ओकरा अन्तिम सीमापर पहुँच फल नहि पेलौं। कोनो काज करैक दक्षता मनुक्खमे जखन आबि जाइए तखन ओइ काजक तीत-मीठ माने नीक-बेजाए सेहो बुझए लगैए। काजोक तँ अपन चरित्र अछिए। कोनो काज एहेन अछि जइमे श्रमसँ बेसी श्रमिक भेटैए आ कोनो काज एहनो तँ अछिए जइमे श्रमक अपेक्षा श्रमिक कम भेटैए। देवन अखन ई

बात नहि बुझैए। ओ एतबे बुझैए जे बाप-दादा जेना करैत एला अछि तहिना करैत आगू दिस बढ़ैत चली। ओकरा ई उकीत नहि छै जे गतिशीलक संग गतिशील बनए पड़ैए। अपन काजक किछु ऊहि सेहो बनैबते अछि। मुदा तैयो एते तँ भइये रहल अछि जे जहिना दोसर श्रमिककेँ मजदूरी भेटै छै, तेते देवनकेँ सेहो भेट जाइए। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि जे बारह-तेरह बर्खक जहिया देवन छल तहियेसँ अपनो आ परिवारोक स्थिति देखि पिताक संग बोइन करए जाए लगल छल। ओना, धनुषधारीक मनमे ईहो रहैन जे जखन अपना खेत-पथार नहि अछि तखन तँ वएह जीवन ने देवनोकेँ जीबए पड़तै जे अपन अछि। तइले ते जहिना अपने जे लूरि सीखने छी ओ जखन देवनोकेँ भऽ जाएत तखन ने ओकरो अपने जकाँ सभ दिन कमाइक आशा बनने जीवन चलैत रहत। सइयो रंगक काजसँ बेधल गामो आ समाजो अछिए। माने अन्न-पानिक खेती-पथारीक काजसँ लऽ कऽ गाछी-बिरछी, खढ़-खरहोरिक संग मालो-जाल आ घरो-दुआर बनाएबक संग अनेको काज गाममे अछि। जइसँ बारहो मास कोनो-ने-कोनो काज चलैक समय रहिते अछि। मुदा से सभ ले नहि।

ओना, अपना इलाकामे माने मिथिलांचलमे बाढ़ि-रौदीक प्रकोप आइये नहि सभ दिनसँ रहल अछि। तेकर जड़ि कारण बंगालक खाड़ीसँ उठल मानसून आ उतरबरिया पहाड़ अछि। माने हिमालयक हिमखण्ड भागसँ निकलल बर्फीली पानिसँ पैघ-छोट नदीक जाल बिछाएले अछि। सुनले-बुझल बात अछि जे बारह बर्खक रौदी भेला पछाइत त्रेतायुगमे मिथिला नरेश राजा जनक जखन अपने हाथे हर जोतलैन, तखन रौदियो मेटाएल आ सीता सन जग-जननी बेटियो भेटलैन। यएह तँ जीवन छी, अपन हाथ जखन अपन देहो आ मनोक भार हथिया लेत तखने योगिराज जनक जकाँ एकटा हाथ अग्निकुण्डमे तँ दोसर हाथ प्रेमक छाती पेब सकैए।

अपना संग देवनक काज देखि धनुषधारीकेँ एतेक बिसवास मनमे जगिये चुकल छेलैन जे जँ बेटा ओहुना चलैत रहत तैयो परिवारमे कहियो दुख-दरिद्रा नहि औत। ऐठाम पिताक चर्च भऽ रहल अछि, ओना आजुक

परिवेशमे परिवारक माने पैछला पीढ़ीकेँ तोड़ि ऐगला पीढ़ीक संस्कारक अंगीकार भेल जा रहल अछि। जखने माता-पिताकेँ स्वस्थक अवस्थामे कोनो खगता भेने, बेटा-पुतोहुसँ संतोषजनक पूर्ति होइए तँ माता-पिताक बिसवास बेटा-पुतोहुपर बढ़िते अछि, जइसँ ओ श्रद्धाक पात्रक रूपमे हृदयमे अंकित भइये जाइए।

बीस बर्खक अवस्थामे देवनकेँ अपन मसियौत भाय- कुशेसरसँ भेँट भेलैन। कुशेसर तीन सालसँ कलकत्तामे रहि रहल छैथ। अखन तकक जीवनक दुनियाँ जे देवनक छल तइमे एकाएक जेना अन्हार रातिमे चान निकलल, तहिना कुशेसरसँ भेँट भेलापर देवनकेँ भेल। कुशेसर अपन पैछला, माने कलकत्ता जाइसँ पहिलुका जिनगीक खिस्सा सुनबैत अखुनका जिनगीपर आबि तखन अँटकल जखन मुहसँ अपने खसलै- ‘देह धुनि जखन देहक सेवा करैक अछि तखन दुनियाँ केतबो रंगक किए ने हुअए मुदा चलनिहार ले ते एक्केरंग अछि।’

ओना, कुशेसरक बात देवन नहि बुझि पेलैन, मुदा अपना मनमे जे भाइक जीवन देखि-देखि नाचि रहल छेलैन ओ तँ जगले छेलैन। बजला-

“भैया, भरि दिन काज करै छिऐ तँ केते कमाइन होइए?”

देवन अखन सोल्होअना गामक ओहन लोक अछि जे ने सेर-पसेरीक हिसाब बुझैत आ ने अगुआएल-पछुआएल काज। मुदा कुशेसरक देहक चिष्टा आ कपड़ो-लत्ता देखि देवनक मन एकाएक डोलि गेल छेलैन। ओना, डोलबोक दू रूप अछि, एक अछि अनका देख, माने अपन परिवारसँ इतरकेँ देखि डोलब आ दोसर अछि अपन लगक माने परिवारक लोककेँ देखि डोलब। कुशेसरकेँ देखि देवनकेँ तहिना भेलैन। ओना, तहूमे जँ आयुक बेसी दूरी रहैत तखन जे रूप होइत ओ दोसर रंगक होइत मुदा एकउमेरिया रहने, भैयारीमे एक उमेरिया रहने आकर्षित हएब सोभाविक भइये जाइए, सएह भेलैन देवनकेँ।

अपन बदलल जीवनक पूर्वक जीवनकेँ पकैड़ कुशेसर बजला-

“बौआ, दुनू भाँइ एकउमेरिये छी, साले भरिक जेठाइ-छोटाइ दुनू भाँइमे अछि, तँए मनमे ई नहि हुअ जे कुशेसरक ऊपरमे जीन चढ़ि गेल

अछि आकि मनुखदेवा। तोरे जकाँ हमहूँ जखन गाममे रहै छेलौं तखन जहिना तोरा भरि दिनक बोइन भेटै छह तहिना हमरो भेटै छल। मुदा जहियासँ कलकत्ता गेलौं आ ओइठाम काज करए लगलौं तहियासँ घरो थीर भेल आ अपनो मन थीर भेल। नहि तँ गाहीक-गाही खगताक भूर जहिना घरक माने परिवारक छल तहिना अपन शरीरक।"

कुशेसर सेहो देवने जकाँ बिनु पढ़ल-लिखल लोक मुदा कलकत्ता गेलापर देखलैन जे गामसँ सभतरहेँ कलकत्ता अगुआएल अछि। जखने पछुआएल ससैर कऽ आगू बढ़ैए तखने सभ चीज अगुआ जाइते छइ। एकर माने ई नहि बुझब जे सोलह साए एकतीस इस्वीसँ पूर्व कलकत्ता ऐसँ भिन्न छल। ओइ समयमे जहिना अपना सबहक पूर्वज छला तहिना हुनको सभक छेलैन।

कुशेसरक पिता छह साल पहिने मरि गेल छेलखिन तँए कुशेसरपर परिवारक भार पड़ि गेने, परिवारक जे अनुभव कुशेसरकेँ छेलैन से देवनकेँ नहि छेलैन। किए तँ देवनक पिता धनुषधारीकेँ जीवित रहने परिवारक भार देवनपर नहि पड़ल छेलैन तँए जे अनुभव कुशेसरकेँ छेलैन से देवनकेँ नहि छल। अपन अनुभवक हिसाबसँ कुशेसर बाजल छला। गाहीक-गाही भूरक अर्थ देवन नहि बुझि बजला-

"भैया, हमहूँ कलकत्ता जाएब। अहीं संगे रहब।"

कुशेसर बजला-

"हमरा संगे जाइमे कोनो हर्ज नहि। जखन देहे धुनि केतौ खेबह तँ जैठाम चिड़ै जकाँ लोल बेसी भरत तैठाम ने रहब नीक हएत। मुदा बिना माता-पिताक विचार नेने केना जेबह।"

देवन बाजल-

"जाइमे केते खर्च हएत?"

कुशेसर बजला-

"खर्चक कोनो बात नहि, अपना नइ हेतह ते तत्खनात हमहीं देबह आ कमा कऽ वापस कऽ दिहह। मुदा माता-पिताक विचार नेने बिना जे हम लऽ जेबह तँ हमहीं ने दोखी हएब। सभ यएह ने कहता जे फल्लाँ

फुसला कऽ देवनकेँ लऽ गेलै आ जे कमेतै से ठकि-ठकि लेतइ।"

अपना जनैत कुशेसर अपन ऐगला जिनगी देखि बाजल छला मुदा से देवन नहि बुझि पेलैन। ओना, देवनमे अखन ओ विचार नहि जागल छैन जे माता-पिता की छिया आ हुनकर विचार आ जीवन की छिऐन। तँए कुशेसरक विचारकेँ परवाहि केने बिना देवन पुन: बजला-

"भैया, जहिया कलकत्ता जाए लगब तहिया हमरो कहब। हमहूँ जाएब।"

देवनक जिद्द देखि कुशेसर बजला-

"बौआ, बाबूकेँ तूँ नहि पुछबुहुन तँ हमहीं पुछबैन मुदा बिनु विचारे केना लऽ जेबह।"

देवन बजला- "हमहीं कहबैन। अहाँ कथी-ले कहबैन।"

देवनक बात सुनि कुशेसरक मन मानि गेलैन जे भने अपन दुनू बापूतमे विचारि लेत से बेसी नीक हएत।

पनरह दिनक पछाइत कुशेसर जखन कलकत्ता जाइक तैयारी केलैन तँ मनमे उठलैन जे नीक हएत जे दू दिन पहिनहि देवन ऐठाम जा दुनू बापूतक बीच सोझा-सोझी गप-सप्प करब। मनमे ईहो उठलैन जे जखन मेहनतक जिनगी बनौने छी तखन चोरा-नुकी चालि पकड़ैक कोन खगता अछि। काजे ने लोकक जिनगियो आ समयोक गवाही दइ छइ।

एते दिन कुशेसरकेँ कलकत्ता जाइमे संगीक जरूरत होइ छेलैन, मुदा आब ओ बुझि गेल छैथ जे समस्तीपुरमे जे गाड़ी पकड़ब वएह गाड़ी हावड़ा वा सियालदह जंक्शन पहुँचा देत। समस्तीपुर तँ सहजे अपन जिले छी..।

जइ दिनक विचार माने कलकत्ता जाइक विचार, संगी सभक संग कुशेसर केने छला तइ दिनक समाद सासुरसँ आबि गेलैन जे सासु भेँट करैले कहलैन अछि। कलकत्ता जीवनक बीच कुशेसर काजक महत्व बुझि गेल छैथ जे काजक महत्व जीवनमे सभसँ ऊपर अछि। तँए कलकत्ताक संगीक समय छोड़ि अपन समय कुशेसर मने-मन बनौलैन जे एक तँ सासुरक तहूमे सासुक समाद छी, नइ केना जाएब। कलकत्ता जाइक संगी

चलि जाएत तँ चलि जाह, असगरो तँ जाइये सकै छी, तहूमे जँ देवन जाएत तँ ओहो संगी हेबे करत। भेल तँ संगीक जरूरत एतबे ने जे गाड़ीमे गप-सप्प केनिहार होथि आ जखन बाहरक काज, माने गाड़ीसँ बाहरक, करए निकलब तखन झोरा-झोरीक ओगरवाहि हुअए जे चोर ने चोरा लिअए। दुनू काज कोनो असाध थोड़े छी। जखन मनुक्ख छी, संगमे मुँह अछि तखन जँ लगमे बैसल मुँहबला मनुक्खसँ मुँहमिलानियोँ नहि कएल हएत तखन कि गामे गोबरबैले जन्म नेने छी...। सोचैत विचारैत कुशेसर अपन विचार, कलकत्ता जेबाक विचार, सीकपर लटका कऽ रखि लेलैन जे पहिने सासुर जाएब, ओइठामसँ एला पछाइत देवन ऐठाम जाएब आ ओइठाम जे विचार हएत तइ अनुकूल समय बना कलकत्ता जाएब।

अपन निर्धारित समयपर कुशेसरक संगी सभ कलकत्ता चलि गेला। अपन परिवारक काज सम्हारैमे कुशेसर पछुआ गेला। मुदा मनमे मिसियो भरि सन्देह नहि उठलैन जे संगी दुआरे कलकत्ता नहि जा हएत। कलकत्तामे चारि सालसँ रहि कुशेसर एते तँ बुझिये गेल छैथ जे जीवनमे अहिना आगू-पाछूक संगीक संग जीवनक गाड़ी चलिते अछि। परिवारोमे तहिना ने होइए जे कहियो पिताक अभिभावकत्वमे परिवार चलैए तँ कहियो अपना अभिभावकत्वमे आ कहियो पुत्रक अभिभावकत्वमे सेहो चलबे करत। अपन-अपन सभक सीमा छैन्हे।

कलकत्ता जाइसँ दू दिन पहिने कुशेसर देवनक ऐठाम जा मौसा लग पहुँच प्रणाम करैत बजला-

“मौसा, परसू कलकत्ता जाएब, देवन सेहो कहने रहए जे हमहूँ जाएब, से अहाँक की विचार?”

कुशेसरक बात सुनि धनुषधारीक मन आगू-पाछू देखए लगलैन। पैछला जीवन की छल आ अखुनका की अछि..? अपने तँ ओहन जीवनक अभ्यस्त बनि गेल छी जे जएह अछि तहीमे दिन काटै छी, मुदा ऐगला पीढ़ीले तँ ऐगला जिनगी चाहबे करी। अपन भार कुशेसरपर दैत धनुषधारी बजला-

“बौआ, तोहूँ कोनो आन नहियेँ छह। बेटा बनि देवन जखन जन्म

लेने अछि तखन दुनियाँमे केतौ रहि अपन जीवन सुधारैत चला सकैए। मुदा उन्नैस-बीस बर्खक रहितो देवनकेँ साए तक अपने ने गनए अबै छै आ ने अपन नामे-गाम लिखए अबै छै, तखन गाम छोड़ि बाहर केना जाएत।”

धनुषधारीक विचार सुनि कुशेसर मने-मन विचारलैन जे अपनो तँ एहने छेलौं, मुदा सतसंग भेने एते तँ भइये गेल अछि जे अपन जीवन-मरणक बात बुझए लगलौं अछि। कुशेसर बाजल-

“मौसा, एहेन कि देवनेटा अछि आकि एहेन लोकसँ गामे समाज भरल अछि। कलकत्ता गेलापर सभ सीख लेत।”



शब्द तिथि: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

दोसर पड़ाव

मौसी ऐठाम कुशेसर रूकला नहि। गप-सप्प केलाक पछाइत माने मौसासँ विचार लेला पछाइत, कुशेसर जहिना गेल छला तहिना लगले अपन गाम घुमियोँ गेला। ऐठाम ई नहि बुझब जे कुशेसरकेँ मौसे कि मौसीए आकि देवने, रहैले नहि कहलकैन। सभ कहलकैन, मुदा काजुल लोकक जीवन काजमे तेना जुलि बन्हा जाइए जे अपन सुधि-बुधि सभ बिसैर काजक संग दौड़ए लगैए। चारि-पाँच सालक कलकत्ता प्रवासक अनुभवी जीवन कुशेसरकेँ तेना सिखा देने छेलैन जे बुझि गेला जे मनुक्ख सैकड़ो बन्धनसँ बन्हाएल अछि, मुदा गाए-महींस जकाँ डोरी गरदैनमे नहि लगल छै। कुशेसर नीक जकाँ बुझए लगल छैथ जे सइयो कि हजारो बान्ह-छेकमे मनुक्ख बान्हल अछि मुदा ओ अछि जीवनक क्रिया, बेवहार आ विचारमे। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे कुशेसर कौल्हुके भरि समय देखि माने बीचक एक दिन, अपनो तैयारीक संग परिवार-समाजसँ भेँट करैत, अपन अनुपस्थितिक भार परिवार-समाजपर देला पछाइत गाम छोड़ि बाहर जेता।

बीच रस्तामे, माने देवन ऐठामक रस्ताक बीचमे, जखन कुशेसर पहुँचला तखन देवनक कलकत्ता ठौर-ठेकानपर नजैर गलैन। नजैर जाइते बुझि पड़लैन जे जहिना कोठीमे चाउर रहने केहनो भुखल-दुखल अभ्यागत वा केतबो अभ्यागत किए ने दरबज्जापर आबैथ मुदा तइसँ कि घरबैयाक मुँह जहिना थोड़बो मलीन नइ होइए तहिना कुशेसरक मनमे सेहो उठलैन। मनमे उठलैन जे जखन कमासुत बनि जन्म नेने छी तखन काजक कमी दुनियाँमे अछि। काजक कमी तँ ओकरा ले अछि जे जीबलाह पुरुख आकि भरछुलाहि स्त्रीगण जकाँ काजक टिपौड़ी होइए। मुदा जे काजक कर्ता अपनाकेँ बुझैए, ओ अपन कीर्तपन देखि मानवक रूप देखैए। जखन मानवीय दृष्टिसँ दुनियाँ दिस तकैए तखन सौंसे दुनियाँ एक्के रंग ने

देखबामे आबए लगै छइ।

कुशसेरक मनमे जहिना-जहिना एका-एकी प्रश्न सभ उठए लगलैन तहिना खण्डन-मण्डन करैत जवाबो सभ मनमे बिचड़ए लगलैन जइसँ गामक रस्ताक ठेकाने ने रहलैन जे केते रस्ता कटि गेल माने टपि गेलौं आ केते बाँकी अछि। देवनक प्रति पहिल पश्न कुशेसरक मनमे उठलैन जे एकटा ओहन मनुक्खक भार कान्हपर चढ़ि रहल अछि जेकरा ने नाम-गाम लिखऽ अबै छै आ ने साए तक गनले होइ छै। मनमे जहिना कुशेसरकेँ विस्मय भेलैन तहिना अपन जीवन-दशापर ग्लानियोँ भेबे केलैन मुदा अपने मन कहलकैन जे पहाड़ी इलाकामे गदहा-सवारी पाथर टुकड़ाक भार लादि जखन अपन कर्तव्य बिनु पहरूदारोक निमाहि सकैए तखन देवन किछु छी तँ मनुक्खक बच्चा छी किने। मनुक्खे ने माइक पेटेमे सुखदेव सन ज्ञानी पुरुष बनला। तैठाम देवन किछु छी तँ मनुक्ख छी किने। जे जे देखत तेकरा सिखबैत चलबै जे फल्लाँ-फल्लाँ छी आ एकर काज फल्लाँ ठाम होइ छै, जखने परिचय आ पात दुनू संगे दैत चलबै तखने ने देवनो देवते जकाँ बनैत जाएत.! कुशेसरक मन मानि गेलैन जे देवन जहिना देह धुनैले तैयार भेल अछि तहिना कबीर बाबा जकाँ तेहेन धुनियाँ बना देब जे बिनु डन्डिये-तराजू सौंसे दुनियाँकेँ तौलैत रहत। कबीर बाबापर नजैर पहुँचे कुशेसरक मन बिहुसलैन। लगले दोसर प्रश्न कुशेसरक मनमे उठलैन जे देवनकेँ कोन काज करैक जोगार लगाएब? अखन तँ सोल्होअना अनाड़ीए अछि। काज तँ ढेरो पसरल छै। जहिना अपन गौंओ आ पड़ोसियो कियो छाती परक रिक्सा चलबैए, ऐठाम बिनु कलकत्ता रहनिहार बुझिते छैथ जे अपना ऐठाम तीन पहिया साइकिल रिक्सा होइए तइसँ भिन्न कलकत्तामे अछि, अपना ऐठामक जहिना घोड़ा गाड़ी, टमटम, होइए जे घोड़ाक संग गाड़ी चलैए तहिना कलकत्तामे मनुक्ख रिक्सा अछि। जे छाती बलेँ खीचैए। तँ कियो डेरे-डेरे, माने परिवारे-परिवारमे सीक-पटैपर टीनमे पानि भरि उघि-उघि तीन मंजिला मकान तक पहुँचबै छैथ। तँ कियो दोकान-दौड़ीमे तँ कियो प्राइवेट गोदाम तँ कियो सरकारी गोदाममे बोरा उघै छैथ। किछु एहनो लोक तँ छथिए जे हिन्द मोटर कारखानासँ लऽ कऽ एवरेडी बैटरी-कारखाना तकक चिमनीसँ लऽ कऽ ऑफिसक हिसाब-बारी करैक

काज सेहो करिते छैथ। तैसंग एहनो लोक तँ छथिये जे पइचों-उधार करि कऽ अपन स्वतंत्र कारोबारी छैथ। रंग-बिरंगक काज कलकत्तामे पसरले अछि। यएह ने हएत जे आम कीनैकाल वा कोनो खेबाक वस्तु कीनै काल सुआदक अन्देशा भेलापर पहिने लोक ओकरा खा कऽ जहिना परेख लइए तहिना ने हएत। अपने इलाकाक लोक सभ काज करै छैथ। जँ सम्भव हएत तँ पहिने काजक रंग-ढंग देवनकेँ बुझा देबै जँ मन मानि जेतै तँ दोसर दिन संग लगा काजपर पहुँचा देबइ। शुरूमे जहिना सभकेँ किछु समय, किछु मेहनत आ किछु खर्च बेसी होइते छै तहिना ने देवनोकेँ हएत। अपन जे काज अछि, सरकारी अन्नक गोदाममे मटियागिरी, ओ गामक हिसाबसँ थोड़ेक अबेवहारिक अछिए, किए तँ गाममे बोझ (वजनदार वस्तु) उघैक चलैन माथ आ कन्हापर लऽ कऽ चलैक अछि। नारो-धानक बोझ आ जारनो-काठीक बोझ लोक माथपर लऽ कऽ चलै छैथ। तैसंग लकड़ी वा बाँस आकि कोनो आने वस्तु कान्हपर उघै छैथ, मुदा अन्नक गोदामक काज तँ पीठपर बोरा उठा उघैक अछि...।

उनटैत-पुनटैत कुशेसरक मन अपने काजपर एलैन तँ मोन पड़लैन जे अपनो तँ ओहिना छेलौं जहिना अखन देवन अछि। जहिना अपना देहमे ताकत अछि तहिना ने देवनोक देहमे छै, तखन किए ने काज कऽ सकैए।

जखने देवनक काज करै दिस कुशेसरक नजैर बढ़लैन कि ढलानपर जहिना गाड़ीक गति तेज भऽ जाइए तहिना भेलैन। भेलैन ई जे गोदामक काजक मजूरी कोनो कि समयमे बान्हल अछि जे एते घन्टा काज करू तेकर बदला एते मजूरी देब। गोदामक काज तँ ओहन अछि जइमे बोराक हिसाबसँ, माने एकठामसँ दोसर ठाम करैक, मजूरी भेटैए। जखने कमाइक बढ़ोत्तरी देखत तखने ने ओइ दिस मनो बढ़तै, किए तँ अखन तक जे जीवन देवनक रहल अछि ओ कम आमदनीबला परिवारक रहल अछि। जइमे समयक संग परिवारकेँ चलैमे सइयो कि हजारो गीरह-गाँठ अछिए जेकरा खोलब कि तोड़ब कनी भीरहगर अछिए...। विचरण करैत कुशेसरक मनमे जहिना अक्का-बोनमे पहुँचला पछाइत कोनो उपयोगी वस्तु देखने मनमे हर्षपन जागि जाइए तहिना कुशेसरोकेँ जगलैन। जइसँ कुशेसरक मन मानि गेलैन जे देवन किछु छी तँ मनुक्खक बच्चा छी किने।

मनुक्ख जहिना पहाड़ोपर चढ़ैए आ पाथरो तोड़ैए, तहिना ने जलमग्न समुद्रो उपैछते अछि.! पहाड़-समुद्रक बीच अबिते कुशेसरक मन हलैस कऽ नव मुड़ी जकाँ कलशलैन- ‘जखन अपने तत्पर छी तखन तँ भेल अपने जकाँ देवनकेँ तत्पर बनाएब।’

कुशेसरक मनक विचार आरो आगू विचड़न करैत बढ़लैन जे जखन काजक ओरियान भऽ जाएत तखन बाँकी रहत खाइ-पीबै आ रहैक ओरियान। खाइ-पीबैपर नजैर पहुँचते कुशेसरक मनमे उठल जे कलकत्ता कलेपर ठाढ़ अछि, ओकर कलकेँ पकैड़ अपन कलाकारी करब। जहिना अपन सुभ्यस्त समय भेलापर माने काज करैक अनुकूल समय भेने काजो करै छी आ उकड़ू समयमे माने प्रतिकूल समयमे, अरामो करै छी तहिना देवनोकेँ सिखा देब। सिखा की देब जे संग मिलि करैत-करैत अपने अभ्यस्त बनि जाएत। मुदा से तँ हएत तखन जखन अपन काजक संग रहत। आन काजक तँ आन रूपो आ बेवहारो तँ अछिए। भेल तँ एतबे ने जे देवनकेँ काजक प्रति आकर्षित करैत कहबै, ‘बौआ, जखन गामसँ संगे कलकत्ता अबैकाल मौसा जहिना सोल्होअना तोहर भार हमरा सुमझा देलैन तहिना ने अपनो आ तोरो निमाहैक छह। जहिना अपन उमेरो अछि आ शरीरक काँइतो अछि तहिना ने तोरो छह, तखन एक रंग काज किए ने दुनू भाँइ कऽ सकै छी। एते तँ गोदामक काजमे अछिए जे जहिना गोदामक मैनेजर साहैब सहमेलू छैथ तहिना काजोक कमी नहियेँ अछि। तैसंग बोराक गिनतीक हिसाब ने होइए, फाटल आकि काटल बोरासँ जे अन्न खसै छै ओ तँ अपने सभकेँ ने हएत। जइसँ एते तँ हेबे करत जे खाइक ओरियान भऽ जाएत। अभावमे पलैत जीवनकेँ जखने पेटक भूख मेटाइक बेवहारिक उपाय भऽ जाइए तखने ने ओकरा मनमे जीवनकेँ ठाढ़ होइक आशा सेहो जगै छै। आशे ने आस लगा जीवनक झूलाकेँ कदमे-कदम कदमक गाछक डारिमे झुलबए लगैए।

..विचड़ैत कुशेसरक मनमे उठल जे जाबे मनुक्खकेँ अपना प्रति अपन शासक नहि जागत ताधैर अनुशासित केना भऽ सकैए? जाधैर अनुशासित जीवन नहि हएत ताधैर जीवनक नीति केना बुझत आ जाबे नीति नहि बुझि अपनाकेँ नीतिक रस्तापर नहि आनत ताधैर नैतिक केना

बनत आ जाबे नैतिक नहि बनत ताधैर नीतिगत कर्तव्य केना बुझत? कुशेसरक मन मानि गेलैन जे चारि पैरबला पशु कुत्ता, जे मनुक्खक जीवनक शुरूक संगी रहल अछि, अखनो अछि, जखन कि ओकरा शरीरकेँ पाँचम तत्त्व (बौद्धिक) प्राप्त नहि छै, तखन जब एते अनुशासित अपनाकेँ बना रखने रहैए, (ऐठाम अनेरूआ कुत्ता माने आवारा कुत्ताक चर्च नहि अछि) तखन तँ मनुक्ख मनुक्खे छिया किने, जिनका शरीरक सभ तत्त्व प्राप्त छैन..! ओना, मनुक्खक दू-दिशिया गति सेहो अछि। माने भेल जे किनको कोनो काज वा विचारकेँ सीख-बुझि चलब, आ दोसर अछि जे जीवनक गतिकेँ अँकैत ओहन रास्ता तकैले कहबैन, जइसँ अखन तकक जीवनमे भेँट नहि छैन। जखने एहेन प्रश्न जीवनमे उठैए तखने ने जीवन पौनिहार अपन जीवनक अनुसन्धाता बनि अनुसन्धानक बाट पकड़ै छैथ। कुशेसरक मन मानि गेलैन जे जे देवन अपने जीवनक जिज्ञासासँ कलकत्ता जाइक संगी बनैले तैयार भेल ओ जरूर संगे-संग जीवनक पथक पथिक बनि पथे-पथ चलबे करत। जखने हरक जोड़ा बरद जकाँ मनुक्खो संग मिल चलब शुरू करत तखन हारल हरीक जीवनमे हरितपन एबे करत। ..कुशेसरक मनक बिसवास जेना खिल उठलैन। खिलते जीवनक गतिपर दृष्टि पड़लैन। दृष्टि पड़िते जीवन ले भोजनक महत्व बुझलैन।

भोजनपर दृष्टि पड़िते कुशेसरक मनमे देवनक भोजन एलैन। कुशेसरक अपने मन देखल दृष्टिक अनुकूल मानि गेलैन जे कलकत्ता कलकत्ता छी, ओ मुम्बइ आकि दिल्ली नहि छी। ओना, कहैले जहिना कलकत्ता महानगर छी तहिना मुम्बइ आ दिल्ली सेहो छीहे, मुदा भोजनक जे सुविधा कलकत्तामे अछि ओ थोड़े मुम्बइ आकि दिल्लीमे अछि। जेते समयमे अपन भोजन बनाएब तेते समयक उपयोग जँ काजमे करब तँ भोजनक संग किछु आमदनीए बढ़त। भोजनक जे सस्ती कलकत्तामे अछि ओ आन महानगरमे नहियेँ अछि। कुशेसरक मनमे उठलैन जे जहिना अपने दिनक भोजन दोकाने-दौड़ीमे करै छी तहिना देवनोकेँ करैले कहबै। कहबै की, जखने संग मिलि देवन काज करत तखने ने जहिना जीवनी

बरदक संग सीखल अनाड़ियो बरद ओहिना काज करए लगैए जेना हरक बरद करैए। जहिना अपने अपन हाथ-पैरक कमाइसँ अपनो आ परिवारोकेँ सीमापर आनि ठाढ़ केलौं तहिना ने देवनो अपन परिवारो आ अपनोकेँ सीमापर ठाढ़ करत।

भोजनपर, देवनक भोजनपर आबि कुशेसर अपन जीवन-चर्याक उपयोग बुझि देवनोक जीवनक उपयोगकेँ उतारब नीक बुझलैन। माने ई जे दिनुका भोजन दोकाने-दौड़ीमे आ रौतुका जहिना अपन दसो मेड़िया एकठाम बैस बना करबो करै छी आ खेबो करै छी तहिना देवनोक हेतइ। भेल तँ दससँ एगारह हएत। भोजनक बेड़ा पार- माने जीवनक नाव पार होइते कुशेसरक मन हरैक कऽ आवासपर एलैन। आवासपर अबिते मनमे उठलैन जे केते गोरे भाड़ा-किराया दऽ रहै छैथ तँ केते गोरे अपन छोट-मोट झुग्गी-झोपड़ी बना सेहो रहिते छैथ मुदा अपन दुनूक अनुकूल ओहन ओकाइत नहि अछि। तहूमे जखन बड़ा बाजारमे अपन दरभंगिया धर्मशाला अछिए तखन कहुना-ने-कहुना देवनोक अँटाबेस भइये जाएत। भेल तँ बरखा-पानि आ शीत-रौदसँ अपन रक्षा करब अछि। जहिना गरमी मासमे गरमीसँ बँचैले छाहैरिक खगता होइए तहिना पानि-बुन्नी आ जाड़-ठाढ़क सेहो अछि।

ऐठाम दरभंगिया धर्मशालाक चर्च अछि। बड़ा बजारक महल्लाबला सभ अपन दसगरदा काज करैले एकटा धर्मशाला बनौने छला। जइमे करीब साए आदमी सुति-बैस सकै छी। जाबे तक धर्मशालाक मुँह-कान चिक्कन रहल माने जाबे तक धर्मशाला दसगरदा काज करै-जोकर रहल, ताबे तक महल्लाक लोक अपन उपयोग केलैन। दसगरदा काज तँ सभ दिन नहियेँ होइए तँए बाँकी दिन खालीए रहै छल। मिथिलांचलक लोक जखन कलकत्ता जाइ छला आ बड़ा बाजारमे उट्ठा काज करै छला, तखन खाली बुझि ओही धर्मशालामे रहै छला। ओइमे जहिना रहैक सुविधा तहिना भोजन बनबैक संग पानियोँ-पैखानाक सुविधा छेलैहे। धर्मशाला तँ बनल मुदा औझुका जकाँ साए बर्खक औरुदा लऽ कऽ जन्म नहि नेने छल, तँए किछु दिनक पछाइत मकानमे (धर्मशालामे) फाट-फुट, टुटब-झड़ब शुरू भेल जइसँ महल्लाबला अपन काज (पैघ काज) मे धर्मशालाक

उपयोग कम करैत गेला। तैसंग ईहो भेल जे बाजारक चलती रहने महल्लाबला सभ दोसरो-तेसरो धर्मशाला बना लेलैन आ ओइ धर्मशालाकेँ सोल्होअना छोड़ि देलैन, वएह धर्मशाला दरभंगिया धर्मशाला छी। अपना ऐठामक जे उट्ठा काज करैबला लोक छैथ ओ ओही धर्मशालामे रहबो करै छैथ काजो करै छैथ आ भजन-कीर्तनक संग अपन गामो-घरक गप-सप्प करिते छैथ। तेतबे नहि, तैसंग सौराठे सभा जकाँ ओइ धर्मशालासँ साले-साल साए-पचास कथा-कुटुमैती सेहो होइते रहल अछि।

अपन गामक सीमापर पहुँचैत-पहुँचैत कुशेसरक मन मानि गेलैन जे देवनकेँ कलकत्ता लऽ गेने एते तँ अपनो लाभ हेबे करत जे एकटा खगल परिवारक माने अपन अंगक परिवारक, जिनगी ऐगला बाट पकैड़ लेत। गाममे काज केनिहार तँ अछि मुदा काजे नहि छइ। ओना, जँ समुचित ढंगक जीवन रहत तँ काजक कमी सेहो नहियेँ रहत। तहूमे मिथिलांचलमे। जैठाम सालक तीन मौसम स्पष्ट रूपसँ अपन चरि-चरि मासक विभाजन कइये नेने अछि। किछु फलोवृक्ष आ अन्नो-तीमन, अधिक दिनक खेती होइए तँ किछु कमो दिनक होइते अछि। जइसँ चारि मासक बीच सइयो रंगक अन्नो, फुलो-फलो आ तीमनो-तरकारीक खेती अछिए, जइ उपजसँ धनमण्डल भइये सकैए। ओना, मौसमकेँ प्रतिकूल बनबैक सेहो अनेको कारण अछिए जे मौसमकेँ कम-बेसी सेहो कइये दइए। जेना अधिक पानि-बुन्नी भेने बाढ़ि अबैए तहिना कम भेने वा नहि भेने रौदी सेहो होइते अछि, जइसँ सूत्रवद्ध खेतीक सूत्रता सेहो बिखण्डित होइते अछि। तहिना अधिक जाड़क ठण्ढ-पाला खसने फसलक (उपजक) क्षति सेहो होइते अछि जइसँ किसानी जीवन क्षतिग्रस्तो होइते अछि। खाएर जे अछि, एते तँ अछिए जे मनुक्खो तँ मनुक्खे छिया जिनका अपन बुधिक संग विवेको आ कर्मक संग हाथो-पएर छैन्हे, तँए कोनो-ने-कोनो रूपमे अपन जीवन धारण केनहि रहै छैथ, तँए कहब जे नोकसान (क्षति) नहि होइ छैन सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो होइते छैन। मुदा सभ कथुक बावजूदो मिथिलांचलक गामो आ गामक आवादियो अखनो ओहिना अछि जहिना अदौसँ चलियो आबि रहल अछि आ अपन जीवन्तताक परिचय सेहो देनहि अछि।

कुशेसरक नजैर देवनपर सँ हटिते अपन गाम-समाजक संग दुनियाँ-दारी दिस बढ़लैन। दुनियाँक बीच मध्यमे अपन गाम-समाजकेँ देखि कुशेसरक मन बिहुसि गेलैन। बिहुसि ई गेलैन जे जहिना मनुक्ख तहिना ने गामो समाज दुनियाँक बीच विषुवत रेखा जकाँ बीचमे ठाढ़ अछि। जहिना विषुवत रेखाकेँ उत्तर वा दच्छिन भेने, पूबे-पच्छिमे विषुवतो रेखा आ कर्को-मकर अछिए, आधा दुनियाँक जिनगीमे बदलाव अनिते अछि। ओना, बदलाव सौंसे दुनियाँक माने पूर दुनियाँक होइए मुदा से होइए दुनू दिशामे। जहिना आधाक उत्थान होइए तहिना आधाक पतन सेहो होइते अछि। बेकतीगतो जीवनमे आ गाम-समाजक जीवनमे सेहो होइए। माने ई भेल जे बेकतीगत जीवनमे जहिना ज्ञान भेने अज्ञान मेटाइए, निर्भय भेने भय मेटाइए, सुचरित्र वा सुचित्र बनने कुचरित्र वा कुचित्र मेटाइए तहिना ने गामो-समाजमे, जे धनीक-गरीबक बीच बँटल अछि, तइमे एकरूपता एने जहिना एकटाकेँ क्षय होइए तँ दोसर अक्षय सेहो बनिते अछि..!

एकाएक कुशेसरक नजैर देवनक जीवनक भारपर पहुँचलैन। भारपर पहुँचते अपने मन कहलकैन जे मनुक्ख केतौ मनुक्खक भार थोड़े बनैए। ओ तँ अपन भार अपने कन्हेठ वा सिर चढ़ा चलैबला छैथ तखन दोसरक भार बनि केना सकै छैथ। हँ, एते सम्भव अछिए जे जे मनुक्ख अपन जिनगी आ अपन किरिया-कर्मक संग अपन हाथ-पैरक गुण-अवगुण नहि बुझि पेला अछि ओ जखने अपन किरिया-कर्म आ अपन हाथ-पैरक संगे उपयोगक शक्ति बुझि जाइ छैथ, तखने भयभीत रूपमे भयमुक्तक संचरण हुनकामे हुअ लगै छैन जइसँ भयमुक्त होइत अभय सेहो बनिते छैथ। भेल तँ एतबे ने जे देवनकेँ मनुक्खक जिनगीक किरिया-कर्ममे तेना कऽ साटि दिऐ जे ओइमे सटल अपन आगूक डेग उठबैत चलए। मनुक्ख जखने अपन अस्तित्व माने अपन सीमा-सरहदकेँ बुझि लेत जे दुनियाँक बीच ठाढ़ छी, भौगोलिक दृष्टिसँ सेहो आ मानसिक दृष्टिसँ सेहो। माने ई जे दुनियाँक आकार गोल अछि। गोल वस्तुक बीच केतौ रहने मध्य भेबे कएल। जहिना पूब दिस दिशो तहिना पच्छिम दिस दिशा आ तहिना उत्तरो दच्छिन सेहो अछिए। तँए जखन बीचमे माने दुनियोँक बीचमे, ठाढ़ छी तखन बीच आ अपन बीचमानि करबे करत किने।

बीचमानिक माने भेल नीक बेजाएकेँ बेरबैत बीचो-बीच चलब।

घरपर अबैत-अबैत कुशेसरक मन मानि लेलकैन जे देवन भार नहि भार उठबैबला संगी बनत। बीचमे एतबे करब अछि जे देवनोकेँ रास्तापर आनि ठाढ़ करैत पाछूसँ पीठ ठोकि आगू बढ़बैत चलिऐ, जइसँ ओ अपन जीवनमे दौग-दौग दौगैत चलत। जखन केकरो माने एक्को आदमीकेँ, अपन सहक सेवासँ पीठ ठोकि दौड़ा देब तखन अपन मानवीय जीवनक मूल्य सेहो देखैमे एबे करत। जीवनक मूल्य अपने बनौलासँ ने बनैए। जेना कागज कागज छी मुदा ओइपर शील-मोहर लगिते ओ रुपैआ बनि जाइए। दुनियाँ मानए वा नहि मानए मुदा अपन अभ्यन्तरक मन तँ मानियेँ लइए। यएह मन ने दुनियाँक मनक एक अंश-मन छी। समूहक रूपमे विश्वपन भेल आ बेकतीगत रूपमे बेकतीपन भेल जे विश्वमनक अंश भेबे कएल किने। यएह मानब ने अपन मानव मनक सीमा छी, जेकरा जानि-पहचानि जीवन धारण करैत चलैक अछि।

कुशेसरकेँ गेला पछाइत माने अपन मौसी-मौसा ऐठामसँ, जलेसरी पति लग आबि चुपचाप ठाढ़ भऽ गेली। जलेसरीकेँ, माने धनुषधारीक पत्नीकेँ, भनक लगलैन जे देवन कलकत्ता जाएत, गाममे नहि रहत। भनक माने भेल उड़न्ती सुनब, मुहाँ-मुहीं गप-सप्प नहि भेल रहल।

पति लग ठाढ़ जलेसरीक मनमे अनेको सोग-पीड़ाक जाल पसरल छेलैन्हे। जइसँ शोक विषादसँ बोझिल छेली। अनेको रंगक विचार, सौनक बरखा-पानिक बुलबुला जकाँ जलेसरीक मनमे कखनो उठैन आ कखनो पानिक झटकासँ तँ कखनो अपन जीवनेक झटकासँ जहिना फुटैए तहिना फुटबो करैन। गाइयक आगू वा कोनो आने पालतू जानवरक बच्चाकेँ आगूसँ लऽ गेने वा चलि गेने जहिना आँखिसँ नोर खसबैत माए डिरिआए लगैए तहिना जलेसरीक मन सेहो देवनकेँ लगसँ हटैक बात सुनि डिरिआइत रहैन। मुदा मुँह खोलि जलेसरीकेँ डिरिएबोमे (माने बजबोमे) असोकर्ज होइते रहैन। असोकर्ज ई होइत रहैन जे जहिना अपन पति भेला तहिना देवनो आ कुशेसरो ने भेल, तीनू बापूत पुरखा-पुरखी विचार केलैन तइमे किछु बाजब उचित नहि हएत।

जलेसरी थोड़े बुझै छैथ जे जीवन की छी, दुनियाँ की छी, जइ

दुनियाँमे जन्म भेल तही दुनियाँमे ने जीवनो बिताएब अछि। साढ़े तीन हाथक अरबो मनुक्खक दुनियाँ अरबो रंगक अछिए। मातृत्व और पितृत्वक बीचमे खाधि अछिए। बच्चार्कें बेर-बेर भूख-पियास ले अन्न-पानि चाही। ओ तँ माइयेसँ भेटैए, आ माइयोक मन बच्चाक जीवनो भोजने भरि समटा जाइ छैन, जइसँ बाहरी जीवन आ बाहरी दुनियाँ दिस नजैर चढ़िते ने छैन। आने-क माए जकाँ जलेसरियोक मनमे उठैन जे बच्चा (देवन) कलकत्ता जाएत, खाएत की? ओ थोड़े बुझै छेली जे खाइयेक जोगारमे देवन कलकत्ता जाएत। पत्नीकैँ आगूमे ठाढ़ देखि धनुषधारी बजला-

"मन मारि किए आगूमे ठाढ़ छी।"

तइ समय धनुषधारी देवनक प्रवासक जिनगीपर विचार कऽ रहल छला जे गाममे देवन अपना लग रहैए, तँ मुहोँसँ कहि आ हाथो पकैड़ काजक लूरि-बुधि माने कलाक संग कलाकारी सिखबै छिऐ। कलकत्ता गेलापर केना सीखत..? लगले अपने मन उत्तरो देलकैन जे कुशेसरो तँ देवने जकाँ छल, पाँचे साल कलकत्ता गेना भेलैए, केहेन सुन्दर घरो बना लेलक, बहिनक बिआहो सम्हारि लेलक। आगू दिस बढ़िते माने विचारक आगू, अपने मन धनुषधारीक उत्साहित भऽ गेलैन जे देवन कहुना भेल तँ उन्नैस-बीस बर्खक नौजवान भेल। आब दूधमुहाँ बच्चा थोड़े रहल जे केतौ हेरा जाएत। तहूमे की कलकत्ताक लोक नहि बुझता जे मैथिली भाषी देवन छी तँए मिथिलांचलक दोसर मैथिलसँ भेँट करा गाम-घरक भाँज लगबैत लग तक पहुँचा देतइ। जवान भेल, एकरामे तँ एते शक्ति अखन भरले छै जे देशक सीमाक संग दुनियोँक सीमाक भार सम्हारि सकैए, अपना ले अपन की भेल। फूल सन हल्लुक जीवनो भेल आ परिवारो तँ भेबे कएल। तैबीच जलेसरी बजली-

"जखनसँ एकटा बात सुनलौं तखनसँ मनमे उड़ी-बिड़ी लगि गेल अछि सएह पुछए एलौं हेन।"

धनुषधारी बजला-

"की सुनलौं?"

जलेसरी बजली- "बौआ कलकत्ता जाएत।"

धनुषधारी बजला- “हँ। अपने मन छै जे कलकत्ता कमाइ ले जाएब तँ हम थोड़े रोकबै। गामोक लोक सभकेँ देखै छिऐ जे अमेरिका, इंग्लैंड, कहाँ-कहाँ ने कमाइ ले जाइ छैथ, तैठाम कलकत्ता तँ सहजे अपन घर भेल। जहियासँ बंगाल-बिहारक विभाजन भेल माने 1912 इस्वीसँ, तहियासँ ओ दोसर राज्य भेल। तइसँ पहिने सभ एके राजक बासी ने छेलौं। तँए ने बोलियो-वाणी, चालियो-ढालि आ लीख-लिखिया सेहो एकरंगाहे अछि।”

तहीकाल देवन सेहो कुशेसरकेँ विदा करैत वापस पहुँचल। जहिना एकटा अक्षर सीखलासँ जे मनमे खुशी होइ छै तहिना देवनक मनमे कलकत्ता प्रवासक खुशी छेलइ। कलकत्ताक केते बात कुशेसरक मुहसँ रस्तामे सुनि नेने छल। ईहो सुनि नेने छल जे आजादीक समय माने 1947 इस्वीमे कमे गाम एहेन बाँकी अछि, जइ गामक लोक कलकत्ता नइ जाइ छला तँए गामो-गामक आ अपन बेकतिगतो कुटुम-परिवारक लोक सेहो भेटबे करै छैथ..!

देवनकेँ देखिते अपन मनक बोझकेँ कम करैत धनुषधारी बजला-

“बौआ, केना कि जाइक विचार केलह। कलकत्ता जाइले तोहर मन खुशी देखै छिअ आ माइयक मन खसल देखै छिऐन तँए किए ने दुनू माए-बेटा मुँह-मिलानी पहिने कऽ लेबह।”

पतिकेँ बीचसँ हटिते माने देवनक कलकत्ता जाइक विचारसँ, जलेसरी थकथकेली। थकथकेली ई जे हम किछु भेलौं तँ माइये भेलौं किने मुदा पिता तँ वएह छथिन। वएह सभ ने अपन परिवारो आ अपन कुलो-मर्यादाकेँ जीआ कऽ रखता.!

देवनक मनमे खुशीक लहैर छेलैहे। माएकेँ वौसैत बजला-

“माए, मन लागत तँ रहब नइ तँ चलि आएब। तइले अनेरे ने सोग-पीड़ा करै छेँ। बुझिहेँ जे कोनो कुटमे ऐठाम पाँच दिन ले गेल छेलौं।”

देवनक बजैक कारण छल जे जहिना बच्चा लगसँ हटला पछाइत गाए वा आने पशुकेँ होइ छै आ कानि-खीज बिसैर पुन: अपन जीवन अनुकूल बना लइए तहिना माइयोकेँ भऽ जाएत।

बेटाक मुँहक हल्लुक माने साधारण बात हौ कि भारी, झूठ हौ कि साँच, माइक मन एक्के कसौटीपर कसि एक्के रंग बिसवास करै छैथ..। ऐठाम ई बुझब जे कोनो बेटाकेँ दुतकार लगौल जाइए से नहि। तहिना जँ बेटो माता-पिताक प्रति बिसवासी होथि तँ किए आजुक परिवेशमे जे माता-पिता खढ़क बोझ जकाँ बोन-झाड़, गाछी-बिरछीमे फेकाएल-छिटाएल रहै छैथ? ऐ बीचमे एकटा आरो प्रश्न अछि, ओ अछि समयानुसार परिवर्तनक, जइसँ विचारो आ बेवहारोमे किछु बदलाव ऐबेक चाही। समाजमे अखनो अन्धविश्वासमे पड़ल बहुसंख्य लोक छैथ, मुदा जखने अन्धविश्वास बिसवासमे बदैल जाइए तखने ने जीवनमे ज्ञानक संग परिवर्तन सेहो होइते अछि। गप-सप्पक विचार, माने पिता-पुत्रक गप-सप्पक विचार, सुनि जलेसरी हवामे डोलल पानि जकाँ असथिर होइत-होइत थीर भऽ गेली।

धनुषधारी देवनकेँ पुछलैन- “बौआ, अखन तक अपन गाम आ अपना घरमे रहलह, मुदा आब आन गाम आ आनक घर रहैले जाइ छह, तँए केना अँटाबेस करबह से नीक जकाँ मनमे विचारैत रहिहह।”

सादा कागज जकाँ देवनक मन छेलैहे। तहूमे कुशेसरक मुहसँ जे कलकत्ताक सम्बन्धमे सुनने छल तइसँ मन आरो मोहित भइये गेल छेलै जइसँ उधकी धइये नेने छल। बाजल-

“जेना-जेना कुशेसर भैया कहता आ करता तहिना-तहिना देखि-देखि हमहूँ करब।”

ऐठाम ई नहि बुझब जे, अखनो गाम समाजमे एहेन भ्रान्ति पसरले अछि जे आन जे कहैथ से करी, मुदा हुनकर करैत काजक देखौंस नहि करी। अही भ्रान्तिमे पड़ल धनुषधारी बजला-

“कुशेसर जे करैले कहतह से ठीक भेल मुदा देखसी करब तँ..!”

पिताक सोच-विचारसँ देवनकेँ कोन मतलब छेलैन, मतलब अपन मनक छेलैन, बजला-

“जखन काज करैले जाएब तखन जहिना-जहिना कुशेसर भैयाकेँ करैत देखबैन तहिना-तहिना अपनो करब। जँ केतौ कोनो गड़बड़ हएत तँ

पुछियो लेबैन आ अपनो सोझेमे रहता, देखबो तँ करबे करता।"

देवनक विचार सुनि धनुषधारीक मनमे बिसवास जगलैन जे जे भाइक प्रति माने कुशेसरक प्रति, समर्पण देवनकेँ मनमे जगल अछि, जँ ऐ समर्पणकेँ समर्पित रूपसँ करैत रहत तँ जीवनमे नीक छोड़ि अधला नइ हेतइ। जीवनक ऐगला माने परिवारक ऐगला, काज दिस धियान जगबैत धनुषधारी बजला-

"बौआ, मनुक्खक जीवन एहेन जीवन छी जइमे लोक किछु कऽ सकैए। जहिना नीकसँ नीकतर कऽ सकैए तहिना अधलासँ अधतरो तँ कइये सकैए। आन जीवन जे अछि, माने मनुक्खसँ इतर आन देहधारी जीवक, ओकरामे यएह शक्ति नइ छै, तँए असंखो-संखो जीवनमे मनुक्खक सभसँ श्रेष्ठ जीवन अछि।"

पिताक विचार देवन नीक जकाँ ने सुनलक आ ने बुझलक। किए तँ कलकत्ता जेबाक खुशी मनमे तेना मोहैन चला देने छेलै जे घिरनी जकाँ मन घुमि रहल छेलइ। देवन बाजल-

"बाबू, गाममे काज नइ अछि मुदा ओइठाम तेते काज अछि जेते लोक करए चाहत। जखन पाँचे बर्खक कमाइमे कुशेसर भैया एतेक केलैन तँ हम की ओइसँ कम करब। आइ जँ तीनियोँ-चारि साल पहिने गेल रहितौं तँ कुशेसरे भैया जकाँ ने हमहूँ भऽ गेल रहितौं। जेना ओ बहिनक बिआहमे खर्च केलैन तहिना हम खेते कीन लइतौं।"

'खेत' सुनि जहिना धनुषधारीक मनमे उठलैन जे अपन जँ घर-घराड़ी आ चास-बास माने जीबैक साधन भऽ जाए आ ओइ बीच जँ अपन स्वतंत्र जीवनक रूप धारण केने समयक अनुकूल चलैत जीवन बिताबी, यएह ने स्वतंत्र देशक परम स्वतंत्र जीवन भेल। जेकर खगता मनुक्ख जीवनकेँ अछि। ..धनुषधारी बजला-

"परसू गाड़ी पकड़ैक विचार कुशेसर कहने छल, तूँ काल्हिये साँझूपहर कुशेसर ऐठाम चलि जइहह।"

देवनक मनमे होइ जे अखने चलि जाइ जे दू दिनमे रस्ता-पेरासँ लऽ कऽ कलकत्ता धरिक गप-सप्प सुनैत रही, मुदा केतौ जाइसँ पहिने माने

जेते दिनक हिसाबसँ जा रहल छी, तइ बीचक जे सामाजिक सरोकार अछि, ओकरो तँ सूत्रवद्ध करए पड़ै छइ। देवन बाजल-

"कुशेसरो भैया सएह कहलैन जे काल्हिये साँझू पहर चलि अबिहह, दुनू भाँइ घरसँ संगे निकलब।"



शब्द तिथि: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

तेसर पड़ाव

पिताक विचार सुनि देवनक मनमे जीवनक ओहने प्रेम जगल जेहने अपन स्वतंत्र जीवन भेटलापर जगैए। अपन कमाइपर जे करब सएह ने भेल अपन जीवनक कर्म। माता-पिताक संग बाल-बच्चाक सेवा करब सभक ऊपर अछि। किए तँ हम सभ पारिवारिक जीवन जीबैक अभ्यासी छी। विचार तँ असान अछिए सेवा करब, कहब। मुदा सेवाक जखन विराट रूप सोझाँमे अबैए तखन मनमे थरथरी अबिते अछि। ओना थरथरियो दू रंगक होइए, पहिल होइए भरक थरथरी आ दोसर होइए निर्भरक थरथरी। निर्भरक थरथरीक विकल्प यएह ने भऽ सकैए जे अपन जेते शक्ति अछि तइ अनुकूल सेवा करब। मानि लिअ जहिना युग-युगान्तरसँ गुलामी शासनक संग गुलामी बेवस्थामे परिवारक परवरिस भेल अछि, तही अनुकूल ने सभक जीवन बनल अछि। ओही सीमाक दायरामे ने अपन जीवनक संचालन करब। देवनक मनमे उठल जे बाबू कहला अछि जे जाबे तक मनुक्खकेँ अपन हाथ-पएर चलबै-जोकर साधन नइ भऽ जाइए, ताबे धरि ओकर हाथ-पएर ओहिना छटपटाइए जेना पानि बिनु माछ। एकाएक देवनक मनमे कलकत्ताक प्रति राग जगल जइसँ परिवारसँ विराग भेल। विराग जगिते देवनक मन मने-मन कहलक- 'बाबूकेँ देखा देबैन जे देवन केहेन ढहलेल-बकलेल अछि। जखन देह धुनने सभ कथुक प्राप्ति लोक करिते अछि तखन देवनो किए ने करत। कमाइले जखन घरसँ निकैल रहल छी, तखन कमा कऽ गामबला सभकेँ देखा देबैन जे देवनो सन लोक गाममे अछि।'

ओना, वैचारिक रूपमे देवन पछुआएल अछि, मुदा कलकत्ता जा कमेबाक विचार जहियासँ मनमे जगलै आ रसे-रसे बढ़ए लगलै तहियासँ जेना देवनक मन छलाँग मारि दौड़ैक कोशिश करए लगल।

प्रात: काल, माने दोसर दिन, सूर्यक दर्शन होइते देवनक मन

ओहिना ललौन भऽ गेल जहिना दुरागमन दिन कनियाँकेँ होइए। भाय, मन ललौन हेबे ने करतैन, परिवार गढ़ैक भार ने कन्हापर लऽ निकैल रहल छैथ। ओना, जलेसरी माने माए, बेटाकेँ लगले बिसैर गेली जे देवन आइ घरसँ निकैल कलकत्ता जाएत। बिसरैक कारण भेलैन जे जहिना उड़न्ती सुनने छेली जे देवन कलकत्ता जाएत तहिना पतिक मुहसँ सुनि पुरन्ती सेहो भइये गेल छेलैन मुदा देवनकेँ लगमे देखि बिसैर गेली। जँ मन रहितैन तँ भोरेसँ जहिना विदागरी कनियाँक भोजनक ओरियानमे माए लगि जाइ छैथ तहिना ने जलेसरियो लागि गेल रहितैथ, मुदा से नहि भेलैन। जलखै बेरमे देवन बाजल- "माए, आइ हम चलि जेबौ।"

देवनक मुहसँ 'जाएब' सुनि जलेसरीक मन एकाएक चौंकलैन जे हाइ रे वा! देवनकेँ ते वएह जलखै देलिऐ जे सभ दिन दइ छेलिऐ..! अपन बिसरबपर जलेसरीक नजरिये ने पड़लैन। नजैर पड़ि गेलैन सोझामे बैसल देवनपर। बजली-

"से जे तोरा जाइ-के छेलह ते भोरे कहि दइतह ने?"

भावुक माइक विचार सुनि देवनक मनमे उठल जे मुँहतोर चाबुक मारब उचित नहि, बाजल-

"बिसैर गेल छेलौं, तँए नै कहलियौ।"

उपदेशक बनि जलेसरी बजली-

"एना कियो बिसरै। एहने बिसरनिहारकेँ ने लोक भुसकौल कहैए।"

उपदेशी माएकेँ देवन उत्तर देलकैन-

"माए, घर-आँगनमे कियो थोड़े भुसकौल होइए, ई तँ काज करैक जगह छी। भुसकौल होइए लोक इसकूल-कौलेजमे।"

देवनक विचार नीक जकाँ जलेसरी नहि सुनली। किए तँ मनमे नचै छेलैन जे जलखै बेरमे जे देवनकेँ भेल, से भेल मुदा कलौ खाइ बेरमे पाँचटा तड़ुआ बेटाकेँ खाइले नहि देब, एहेन अदत्त माए की हमहीं छी। अपन चूक मेटबैत जलेसरी बजली- "बौआ, की हेतइ अपन घर छिअ। जे किछु खाइले देलियह ओ बिसैर जइहह जे माए हमरा घरसँ विदा हेबा दिन एहेन खाइले देने छल। भगवान नीक करथुन जे जहिना हँसैत घरसँ जाइ

छह तहिना दुनियाँमे केतौ रहिहह, अहिना हँसैत रहिहह।”

माइक विचारकेँ असिरवाद बुझि देवन किछु ने बाजल। बाजल तँ किछु ने देवन, मुदा भूखल गाइयक बच्चा जकाँ गाए दिस माने माए दिस, जरूर तकलक। बेटाक देखबकेँ जलेसरी देवी जकाँ बिचड़ए लगली-

“बौआ, हम दुनू परानी तँ बुढ़ भेलयह। बुढ़क ठेकाने कोन.! कहियो आँखि देखब छोड़ि देत, तँ कहियो कान सुनब, मुदा परिवारक तँ तूँ से नहि भेलह। तोहीं ने अपन भार बुझि श्रवणकुमार जकाँ माता-पिताकेँ सातो धाम कन्हापर भार बना देखेबह।”

माइक बात सुनि देवनक मन भीतरे-भीतर हिल गेल, मुदा हिलबकेँ थीर केलक। हिलब माने मनक हिलब जे दू रंगक होइए, एकटा होइए नीक हिलब माने जीवनोपयोगी आ दोसर होइए अनुपयोगी। काजक बात जे मनकेँ संकल्पित करैए ओ भेल जीवनोपयोगी आ दोसर भेल कोनो अधला काजमे अपन जीवनक समयकेँ नष्ट करब जइसँ जीवन गमा हिलब। जेकर भरपाइ जीवनमे नहि भऽ पबैए जइसँ जीवन खलियाएल जकाँ रहि जाइए। एहने हिलब दोसर भेल। से तँ देवनमे छल नहि। माइयक विचारकेँ अंगीकार करैत देवन बाजल-

“माए, जखन जे मनमे नीक-अधला होउ, कहिहेँ। हमरासँ जे काज भऽ सकत हम सएह ने पुरा पेबौ, मुदा रोगक भोग जहिना सभकेँ भोगए पड़ै छै से तँ भोगए पड़तौ। कियो केकरो थोड़े बाँटि पबैए।”

अपना जनैत अपन विचारक भार देवन माएपर फेकलक, मुदा माइयो तँ माइये ने परिवारक भेली। माए बजली-

“बौआ, आब तोहूँ जुआन-जहान भेलह, कमेबह-खटेबह परिवारकेँ देखबह तखन ने अपनो मनमे बिसवास हएत। तोरो बिआह-दान हेतह। बाल-बच्चा हेतह, सभक निमरजना तोरे ने करए पड़तह।”

ओना, जलेसरी परिवेशक प्रवाहमे बाजल छेली, मुदा अपन परम्पराक जे दायित्व माता-पिताक निर्धारित भेल चलि आबि रहल अछि, ओ अछि, बेटा-बेटीक घर बसा माने बिआह-दान भेला पछाइत, अपनाकेँ बेटा-बेटीक भार वा कर्जसँ मुक्त हएब।

देवनक मनमे कलकत्ताक रंग-बिरंगक रूप नाचिये रहल छल, जइसँ मन प्रस्फुटित प्रफ्फुलित भइये रहल छल, बाजल-

"माए, जहिना कुशेसर भैया पाँचे बर्खक कमाइमे ईंटाक घर बना लेलैन आ बहिनक बिआहो कऽ लेलैन तहिना हमहूँ कमा कऽ देखा देबौ। अपना तँ बहिनक बिआह अछि नहि, तँए दस कट्ठा खेते कीनि लेब।"

अखन धरि बोनिहारिन जलेसरीक मनमे सपना बनल छेलैन जे अपनो दस कट्ठा खेत होएत जइसँ परिवारक परवरिस अपना आगिये-पानियेँ निमाहि अपन जीवन शिखरपर चढ़ितौं माने किसानक जीवन पबितौं, मुदा जिनगीक अन्तिम पड़ावमे माने बुढ़ाड़ीमे जखन बेटाक मुहसँ जलेसरी सुनलैन तखन मनमे ओहने बिसवास जगलैन जेहेन भोरक सपना (कल्पना) देखि कियो अपन सपना पूर्तिक दिशामे बढ़ि क्रियाशील होइ छैथ। जलेसरी बजली- "बौआ, अपना जँ ओतबो खेत-पथार होइत जइसँ सागो-पात खा गुजर करितौं माने जीवन चलैबितौं, तँ अपनो परिवारकेँ ने किसान परिवारक मानो-प्रतिष्ठा होइत आ अपनो मान-मरजादा बढ़ैत।"

देवनक मन तेना उड़ल छल जे माइक बात सुनबे ने केलक। मुदा माइयक प्रश्नक उत्तर तँ बेटाकेँ देब छल। बाजल- "माए! ऐ हाथ-पएर सँ जे भऽ सकत, तइमे हम थोड़े बेइमानी करब जे तूँ बैमान कहमेँ। जे कमेबौ तोरा हाथ-के देबउ।"

बेटा कमाएल पाइक आशा देखि जलेसरीक मनमे ओहिना आशाक आश लागि गेलैन जेना निर्वस्त्रकेँ कपड़ा दोकानमे मनमाना कपड़ा लइक अधिकार भेटैए। वृन्दावनक कदमक गाछक झूलाक आश जहिना कृष्णकेँ तहिना ब्रजवालाकेँ जे लगै छेलैन तहिना देवनक आश जलेसरीकेँ आ जलेसरीक आश देवनकेँ लागि रहल छल। सभ जनिते छी जे कृष्ण ओहने ने गोपालक छला जेहेन एकटा ओहन लोक जे गाइयक जीवन सदृश अपन जीवन धारण केने पंचामृतो दइए आ अपन पंचामृतक सिरजन करैत अपनो जीवनक दिनचर्या निमाहिते अछि। अपन भार उतारैत जलेसरी बजली-

"बौआ, मरैकाल नानी जहिना कहली तहिना हम ओकरा आँचरक-

खूटमे गीरह बान्हि मनमे रखने छी। कोन दिन ले राखब। कहुना हम भेलियह ते माइये बाप ने भेलियह। अपना मुहसँ जँ अवाच निकालब आ तोरा विसा जा, तँए एहेन कि हमहीं गौ-खौक माए हएब जे तोरा अधला हुअ देबह।”

माइक बात सुनि देवनक मन मानि गेल जे माइयो अपन स्वीकृतिक विचार दए रहली अछि। देवन बाजल-

“माए, घाट-बाट जाइक अछि तँए सभ चीज तूकपर माने समयानुसार काज कर। खेला पछाइत कनी ओछाइनपर हाथ-पएर नहि मोड़ि लेब सेहो नीक हएत।”

जलेसरी बिना किछु बजने अपना काज दिस बढ़ि गेली। देवनक मनमे उठल जे पितोसँ किए ने मुँह-मिलानी करैत घरसँ निकली। ओना, जलेसरी देवन लगसँ हटि अपन भानसक ओरियानमे लागि गेली मुदा मन जेना सीकपर लटैक गेल होनि तहिना भेलैन। मनमे ई उठलैन जे जहिना अण्डा बेचनिहारकेँ अण्डाक लाभसँ बकरी कीनैक मन भेलैन जे बकरीक पोसक लाभसँ गाए कीनब। मुदा जलेसरीक मनमे से नहि उठलैन। उठबो केना करितैन? जीवनक अन्तिम पड़ावमे माने बुढ़ापामे पहुँच जलेसरी देखि रहल छैथ जे एते दिन तँ अपनो दुनू परानीक देहमे हूबा छल जे रसे-रसे निच्चेँ मुहेँ ससैर रहल अछि। एकटा बेटा देवन अछि, सेहो बकलेले-ढहलेल अछि तेकर आशा केते करब। लगले फेर अपने मन कहलकैन जे किछु अछि अपन तँ आशा वएह अछि। कियो नीके अछि आकि सुन्नरे अछि, ओ अपना केते काज देत। मुइलो पछाइत मुँहमे मुखवाती वएह ने लगौत..! अभावसँ अपन जर्जर जीवन देखि जलेसरीक मनमे उठलैन जे कहुना देवना एतबो कमा लिअए जे दुनू परानीकेँ माने माता-पिताकेँ मरैबेर तक भूखे पेट नइ तड़पऽ दिअए। घरे बनाएत आकि खेते कीनत आकि अपन बिआहे-दान करत, ओ तँ अपन करत, अपना ले करत। ओना, माता-पिताक सेवा सेहो अपने कर्तव्यक सीमामे अछि मुदा तेकर फलाफल तँ दोसरेकेँ ने भोगए पड़ै छै। अखन तक जइ आशासँ देवनक सेवा केलौं तइमे जे ओ जीबैत भरि रोग-वियाधि आ भूखसँ तरसऽ नहि दिअए तँ

बुझब जे बेटा निमिते जे सेवा केलौं तेकर फलाफल अपनो मेवा भेटबे कएल।

अपन आशाक फल देखि जलेसरीक मनमे मातृत्व शक्ति जगि गेलैन। जइसँ विचार उठलैन जे भगवान देवनाकेँ सुमति देथुन जे जाबे ओकरा कमाइक लूरि नीक जकाँ नहि भेल अछि से पहिने सीख लिअए। जखने काज करैक लूरि भऽ जेतै तखने ने ओ लूरि ओकरा हाथ पकैड़ करेबो करतै। काजे ने राज छी, राजे ने काज छी। जखन ओकरा कमाइक लूरि भऽ जेतै तखन ओकरा ओइ जोकर अपन बुधियो ने भऽ जेतइ। जखन से भऽ जेतै तखन ओ अपन बुधि-विवेकसँ विचार करत जे बेटा तँ तखन ने बेटा जखन ओ बेटा-धर्मक पालन करत। जखने से करए लगत तखने ने अपन विवेको कहतै जे जाबे जीबैक साधन नहि छल ताबे बाहर जाइक खगता छल मुदा जखन से भऽ गेल तखन ओकर व्यय धरमोचित्त नहि करब तँ ओकरो माने साधनकेँ ने पापोचित्त उपयोग हएत। दुनियाँक कतौक बासी किए ने होइ आ केतौसँ केतौ बास किए ने करी, मुदा जखन जीवनक (मनुक्खक जीवनक) बीच बास करए लगब, तखन वएह ने अपन बासभूमि मातृभूमि रूपमे सेहो लतरत-चतरत। मन बहलबैक खियाल अलग छी, मुदा तँए सही क्रिया नहि छी सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। कहैले अपना सभ तँ कहिते छी जे सुख-दुखमे सभ संग छी, मुदा दुख केना सुख बनत माने दुखक संचरण सुखमे जे हएत, तइ बीचक जे प्रक्रिया अछि तइमे के केतए छी, सेहो ने देखए पड़त। ओना, सभ जनिते छी जे जे जन्म लेलक से मरबे करत। तहूमे मनुक्खक जिनगीए केतेटा अछि। तहूमे केते कालक गारंटी अछि? क्षणोमे क्षणाक तँ होइते अछि। एकटा भौतिक विज्ञानकेँ जँ ताकए निकलब तँ दमाइन[5] जकाँ पन्ना-मे-पन्ना आ सिर-मे-सिर तेते भेटत जे सही सलामत दमाइन उखाड़ि देवउठौन पाबैनमे डाल-डाली साजि लेब, बाल-बोधक खेल थोड़े छी। ई मानि लेब जे भौतिक विज्ञानक पूर्व पीठ अध्यात्म विज्ञान छी जेकरा जीवन विज्ञान सेहो कहै छिऐ, मुदा ओ लगले थोड़े बुझिमे अबैए। खाएर जे आबए मुदा

[5] लत्तीनुमा कन्द

जलेसरीक मनमे एते तँ खुशी उठिये गेलैन अछि जे बेवहारिक जीवनमे नारी माने बेटी, तीन तरहक सहयोगीक जीवनक संग जीवन बितबैए। माने भेल माता-पिताक बीच जन्मसँ लऽ कऽ जाबे बिआह-दान नहि भेल रहल। बिआह-दानक पछाइत माता-पिताक रूपमे सासु-ससुरकेँ पबै छैथ आ सहयोगीक रूपमे पतिकेँ। ओना, अरबो-अरब लोकमे अरबो-अरब जीवनक संग अरबो-अरब रूप-विधान सेहो अछिए मुदा अखन से नहि। अखन एतबे जे साधारण दृष्टिये जे जीवन चलि रहल अछि, बस तेतबे।

माता-पिताक बीचक जे बेटीक जीवन अछि ओ सेवा रूपमे भावक अछि जइसँ जे अभिभावकक बेवहार बनल अबैए, माने बेटीक जीवनमे जे अभिभावकक बेवहार रहैए, सासुर एला पछाइत ओइमे अनेको दिशा दिस परिवारक बेवहार अबिते अछि। माने किछु एहेन परिवार अछि जइमे पुतोहुकेँ बेटी सदृश बुझि-मानि माता-पिता माने सासु-ससुर अपन ओहन आचरण बना चलै छैथ जइसँ परिवारमे बेटा-पुतोहुक बीच प्रेम बढ़ने विवाद कम अछि। मुदा दोसर तरहक जे परिवार अछि, माने ओहन परिवार जइमे बेटाकेँ तँ अपन रक्त-बीज बुझि एक तरहक बेवहार रखनौं छैथ मुदा पुतोहुकेँ आन बीज रूप बुझि तइ रूपमे नहि बुझै छैथ, जइसँ परिवारक गहींर-सँ-गहींर दोखपूर्ण वातारणक सेहो सृजन होइते अछि। ओना, बहुसंख्य परिवार गाम-समाजक एहेन अछि, जइमे माता-पिता अपना खुशीसँ बेटा-पुतोहुक सम्बन्ध तोड़ि भीन-भीनौज भऽ जीवन भरिक अपन सभ रीति-नीति तियागि दइते छैथ। खाएर गामो-गामक आ गामो-घरक अपन-अपन लीला अछिए आ सभ अपन-अपन लीलाक लीलाधर छीहे, कियो अपन-अपन जीवन लीला पसाइर वृन्दावनक कृष्ण जकाँ रास रचैत रहथु। जलेसरीकेँ तइ सभसँ कोन मतलब छैन। लोककेँ मरैत देखै छथिन तँ जलेसरीकेँ अपनो मनमे होइ छैन जे जहिना सभ मरैए तहिना अपनो मरब। ई थोड़े बुझै छैथ जे केकर मृत्यु केहेन भेल? सोझे प्राण तियागकेँ मृत्यु बुझै छैथ। लगले फेर ईहो आशा माने जीवनक आशा, सेहो देखलासँ माने जीवितकेँ देखलासँ, जागिये जाइ छैन जे जान-प्राण पेब जखन जिनगी पेलौं तखन मरब किए। जइसँ मृत्युक डर मनसँ हटिये जाइ छैन आ सोझामे जे दुनियाँ देखै छैथ तइमे अपन आस-बास-चास तकैत

जिनगी दिस बढ़ए लगै छैथ। तखन ई आशा, माने जिनगीक आशा, ओहिना जीब जाइ छैन जेना कहियो मरबे ने करब। जहिना सभ जीबैए तहिना हमहूँ जीबे करब। बेचारी जलेसरी बुझियो केना पेबती जे जीवनक मृत्यु सिर्फ चेतन शक्ति हटि चेतन शून्य बनबे टा मृत्यु नहि छी। ई तँ पंचभौतिक शरीरक क्रियाक बीचक भेल। जे अखन तक आँखि ताकि दुनियोँ देखै छिऐ, कानसँ किछु सुनितो छी आ हाथ-पएर लारि-चारि भूखो-पियास मेटबै छी।

शरीरक संग मनुक्खमे आत्माक बास सेहो अछिए। जेकर अपन दुनियोँक रंग आ रीति-नीति सेहो छइहे। जेकरा पकैड़ मनुक्ख अपन मानवीय जीवनक सार्थकताकेँ पकड़ै छैथ। आँखि बन्न केलाक पछातियो दुनियाँ देखै छैथ आ कान बन्न केलोपर सभ किछु सुनै छैथ। खाएर जे छैथ, तइ सभसँ जलेसरीकेँ कोन मतलब छैन। मतलब एतबे छैन जे आइ देवन घरसँ निकैल परदेश जा रहल अछि, केतए रहत, की खाएत-पीअत आ केना सुतत-बैठत.? ऐठाम आबि जलेसरीक मन हारिकऽ हहरए लगै छैन। मुदा लगले मन ईहो कहै छैन जे देवन किछु छी, केहनो बकलेल-ढहलेल किए ने अछि मुदा छी तँ अपने कोखिक सन्तान ने..! ओकरा जँ कोनो तरहक मने वा देहेमे चोट-कचोट लगतै आ देहक रूइयाँ तड़पतै तँ ओइसँ की अपन मन नहि तड़पत.? ऐठाम अबैत-अबैत जलेसरीक मन देवनक ओइ आश भरल जीवन लग पहुँच गेलैन, जे अखन तक सुतल छेलैन। जलेसरीक मनमे उठलैन जे औझुके दिनक भोजन (खाएब) देवनकेँ गामो मोन पाड़ने रहत। जखने गाम मनमे औत तखने ने मातो-पिता आ सरो-समाज मोन रहतै। तँए आइ देवनकेँ ओहन खेनाइ ओइ रूपेँ खुआएब जे सभ दिन मोन रहतै। मोने टा नहि रहतै, कलकत्तामे रंग-रंगक मिठाइ तँ देखत मुदा रंग-रंगक तड़ुआ-बघड़ुआ मिथिला जकाँ थोड़े देखत। जँ से रहैत तँ एकोटा रोहु कलकत्ताबला अनको खाए दइत। गुण अछि जे तड़ुआक महिरमे ने बुझैए।

देवन अपन विचारक अनुकूल सोझे पिता लग पहुँचल। पिताक हाथ तँ काजमे लागल छेलैन मुदा मनमे देवनक जीवनक गति तेना नाचि रहल छेलैन जे विचार घनघना रहल छेलैन। ओना, अभ्यस्त जीवन रहने

धनुषधारीक काज तँ अपना ढंगेँ चलि रहल छेलैन, मुदा चेतनशून्य जकाँ चलै छेलैन। माने ई जे मन केतौ छेलैन माने देवनक जीवन देखि रहल छेलैन आ दैनिक क्रिया, दिन-दिनक काज, हाथ कऽ रहल छेलैन। अभ्यासो तँ अभ्यास छीहे। जखने अभ्यास बनैए तखने अभ्यासी जीवन बनैत अभ्यस्त बनियेँ जाइए। जखने अभ्यस्त कर्म समयक संग पकैड़ आगू बढ़ैत चलैए तखने ने ओ भेल समयक गतिक संग गति पकैड़ गतिशील जीवन बनि चलब।

ओना, जाबे तक देवन माइक संग गप-सप्प करै छल ताबे तकक बोलो-वाणी आ विचारोक जे रूतबा छल ओ पिता दिस मुड़ि रसे-रसे रसाइत रस बनि रिसए लगलै। अखन धरिक पिताक सिनेहक स्वरूप देवनक मनकेँ तेना मथि देलकै जे भयावह रूप बनि देखिते देवनकेँ मनमे बघजर[6] जकाँ लागिये गेल। जइसँ कोनो तरहक किछु विचार मुहसँ निकलबे ने कएल।

देवनक मनकेँ जहिना अपन बघधल विचार पकैड़ नेने छल, जइसँ बकार बन्न छेलै, तहिना धनुषधारीकेँ सेहो देवनपर नजैर पड़िते बधजल जकाँ मनमे कुदए लगलैन। धनुषधारीक बधजलक कारणसँ अपने मनमे ग्लानि उठए लगलैन जइसँ अपना ऊपर तामसो उठैन आ भयावह रूप देखि डरो होइन। ग्लानिसँ गलित होइत मन कहलकैन, 'की अपने अखनो तक अपन सीमा बुझि सकलौं अछि। एकटा बेटा अछि सेहो गाम-घर छोड़ि कलकत्ता जा रहल अछि। नहि जाएत तँ खाएत की आ जीवन केना चलतै। तहूमे तेहेन बकलेल-ढहलेल अछि जे बिआहो-दान हेतइ की नहि हेतइ। अखन अपने दुनू परानी जीबै छी तँ कहुना-के संग मिलि जीवन बीता लइ छी। मुदा जखन परोछ हएत तखन केना जीवन चलत।'

धनुषधारीक मन विचारसँ तेना घेरा गेल छेलैन जे अपनहि बेकाबू बनि गेल छेलैन, तँए मुहसँ कोनो विचार निकालब, उचित-अनुचितक बीच फँसि गेल छेलैन। तैबीच मनमे ईहो भय होनि जे जइ देवनकेँ गामक लोक बकलेल-ढहलेल बुझैए ओ केना कलकत्ता सन शहर-बाजारमे रहि पौत।

---

[6] बघज्वर

तेते गाड़ी-सवारी चलैए जे बुधियारोकेँ जान बँचब कठिन रहैए, देवन तँ सहजे देवन छी..! आगू बढ़ि अपने मन कहलकैन माने धनुषधारीक मन कहलकैन- जखन देवन कलकत्ता पहुँच जाएत तखन चिट्ठी पठबैले सेहो कहि देबै आ ईहो कहि देबै जे सप्ताहमे नहि तँ पखो-पख जरूर चिट्ठी लिखए।

एकाएक धनुषधारीक धियान अपन वंशपर तड़ैप ओइठाम पहुँच गेलैन जैठामसँ अपन जीवनक बात मोन पड़लैन। अपन पैछला पीढ़ी माने बाबासँ ऊपर, बिनु देखल छेलैन, तँए जहिना मनमे जगलैन तहिना बिलीन भऽ हेरा गेल छेलैन। जहिना कोनो सुनल देवेस्थान आकि तीर्थेस्थान मनसँ हेरा जाइए माने बिसैर जाइ छी, मुदा आँखिक देखल ता-जिनगी थोड़े हेराइए, ओ तँ छठियारीक दूध जकाँ मृत्युक सीमा धरि मोन रहैए। जखन धनुषधारी पाँच बर्खक भेला तखन बाबाक संग पितो आ दादीक संग माइयोकेँ संगे-संग खेतक आड़िपर जा खेलाइ छला आ सभ कियो काज करै छला। ओही जीवनमे बाबो आ दादियोक मृत्यु देखलौं। पछाइत पिताक संग अपनो ओहिना जीवन बितबए लगलौं जहिना बाबाक संग पिताकेँ बीतल छेलैन। आइयो ओहिना पेट-बोनिया बनि जीवन जीब रहल छी। अहीठाम सँ ने देवन परिवारक रूखिकेँ मोड़ए चाहैए। खगतो छइहे। तइले ते जेतए-जेतए परिवार घुड़ैछ गेल अछि तेतए-तेतए बिनु मोड़ देने काजो चलब तँ कठिन अछिए। एकाएक धनुषधारीक मनमे जगलैन जे किए ने आइ देवनेसँ सभ किछु पुछि अपन हिसाब माने पिताक दायित्वक हिसाब, फड़िछबैत चली। जिनगी की छी आ एकर मुक्ति केना हएत? यएह ने जे नहि हमर बंकियौत दुनियाँपर रहल आ ने दुनियाँक हमरा ऊपर रहलै। जहिना खाली हाथ आएल छी तहिना सिकन्दर जकाँ दुनू हाथ झुलबैत चलि जाएब। तइले किए केकरो लटपटीमे लटपटाएल जिनगीक हिसाब राखब। धनुषधारी बजला-

“बौआ, कलकत्ता जेबे करबहक?”

धरती दिस गड़ल देवन अपन नजैर (आँखि) उठा अकास दिस

ताकि बाजल- “बाबू, कुशेसर भैयाकेँ कहि देलिऐन, ओहो लऽ जाइले तैयार भेला। तखन?”

धनुषधारी- “तोरा बुते काज कोन कएल हेतह?”

जहिना कुशेसरक मुहेँ सुनने छल तहिना देवन बाजल-

“जखन दुनियाँक आने मनुक्ख जकाँ अपनो जन्म भेल अछि तखन दुनियाँमे कोन काज एहेन मनुक्खक अछि जे अपना बुते नहि हएत।”

देवनक बात धनुषधारी बुझि गेला जे बिनु बुधिक सुगो जखन सीताराम, सीताराम राधेश्याम, राधेश्याम करिते अछि, चिट्ठी-पत्तरी सेहो एक राज्य-सँ-दोसर राज्य उघिते अछि तखन देवनो ओही कुशेसरक सिखौलहा सुग्गा जकाँ बाजि रहल अछि। मन मानि गेलैन माने धनुषधारीक मन मानि गेलैन जे देवन कलकत्ता जेबे करत। धनुषधारी बजला-

“बौआ, जखन गाम छोड़ि जाइ छह, तखन सबेर-सकाल गामक सीमा छोड़ि आन गामक सीमा पकैड़ लएह। जएह अपन गाम वा परिवारक सीमा छी, सएह ने दोसर गामो आ दोसर परिवारोक सीमा भेल।”

कलकत्ता जेबाक एक-एक बातक जनतबकेँ माने काजक बातकेँ देवन अखियासय लगल। अखन धरिक जे समग्रता, परिवार वा समाजक प्रति, देवनमे जे किछु आबि रहल छल, ओ समटा एकाग्रक (कलकत्ता जेबाक विचार) बाट पकैड़ नेने छल। पिता लगसँ उठि देवन माए लग आबि बाजल-

“माए, अखन बहुत काज बाँकी अछि तँए पहिने खाइले दऽ दे। ने तँ काजक धुमसाहीमे जखन पड़ि जाएब तखन खेनाइये बिसैर जाएब।”

जलेसरीक अपनो मन मानियेँ रहल छेलैन जे किछु क्षण ले देवन घरबैया अछि, ने ते ओ आब बहरबइये भेल किने। अखुनका खेनाइ बेटा जकाँ अपना सोझामे खुआएब मुदा रौतुका थोड़े खुआ पएब।

अपन रूटिंगक हिसाबे देवन घरपर सँ विदा भऽ गेल। जहिना मनुखदेवा चढ़ने लोकक हाथो-पएर बिनबिना लगै छै आ बुधियो-विचार

झुनझुना लगिते छै, तहिना देवनोक भइये गेल छल। काज आ मजदूरी मनसँ हटि देवनक मन ओइठाम अँटैक गेल छल, जैठाम अपने सन भाइ भाइयक दशा रहितो माने कुशेसरक जीवन पाँचे बर्खमे एते काज कऽ लेलक पारिवारिक काज, जइसँ जहिना माए-बाबू चैनसँ रहै छैन, तहिना ने अपनो माए-बाबू छैथ।

नीक-बेजा सोचैक दौड़मे देवनक रास्ता कटि गेल। देवनकेँ देखिते कुशेसरक मनमे खुशीक लहरि उठि गेल। एकटा संगी जँ भेट जाए तँ दुनियाँक भ्रमण वास्को डि गामा जकाँ कइये सकै छी। कुशेसर बाजल-

“बढ़ियाँ केलह जे समयसँ पहिने चलि एलह।”



शब्द तिथि: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

चारिम पड़ाव

कुशेसर ऐठामसँ विदा होइकाल माता-पिताकेँ माने कुशेसरक माता-पिताकेँ मिसियो भरि मन मलिन नहि भेलैन जइसँ मुँहक विचलनक कोनो रूप नहि बदललैन। तेकर कारण छेलैन कमासुत बेटाक कमाउपन। गप-सप्पमे तँ लोक बजिते छैथ जे गामक परिवार सभ उजरल जा रहल अछि। मुदा उजरल की जा रहल अछि तेकरा तर दबा कियो देखिये ने पेब रहला अछि। अपने जिलाक जंक्शन समस्तीपुर, स्टेशन छी जे देखले इलाका अछि तँए देवनक मनमे कोनो दोसर नव विचार उठबे ने कएल। देवन अखन थोड़े किसानक जीवन आ किसानक वृत्तिकेँ बुझलक अछि। पिताक संग-संग देखसी करि-करि कोनो-कोनो काज करैक ऊहि किसानीक भेलैए। ने ते मधुबनी इलाकाक गाम आ समस्तीपुर इलाका गामक किसानीमे की अन्तर अछि, से जँ बुझैत रहैत तँ ईहो ने बुझैत रहैत जे समस्तीपुर इलाकाक गामो आ गामक खेतो-पथार बारहो मास हँसैत रहैए आ अपन इलाका–माने मधुबनी इलाका–क खेतमे काज केनिहार लोककेँ डेढ़ मास अखाढ़ आ एक मास अगहन, पहिलुका हिसाबे, बारह मासक सालमे अढ़ाइ मास काम-काजी भेल, बाँकी साढ़े नअ मास चौक-चौराहापर गप-सप्पमे वा ताश-शतरंजपर बैस बीतैए। किसानी जिनगी तखन ने आगू बढ़त जखन अढ़ाइ मासक काज बढ़ि कऽ बारह मासक हएत। एकरा अहुना कहि सकै छिऐ जे जखन बारहो मासक समय किसानक कृषिसँ संलग्न हएत तखन ने खेतिहरक संग-संग खेतो-पथार जागत। भौगोलिक दृष्टिसँ अपन ओहन इलाका अछि जैठाम तीनटा मौसम स्पष्ट रूपमे अछि। माने जाड़, गरमी आ बरसात। आन देशमे से नहि अछि। कोनो देशमे मात्र एक रंगक मौसम अछि, तँ कोनोमे दू रंगक। हँ, चीनक किछु इलाका एहेन अछि जइमे तीनू रंगक मौसम अछि।

साँझू पहर जखन कुशेसर दुनू भाँइ समस्तीपुर स्टेशनपर

कलकत्ताक गाड़ीमे बैसल, तखन स्टेशनपर तँ किछु इजोत रहबे करइ मुदा गाड़ीक कोठरीमे झल अन्हार रहइ। टिकट पहिनेसँ बनल रहै तँए गाड़ीमे बइसैक जगह भेटैमे कोनो असोकर्ज नहियेँ भेलइ। गाड़ी खुजैसँ पहिने देवनकेँ कुशेसर कहलक- “देवन, आब कलकत्तेमे खाएब-पीब, तँए किछु खाइक विचार छह तँ बाजह।”

जखनसँ देवन स्टेशनपर मकैकेँ ओराहैत देखलक तखनसँ ओकर हीय ओइमे गड़ि गेल छेलै मुदा अपनाकेँ अनुशासित रखने किछु बाजि नहि रहल छल। मुदा जखन कुशेसरक मुहेँ खाइ-पीबैक बात सुनलक तखन अपनाकेँ अनुशासित करैत बाजल- “भैया, गाड़ी-सवारीमे हौलके-फौलके खेनाइ नीक हएत, तँए दू-दू टाक हिसाबसँ बालि कीन लिअ। भने एक-एकटा दानाकेँ छोड़ा-छोड़ा मुहोंमे देब जइसँ सुआदो बुझैत चलब आ रस्तो कटैत चलत।”

ओना देवनक बात सुनि कुशेसरक मनमे खीझ उठल जे सात-आठ घन्टाक गाड़ीक सफर अछि तइमे दूटा मकैक बाइलसँ केना काज चलत। मुदा इच्छोक तँ अपन मन छइहे। पियास लगलोपर पानि नहि पीब से केतेक उचित। देवनकेँ कलकत्ताक रस्ता नइ बुझल छै तहूमे कहि देलिऐ जे आब ऐगला खेनाइ कलकत्तेमे खाएब। भऽ सकैए जे ओकरा मनमे ईहो आबि गेल होइ जे जहिना भिनसुरका जलखै आ दुपहरियाक कलौ खेनाइमे दुइये-तीनियेँ घन्टाक अन्तर होइए, दुपहरियाक खेनाइ आ बेरुका जलखैमे सेहो तहिना होइए। तैसंग कुशेसरक मनमे ईहो उठलैन जे कोनो कि समस्तीएपुरटा एहेन स्टेशन अछि जैपर खाएब-पीबक वस्तु भेटैए आ आगूक स्टेशनपर नहि भेटत, सेहो तँ नहियेँ अछि। सेहो तँ अछिए। जँ भूख लागत तँ ओहीठाम कीनि-बेसाहि लेब। एक-एक आनाक हिसाबसँ चारिटा मकैक बाइल कुशेसर चारिअनामे कीनलैन। दूटा बाइल देवनोकेँ देलैन आ दूटा अपनो लैत कुशेसर बजला-

“देवन, देखिते-सुनिते कलकत्ता पहुँच जाएब।”

‘देखिते-सुनिते कलकत्ता पहुँच जाएब’ सुनि देवनक मनमे जिनगीक पूर्ण आशा जागि चुकल। जहिना कोनो बेरोजगारकेँ रोजगार सुनलापर मनमे खुशीक लहरि संचारित हुअ लगैए तहिना देवनोकेँ भेल।

बाजल- "भैया, राता-राती जखन कलकत्ता पहुँच जाएब तखन तँ काल्हि भोरसँ काज करब शुरू कऽ देब किने?"

काजक प्रति देवनक आकर्षणकेँ हियाबैत कुशेसर बाजल-

"हँ, से तँ कइये सकै छी मुदा..!"

देवन बाजल- "की मुदा?"

विचारकेँ सोझरबैत कुशेसर बाजल-

"अखन समस्तीयेपुरमे छी, अनका पैरक सफर अछि। तहूमे लोहे-लकड़ीक गाड़ी छी, रस्तामे केतौ जँ कोनो भङ्गठी भेल तहूठाम देरी लागत, तैसंग कलकत्ता पहुँचलापर काजोक भाँज लगबैक अछि, तँए अखन कौल्हुका काजक विचार छोड़ह। जँ संयोग नीक रहत माने सभ किछु समयानुसार चलैत रहत, तखन काल्हिसँ काज कइयो सकै छी।"

इंजन जोड़िते गाड़ी कनी घुसैक कऽ रूकि गेल। गाड़ीकेँ रूकिते देवन बाजल-

"भैया, गाड़ी किए ठाढ़ भेल?"

कुशेसर बाजल- "गाड़ीमे इंजन जोड़ल गेल अछि। थोड़ेकाल ऐठाम आरो रूकत पछाइत आगू बढ़त।"

गाड़ी खुजि गेल, कुशेसर अपन सीटपर बैसल। दुनू गोरेक सीटक बीचमे तीनटा यात्री बैसल छल। तँए गप-सप्प करैक वा पूछ-आछ करैक अवसर देवनक समाप्त भऽ गेल। कुशेसर चुप चाप बैस देवनक विषयमे सोचए लगल। दुनियाँक बुधियार तँ अपनो बुधियारीसँ बुधियार बनि सकैए मुदा देवन सन ढहलेल-बकलेल लोककेँ जँ अपन जिनगी जीबैक कला देल जाए तँ यएह ने विधि-विधानक संग कलाकारक मुख्य कलाकारी भेल। लगले अपने मन कुशेसरकेँ कहलकैन मनुक्ख की कोनो अकासमे उड़ैत चिड़ै छी जे लगले धरतीसँ उड़ि अकासमे पहुँच जाएत। ओकर तँ अपन दृष्ट-दिशा छै। पहिने ओ अपने ताड़-खजूर जकाँ बारह बर्खे जड़ि बान्हत तखन ने धरतीसँ उठि परिवारकेँ परिवारक साँचमे सँचियबैत परिवारकेँ समाज बनौत...। कुशेसरक मन देवनक शरीरक क्रिया-शक्तिकेँ अँकैत प्रफुल भऽ गेल जे जाबे तक देवनकेँ काज करैक अवसर नहि भेटत ताबे

लूरि-बुधिक अभाव अछि। जखने काजक अवसर भेटतै तखन काजे ने हाथ पकैड़ लूरि देतइ। जखने अवसर भेटतै तखने श्रमक शक्ति जागि जाएत। जखन श्रमक शक्ति जागत आ ओकर फल माने मजूरी देखत तखने ने कौरब-पाण्डव जकाँ जिनगीक जुआक पाशापर बैस अपन गोटी भाँजत।

कुशेसरकेँ हटि कऽ बैसल देखि देवनक मन हहरए लगल जे एक तँ जहिना गाड़ीमे अन्हार अछि तहिना कोठरियोमे, बन्न रहने माने बन्धनक बीच जीवन रहने अन्हार अछि, जइसँ दुनियोँ अन्हार बनियेँ गेल अछि, तैठाम जँ कियो बोलो-भरोस दइबला नहि रहता तँ अनेरे ने जीवन घुटि-घुटि माने घटि-घटि, मरबे करत। मुदा मनुक्खोक बुधि तँ अजीव अछिए, केहनो विचार वा प्रश्न सुनिते किछु-ने-किछु बात लोक अनेरो बाजिये दइ छैथ। भलेँ ओ टेँढ़े-बौकली आकि झुसे-झास, माने झूठे-फुइस किए ने होउ। कृष्णकेँ धुन्धकारीक परिचय होइते जहिना धुन्धकार जकाँ चारू दुनियाँ पसैर गेल रहैन तहिना देवनक चारू कात सेहो पसैर गेल। पसैर गेल ई जे बगलमे बैसल अनठिया सभसँ गप-सप्प नहि हएत। तहूमे गाम-घरमे सुनियेँ नेने छी जे गाड़ीमे एक-सँ-एक ठको आ गीरहकटो सभ रहैए। एते दिन जेबी काटि रुपैआ बहार कऽ लइ छल आ आब मोबाइलसँ खिंचैए। देवनक मन मानि गेल जे भरमे-सरम अपन मुँह बन्न करि अनके मुँहक गप-सप्प सुनब। भेल तँ मुँहकेँ कहुना चलैक चाही, से कियो बात-विचारसँ चलाबए आकि किछु खाइत-पीबैत चलाबए। खाएब मनमे अबिते देवन विचारलक जे भने एकान्त भेलौं। एक-एकटा मकैक दाना छोड़ा-छोड़ा मुँहमे दैत मुँहकेँ चलबैत गाड़ीक सफर काटिये लेब। ओना, यात्रीसँ भरल गाड़ीक कोठरी रहितो देवन असगर अनभुआर जकाँ छेलाएहे। कियो जान-पहचान वा गामे-समाजक चिन्हारए रहैत तखन ने गपो-सप्प करैत। लोक भलेँ अथबल जकाँ किए ने बैसल रहए मुदा मन तँ से नहि छी। मन तँ घड़ीक सुइयासँ बेसी चलनिहार होइए। साठि सकेण्ड-मिनटक बीच घड़ी चलैए, मुदा मन तँ तेकर हजार गुणा बेसी गतिक होइए। देवनक मनमे उठल- अपनो भैयारीमे, माने समाजसँ परिवार धरिक भैयारीमे, ओना भैयारी कतेको गोरेक अछि मुदा अखन तँ मात्र कुशेसरे भैया टा ने

संगे कलकत्ता लऽ जा रहला अछि। अपना सिरे अपन सभ भार उठा जिनगीक मोड़पर आनि ऐगला बाट पकड़ा पीठ ठोकि आगू बढ़ौता। जखने कलकत्ता सन शहरमे रहए लगब तखने ने दस गोरेसँ चिन्हो-परिचय हएत आ गप-सप्प भेने बुधियोक बाट खुजत। कुहेस वा धुनि लगल रहलापर जहिना हवा उठि कुहेस वा धुनिकेँ फारि फरीच बना दइए, भलेँ फेर कुहेसे किए ने पुन: पकैड़ लिअए, तहिना देवनकेँ सेहो भेल।

अपना गतिये गाड़ियो चलि रहल अछि आ गाड़ीमे सवार आन-आन यात्रीक संग देवनो आ कुशेसरो चलिये रहल छैथ। गाड़ीक गति देखि कुशेसर अन्दाजि लेलैन जे अढ़ाइ बजे रातिमे गाड़ी अपना स्टेशनपर पहुँचा देत। माने कलकत्ता जंक्शनपर। कलकत्ता कि कोनो गाम-घर छी जे पहिने सूर्ज उगैए पछाइत लोक बिछान छोड़ैए। एकर माने ई नहि भेल जे गाम-घर ऋृषि-मुनिक बास स्थल नहि छी। सेहो छीहे। एके माटि-पानि, हवा-वसात आ एके विधि-विधान रहितो जहिना फुलवारीमे सुगन्धित-सँ-सुगन्धित फुलोक संग-संग बाग-बगीचामे मीठगर-सँ-खटगर धरि फलो होइते अछि तखन मनुक्खोमे हएब सोभाविक अछिए।

कुशेसरक मन देवनक जीवनक छोर पकैड़ गाड़ीसँ उतरला पछातिक कार्यक्रम तैयार कऽ रहल छला। अढ़ाइ-पौने तीन बजे गाड़ी अपना स्टेशन, माने जैठाम उतरब, पहुँच जाएत। कलकत्ता कि कोनो गाम-देहात छी जे साँझ पड़िते अन्हरा जाइए जइसँ काम-काज ठप हुअ लगैए। अखनो धरि गमैआ विचारो अछि आ गपो-सप्पक चलैनमे अछिए जे 'राति सुतैक छी', माने दिन भरि जे करब से करू आ राति माने दिनक आधा समयमे, हाथ-पएर जोड़ि सुतू। कलकत्ता तँ कलकत्ता छी, ओइठाम दिन-रातिक भेद मेटा गेल अछि जइसँ मनुक्खक जीवन शैली सेहो बदलिये गेल अछि। कियो राति-केँ कारखानामे ड्यूटी करै छैथ आ दिन-केँ अवकाश भेटै छैन, ओ तँ रौतुका जगैक ओरियान दिनेमे करता किने। ओना, कुशेसरक मनमे ई नहि उठल जे अपना ऐठामक माने मिथिलाक ऋृषि-मुनि घर-दुआर छोड़ि जंगल पकैड़ लइ छला आकि गामे-घरमे बास करै छला। जहिना जनक तहिना भारद्वाज इत्यादि छेलाहे। तीन बजे भोर छी कि राति, कुशेसरक मनमे उठि गेल। मनमे उठिते रंग-बिरंगक विचार

जागए लगलैन। कियो चारि बजे भोर तक रातिक सीमा बना सुतै छैथ तँ कियो आठ बजे दिन तक, मुदा पौने तीनकेँ भोर किए ने मानल जाए। किए तँ अपन जे पूर्वज ऋृषि-मुनि छला ओ तीन बजे ओछाइन छोड़ि अपन जीवन क्रियामे लागि जाइ छला। तैठाम तीनेक पौआ कम अंश ने पौने तीन भेल, तखन पौने तीन सेहो ने भोरेक सीमापर अछि। जखने तीन पौआ होइए तखने ओ पौन सेर वा किलो कहबए लगैए।

स्टेशनपर गाड़ीसँ उतैर पहिने प्लेटफार्मेपर अपन भोरक क्रियासँ निवृत्त हएब। पछाइत प्लेटफार्मसँ निकलब। निकैलते जखने चाहक दोकानपर जाएब तखने केतेको चिन्हा-परिचयक लोक भेटिये जाएत। अपने इलाकाक लोक बेसी चाहोक दोकान कलकत्तामे केने छैथ, रिक्शो चलबै छैथ आ उठा-पटकक काज सेहो करिते छैथ। महिना दिनपर गामसँ एलौं हेन, तइ बीच ऐठाम (कलकत्ता) की भेल नइ भेल से तँ गप-सप्प भेला पछातिये ने बुझब। जीवनमे जँ ओछाइन छोड़ैसँ पहिने माने सुति-कऽ उठैसँ पहिने, अपन दिन भरिक माने ओछाइनपर अबैसँ पहिने तकक, अपन कर्मगत काजपर नजैर (दृष्टि) दौड़ा ओकर कारण निकालि सफल दिनक अनुभव होइते अछि। आ इहए दिन-दिनक सफलता ने जीवनकेँ समत्व रूपक बाटकेँ निरमबैत सेहो चलिते अछि।

मने-मन कुशेसर विचारिये रहल छला कि गाड़ी जैसीडीह स्टेशनपर पहुँच गेल। ऐठामसँ दोसर गाड़ी देवघर जाएत। गाड़ीकेँ रूकिते स्टेशनपर बोल बम, बोल बमक आवाज गूँजि उठल। दुनू दिसक यात्रीक मिलानक बीचक स्वर ध्वनि छेलैहे। कुशेसरकेँ बुझले अछि जे ऐठाम अपना दिसक, माने गाड़ीक हिसाबसँ, यात्री देवघर बाबाकेँ दर्शन करए अबै छैथ, आ पूब दिसक माने कलकत्ता दिसक वापसी यात्री जाइ छैथ। तइ बीचमे जे बोल बमक आवाज होइए वएह हल्ला छी, जे दस मिनटक पछाइत माने गाड़ी खुजलापर शान्त भऽ जाएत। वापसी यात्री अपन घरमुहाँ भेल घरक विचारमे आबए लगै छैथ। पूजाक विहीत बदलैत परिवार आ जीवनक विहीत मनमे जागए लगैत। देवनकेँ से नहि भेल, ओ गाम-घरक रहनिहार, तँए गाम-घरमे एहेन हल्लाकेँ कोनो अन्होनी घटना बुझि हल्ला करैए। तहूमे रौतुका मसीमक हल्ला, जइमे चोरी-छिनरपनक संख्या बेसी रहिते

अछि। ओना, रौतुका आगियो-छाइक हल्ला होइते अछि मुदा ओकरा लोक इजोतसँ परेखैए। अकचकाइत देवन बाजल-

"भैया, केतौ चोरि-तोरि भेल हेन, हल्ला कथीक छी?"

तइ बीच जे दोसर तीनू यात्री बैसल छला, ओइमे एकटा देवनकेँ बाल-बोध बुझि चुप्पे रहला, मुदा दोसर जे जागल छला, माने रातुक हिसाबसँ, ओ असथिरेसँ मनाही करैत बजला जे 'गाड़ी-सवारीमे एना हल्ला किए करै छह।' मुदा तेसर जे अधनीना छला ओ डपैट कऽ बजला-

"तोहींटा भाड़ा देने छहक आकि हमहूँ देने छिऐ.!"

अबूझ, अबोध देवन, यात्रीक बात नहि बुझि सकल। तैसंग कुशेसर भाइक बीच छल। तँए अपनाकेँ छोट भाए सदृश अनुशासित रहि चुपे रहल। यात्रीकेँ बउसैत कुशेसर बजला-

"जहिना अहाँ अधनीनामे छेलौं तहिना ओहो अधनीनेमे छल, तँए अहीं जकाँ चौंकैत बाजल। तइले अहाँ अनेरे ने आगि-अङोरा होइ छी।"

एक तँ देवघर जेबाक मोड़, तैसंग देवन कलकत्ता कमाइले सेहो जाइए रहल अछि, तेसर जे यात्री गरैज कऽ डपटने छला से सहजे सुतिये रहला। देवन अपने मने बाजल- "जय शिव, जय शिव।"

देवनकेँ शान्त करैत कुशेसर बजला-

"गाड़ी-सवारी छी, तहूमे दिनुका रहैत तँ तरो-तरकारीवालीक नाम लगैत जे वएह सभ हल्ला करैए आ अनकर हल्ला ओइमे घोरा जाइए। से तँ नइ छी। रौतुका समय छी तँए चुपचाप भेल रस्ता काटह। भेल तँ बीचमे एकटा आरो बर्दमान स्टेशन अछि।"

कुशेसरक बात सुनि देवन शान्त भऽ गेल। कुशेसर मने-मन देवनक विचार करए लगला जे कलकत्ता पहुँचलापर की सभ करैक अछि। जखने गाड़ीसँ उतरब तँ भोर जकाँ भइये गेल रहत। कोनो कि हेराएल जगहपर रहै छी जे जाइमे अबूह लागत। सभ देखले-सुनल अछि। अपन जीवनक काजक जे प्रक्रिया अछि तइ अनुकूल अपनाकेँ चलबैक अछि। दुनियाँ तँ ओ दुनियाँ छी जे समुद्रे जकाँ अछि जेकर थाह पएब कठिन अछिए। थाह पबैक धरतियो ने चाही। कहब जे पानियेँ समुद्र छी आकि समुद्रो पानि छी,

ई तँ जेहेन मन रहत तेहने मानत। नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधला वस्तु किए ने हुअए मुदा ओ एक-दोसराक बीच उनैट-पुनैट जाइते अछि। देखिते छिऐ जे भातकेँ लोक सुभितगर भोजन बुझै छैथ आ रोटीकेँ भितगर, मुदा गैस्टिक जेते भतभोजनमे होइए तेते रोटभोजनमे थोड़े होइए। ई तँ अपन मनोक बात भेल जे रामझिमनी ठाढ़ वृक्षनुमा फल रहितो, जेकर लम्बाइ-मोटाइ देखि लोक झिमनी कहैए, आ झिमनी तँ सहजे लत्तीनुमा छीहे जेकरा माटिसँ ठाढ़ होइक डाँड़मे जोड़े (डोराडोरिये) नहि छै, ओकर लम्बाइ-मोटाइक देखौंस करबैत रामझिमनीक शकले-सूरत ने बिगाड़ै छी। कहू जे जइ रामझिमनीकेँ एतेक शक्ति छै जे खेसारी सन चिमाइठ दालिकेँ अपन गुणक गति दऽ अपने सन तेज गतिमे आनि सरपट घोड़ा जकाँ बनबैए, ओ केना लतिगर झिंगुनी बुते हेतइ, जे सहजे अपनो चिमाठिये अछि..! एकाएक कुशेसरक विचारमे मुड़ियाएल मोड़ बुझि पड़लैन जइसँ मुड़ियाएल मनक विचार जगलैन।

जखन काजक भार माने देवनक काजक भार अपन सिरपर सवार केने चलि रहल छी तखन पहिने ओकरा माथपर सँ भार उतारि निच्चाँमे माने धरतीपर राखि दोसर दिस ताकब आकि सिरक भारकेँ सिसैक-सिसैक भरियेने रहब। जखन माथे भरियाएल रहत तखन दोसर दिस ताकि हएत.?

एकाएक उनटा गिनती जकाँ माने 'सैयाँ-निनानबे' जकाँ कुशेसर अपन भारक भरपनपर नजैर दौड़ौलैन। देवनकेँ दिन-दिनक काज माने सभदिन जोकर काज धड़बैक अछि। अपनो तँ काज करिते छी, यएह काज देवन सेहो करत। जहिना कोनो काजक फल माने मजदूरी, पनरह रुपैआ अपना भऽ रहल अछि आ तइसँ परिवार चलि रहल अछि तहिना ने देवनोक चलए लगत। जँ एतबो काज देवनो करत तँ पनरह रुपैआक फल ओकरो भेटबे करत किने। जहिना गुलाम देशमे रोजगारमे फौती अबै छै तहिना ने जीवनोमे अबिते छै। अपने थोड़े ओहन छी जे डपोरशंख जकाँ दिन-राति दीक्षा बाँटब जे एते दानक एते पून आ एते मानक एते शून्य। धरतीपर जखन बास करै छी तखन धरतीकेँ पकैड़ जीवन-यापन करब आकि चिड़ै जकाँ अकासमे उड़िते-उड़िते सुतबो करब आ आरामो उड़िते-

उड़िते करब।

..एकाएक कुशेसरक मन ठण्ढाएल पानि जकाँ तापसँ तपतपेलैन। तपतपाइते देवनक जीवनपर नजैर पड़लैन। एकाएक मन कहलकैन, कियो अपने जोकरक ने भार उठा दोसरोकेँ भार उठबैक बिसवास करा सकैए। कम-बेसी अपन करनीसँ सेहो होइते अछि। जैठाम माने बंगाल सरकारक अन्नक गोदाममे अपने काज करै छी तैठाम दू-चारि आदमीक घटी रहिते अछि, तहूमे जहियासँ पाँच किलो चाउर-गहुमक अधिकार जनमानसकेँ भेटल तहियासँ गोदामक काज सेहो बढ़िये गेल अछि। मुदा, ई समय माने अखुनका समय, ओ नहि छल जइ समयक चर्च छी। आजादीक आन्दोलनक समय छल। काजपर सँ कुशेसरक नजैर ससैर देवनक सुतै-बैसैक जगह माने रहैपर एलैन। टुटलो धर्मशाला अछि तैयो तँ ओहन अछिए, जइमे अपने सभ रहै छी। एते तँ अछिए ने जे मुम्बइ सन शहरमे लोक एक रुपैआक अखबार कीनि सड़कपर सुतैए, तैठाम एते तँ अछिए ने जे दस गोरे एकठाम बैस भानसो कऽ लइ छी, निचेनसँ सुतितो छी आ देवालमे काँटी गाड़ि झोराक सामान सेहो लटका कऽ रखै छी, पानियोंक दूटा टंकी आ दूटा लेटरीनो अछिए। आवासक सुविधा देखि कुशेसरक मन आगू बढ़लैन।

गाड़ी हावड़ा स्टेशन पहुँच गेल। दू रंगक यात्री गाड़ीसँ उतरला। एक रंगक ओ जिनका अपन घर-दुआर छैन, तैसंग जे भाड़ा लऽ कऽ रहै छैथ आ सभ सुविधा अपना छैन, ओहन यात्री गाड़ीसँ उतैर सोझे घरमुहाँ भेला। दोसर रंगक ओहन यात्री, जिनका अपन ठौर-ठेकान नहि छैन ओ मुसाफिरखानामे अँटैक अपन भोरक कर्म करैले रूकि गेला। एहेन यात्री कम छला आ अपना ऐठाम जाइबला यात्री बेसी छला। गाड़ीसँ उतैर कुशेसर विचारलैन जे अपना डेराक भरोसे रहब तँ बिलम हएत तइसँ नीक अहीठाम पहिने मुहोँ-हाथ धोइ ली, चाहो पीब ली। पछाइत बुझल जेतइ। कुशेसरक मनमे काजक भारीपन सेहो नहियेँ छेलैन किए तँ सभ काजकेँ सुढ़िपर चढ़ने सुढ़ियाएले बुझि पड़ि रहल छेलैन। स्टेशनसँ निकैलते कुशेसरकेँ गुलेती देखलकैन। गुलेती अपने इलाकाक छिया, कलकत्तामे रिक्सा चलबै छैथ आ ओही धर्मशालामे सेहो रहै छैथ जइमे कुशेसर रहै

छैथ। यात्रीकेँ स्टेशन पहुँचाबए गुलेती आएल छला। कुशेसरकेँ देखिते गुलेती बजला-

"कुशेसर, डेरे चलबह। आबह अही गाड़ीपर बैस जाह।"

श्रमिक वर्गक लोक, ठाँहि-पठाँहि बजैबला, कुशेसर बजला-

"गुलेती, दू भाँइ छिअ। तहूमे पहिने चाह पीबह तखन आगू बढ़बह.!"

गुलेतीक मन अपने भीतरसँ खुशी छल। ओना, दुनियाँमे जेते जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ मनुक्ख धरि अछि, सभ खुशीसँ रहए चाहिते अछि, भलेँ जीवन जेहेन हुअए। गुलेती ऐ दुआरे खुश छल जे तेसर खेप यात्री लऽ कऽ आएल छला, जइसँ मनमाना कमाइ भेल छेलैन। मनमाना कमाइक माने भेल जे समय परक काज ने बन्हौटा होइए मुदा असमयक काज तँ मनमाना भइये जाइए। रौतुका यात्री, तँए गुलेतीकेँ तीन दिनक कमाइसँ बेसीए कमाइ भऽ गेल छेलैन। गुलेती बजला- "चाहो के की कोनो सीमा-नाङैर अछि। चलह ने पहिने तीनू भाँइ चाह पीअब, पान खाएब पछाइत रिक्सासँ डेरा चलब। केकरो बान्हल छिऐ जे ओकरा मने काज करब। कमो कमाइ छी तँ कमाइ छी। केकरो बन्हौटा नइ ने छिऐ।"

कुशेसरक मनमे उठलैन जे गुलेतीसँ महिना दिनक हाल-चाल बुझैत, चाह पीबैत, पान खाइत-खाइत भोरो भइये जाएत। आगू बढ़ैत कुशेसर चाहक दोकानपर पहुँचला। चाहक दोकानपर पहुँचते कुशेसरकेँ एकटा अपने गोदामक, अपन गोदामक माने भेल जे जइमे कुशेसर मटियाक काज करै छैथ, तही गोदामक दोसर मटिया, भेटलैन। ओहो चाह पीबए आएल छल। कुशेसरकेँ देखिते सुकदेव बाजल-

"गाममे बड़ देरी लगलह, कुशेसर?"

कुशेसर बजला-

"गाम गेलापर कि अबैक मन होइए, तहूमे माया-जालबला लोक छी, सबहक भेँट-घाँट करैमे समय लगबे करत किने। काजक की हाल-चाल छह?"

सुकदेव बाजल- "काल्हिये साँझमे बारहटा गाड़ी आबि गेल।"

बारहटा गाड़ी, माने अन्नक ट्रक सुनि कुशेसरक मन मानि गेलैन जे जहिना देवनकेँ अनलौं तहिना एकठौर तक पहुँचा सेहो देबे केलौं। माने काज करैक जगह भेट गेल। डेरा गेलापर झोरा राखि पहिने बनर्जीदादासँ मिलि लेब नीक रहत। जाबे अपने डेरा पहुँचब ताबे चारि सेहो बाजिये जाएत, ओहो गोदाम आबिये गेल रहता, भने दुनू गोरे निचेनसँ सभ गप कऽ लेब।

तैबीच सुकदेव दोहरा कऽ बाजल-

“आ हँ, एकटा बड़का समाचार अछि.!”

बड़का समाचार सुनि कुशेसर अचम्भित होइत पुछलखिन-

“से की?”

सुकदेव बजला-

“मनेजर साहैब तँ कमाल कऽ देलखिन।”

कुशेसर बजला-

“की कमाल कऽ देलखिन।”

सुकदेव बजला-

“नव-नव एम.ओ. जिलामे एला अछि। जैठामसँ एला अछि ओ लहटगर जिला रहलैन। खाइ-पीबैक नीक जोगार छेलैन। वएह मैनेजर साहैब माने ‘बनर्जीदादा’केँ उनटा-सीधा पाठ पढ़बए लगलखिन। तैपर ‘दादा’ दू थापर मुहेँमे मारलखिन। ओहो असगरे छला, मुदा मैनेजर साहैब दिससँ हम सभ पहुँच गेलौं। एम.ओ. थकथका कऽ विदा भऽ गेला।”

कुशेसर बजला-

“पछाइत की भेल?”

सुकदेव बजला-

“की हएत। नाङेर पटपटौने एम.ओ. डी.एम. साहैब लग पहुँचल। दादो पीठेपर पहँचला। पहुँचते एम.ओ. सकपका गेला। पहिने की सभ एम.ओ. साहैब डी.एम. साहैब लग बाजल छला से तँ बनर्जीदादा अपना काने नहि सुनलैन। मुदा बनर्जीदादाकेँ देखिते डी.एम. साहैब डपैटकऽ

एम.ओ. साहैबकेँ कहलखिन बनर्जीदादाकेँ पहिने चीन्ह लिऔन। तखन हुनका संग काज करैक ढंग धड़त। कहि डी.एम. साहैब एम.ओ. साहैबक सभ बात घोंटैत बनर्जीदादाकेँ कहलखिन- 'जे भेल से भेल से भूलि जाउ। सभकेँ एक्केठाम रहि काज करैक अछि। तँए सभ भाए-भैयारी जकाँ रहि अपन काजकेँ आगू बढ़ाउ।"

कुशेसर बजला- "तैपर दादा किछु कहलखिन की नहि?"

सुकदेव बजला- "की कहितथिन, गैयाह लोक छथिए हँसि कऽ उड़ा देलखिन।"

पान खा कुशेसर तीनू गोरे रिक्सासँ धर्मशाला विदा भेला। मनमे खुशी रहलासँ जहिना काज करैमे खुशपन अबैए जइसँ खुशी जीवनक फल भेटैए तेहने फलक आशा कुशेसरक मनमे जागि गेलैन। हाँइ-हाँइ झोरा देवालमे लटका बनर्जीदादासँ भेँट करए विदा भेला। पाछू-पाछू देवनो विदा भेल।

आने दिन जकाँ बनर्जीदादा चारि बजे गोदाम पहुँच अपन काजमे जुटि गेल छला। गोदाममे मैनेजरक पदपर बनर्जीदादा जीविका-ले नोकरी करै छैथ, मुदा वास्तविक रूपसँ ओ समाज सेवक छैथ। अपन नियमित रूटिंगक बीच अपनाकेँ रखने छैथ। चारि बजे भोरे गोदाममे आबि, अपनेसँ गेटोक आ गोदामोक ताला खोलि अपन दिनभरिक काज दू घन्टामे निपटा, छह बजे मटिया सभकेँ काज सुमझा अपने रमि जाइ छैथ। हँ, एते जरूर मटिया सभसँ सम्बन्ध रखने छैथ जे अपने नहियोँ रहने नियमित काज मटिया सभ करबे करै छैथ। तैसंग मैनेजर साहैब एते अपना मुहेँ कहिये देने छथिन जे बोराक हिसाबमे केतौ गड़बड़ी ने हुअए। फटल आकि कटल बोरासँ जे चाउर आकि गहुम खसै, ओ अहाँ सबहक भेल। ओकर हिसाब मजूरीमे नहि हएत। जइसँ प्रत्येक मटियाकेँ तीन सेरसँ बेसीए चाउर-गहुम प्रतिदिन भइये जाइ छैन। जे कमाइसँ बाइली आमदनी भेलैन, तँए मटियो सबहक जीवनमे किछु-ने-किछु खुशहाली जरूर अबिते अछि। आन मजदूरक हिसाबे जे मजदूर ओहन मजूरीबला छैथ जिनका उलफी आमदनी नहि छैन। तीन सेर अन्नक आमदनीसँ मटिया सबहक भोजनक समस्या मेटाइये जकाँ गेल छैन। जहिना चाउर-

गहुम प्रति बेकतीकेँ पाँच किलो प्रतिमासक अधिकार भेटने जन-मानसक जीवनमे थोड़-मोड़ खुशहाली एबे कएल अछि जइसँ भोजनक समस्या कमने जे बचत हुअ लगल अछि ओइसँ दोसरो समस्याक समाधानक किछु-किछु साधन भइये जाइए।

चाउर-गहुम मिला एक-एक बेकतीकेँ पाँच किलो भेट रहल अछि ओ ओहिना थोड़े भेट रहल अछि। ऐठाम भेटैक माने भेल संवैधानिक अधिकार भेटब। सत्ता-समाजमे जेतेक एकरूपता अबैए तेतेक स्वतंत्रता भेटब भेल। ई अनेको बर्खक आन्दोलनक फलस्वरूप भेटल अछि। जइ आन्दोलनमे केतेको गरीब जहल गेला, मारि खेलैन आ अनेको तरहक यातनाक शिकार बनल छैथ। तेकर फल छिऐन पाँच किलो चाउर-गहुम महीनाक भोजन। आठम-नवम् दशक माने 1980-90 इस्वीक बीच, खाद्यान्नक मामलामे देश आत्म-निर्भर भेल। तइसँ पहिने बाहरसँ अन्नक आयात होइ छल। एक तँ हजारो बर्खक गुलामीक जीवन जन-गणक छेलैन तैपर खेतीक समुचित बेवस्था सेहो नहि छेलैन जइसँ खेतक उपज बढ़ितैन। अछैते सम्पैत तंगहाली छल। जनसंख्याक वृद्धि तँ जलवायुपर निर्भर करिते अछि जइसँ जनसंख्याक वृद्धि हएब सोभाविक अछिए। किए तँ दुनियाँमे जेते रंगक जलवायु भारतमे अछि ओ आन देशमे नहि अछि। जँ से रहैत तँ कनाडा सन देश, जेकर रकबा भारतक रकबासँ बहुत बेसी छै, मुदा जनसंख्या ऐठामक एकटा राज्यक बरोबरियो ने छइ। जैठाम भारतक जनसंख्या एक अरब तीस करोड़सँ बेसी अछि तैठाम कनाडाक जनसंख्या चारि-पाँच करोड़ अछि।

जीवनक मूल समस्या माने भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा रहितो देशवासीकेँ पहिल जे समस्या भोजनक छी सेहो ने छेलैन। ओना, अखनो भरपूर नहियेँ छैन, मुदा नहिमे किछु तँ छैन्हे। जइसँ जीवनमे किछु-ने-किछु सुधार भेबे कएल छैन। सभ जनिते छी जे जैठाम गरीबी रहै छै तैठामक लोक अन्ने बेसी खाइए। अपना ऐठाम भोजो-काजमे लोक आधा किलोक हिसाबसँ अन्नक सूची बनैबते छैथ। मोटा-मोटी दस किलो अन्न एक गोटाक दस दिनक भोजन भेल। सुभितगर परिवारमे अन्नक एते खपत नहि अछि, किए तँ गरीब लोक जकाँ ने देहक श्रम बेसी छैन आ ने

अन्ने टाक भोजनपर आश्रित छैथ। खेबा-पीबाक अनेको विन्यास छैन्हे जे अभावी लोककेँ उपलब्ध नहि होइ छैन आ सुभ्यस्तकेँ होइ छैन।

जैठाम, जीवनक जे मूल समस्या भोजन अछि, आइ पचहत्तैर बर्खक आजादीक, स्वतंत्र जीवन भेटला पछातियो भोजनक समस्याक समाधान नहि भेल अछि, तैठाम जे आगूक समस्या अछि, माने वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा आ सुरक्षा ओ अकास कुसुम बनल रहबे करत किने।

देवनकेँ संग केने कुशेसर गोदाम पहुँचला। जहिना परिचित कुशेसर ‘बनर्जीदादा’क छेलैन तहिना बनर्जीदादा कुशेसरक छेलैन। खुजल गोदाम, माने गोदामक मुख्य द्वारा खुजल, देखि कुशेसर सोझे बनर्जीदादा लग पहुँचला। बनर्जीदादा अपन बारहो गाड़ीक हिसाब मिला रहल छला। कनी फरिक्केसँ कुशेसर बजला-

“प्रणाम दादाजी।”

ओना, जखने कुशेसर गेटक भीतर प्रवेश केलैन तखने बनर्जीदादा बुझि गेला, जइसँ आँखि उठा चीन्हि, अपना काजमे पुन: लागि गेल छला। कुशेसरक संगमे देवनकेँ अनठिया देखितो मनमे कोनो उत्सुकता बनर्जीदादाकेँ नहियेँ जगलैन। किए तँ अधिक दिन ओहन होइते अछि जइ दिन चिन्हारए जेबो करै छैथ आ अनठिया एबो तँ करिते छैथ।

जहिना कुशेसर फरिक्केसँ प्रणाम केलकैन तहिना बनर्जीदादा हाथक कलमकेँ कागजपर सँ उठा कुशेसर दिस देखैत मुड़ी झूका बजला-

“प्रणाम।”

बुधियार लोक जहिना कम-सँ-कम शब्दमे अपन विचार व्यक्त करए चाहै छैथ तहिना बनर्जीदादा सेहो केलैन। ओना, बनर्जीदादासँ कुशेसर परिचित छथिए जे काजक विचारपर बेसी नजैर दादाक रहै छैन। देवनक काजक जिज्ञासा कुशेसरक मनसँ मेटा गेल छेलैन किएक तँ काजक भरमार सोझामे आबिये गेलैन जे काजक कोनो समस्ये ने अछि। बारह गाड़ी सामान अछि, आठटा मटिया काज करै छी, केतबो झोंकि कऽ काज करब तैयो चौथाइसँ बेसी गाड़ीक काज रहिये जाएत। कुशेसर

बजला- “दादा, गामसँ एबे केलौं अछि। रस्ते-रस्ते सुनलौं जे एम.ओ. साहैबसँ झगड़ा भऽ गेल, तँए अपन हाजरी पुरबए रस्ते-रस्ते चलि एलौं।”

कहब जे झगड़ा भीड़मे गेलौं नहि आ झगड़ामे संग देलौं, एना केना हएत? हँ, किए ने हएत? मानि लिअ कियो झगड़ाक जगहपर नहि रहने, ने देखलैन आ ने लगले सुनलैन, तखन झगड़ाक हिस्सेदार केना बनता। किए ने बनता, जखन कानमे एलैन माने सुनलैन, तखनसँ जे ओइ झगड़ाक खोद-वेदमे लागि जाथि तँ किए ने हिस्सेदार बनि सकै छैथ।

जिनगीक सामान्य गतिमे जहिना रंग-बिरंगक समस्या एने, कर्त्ता अपन समयानुकूल समाधान करैत अपन गतिये आगू बढ़ै छैथ तहिना बनर्जीदादा सेहो केलैन। जइसँ जीवनक गति-विधिमे कोनो बेसी हलचल नहियेँ एलैन। बनर्जीदादा बजला-

“कोनो खास झगड़ा नहि छल। सामान्य छल। तँए जहिना आएल तहिना गेल।”

ओना, बनर्जीदादा कुशेसरसँ गप-सप्प कऽ रहल छला मुदा नजैर देवनपर छेलैन। देवनक विषयमे कुशेसर किछु नहि बाजल छला तँए बनर्जीदादा अपन विचारमे देवनकेँ सम्मिलित नहि केलैन, मुदा देवनकेँ देखि कऽ मन तिरपित भइये गेल छेलैन। क्षेत्र कोनो किए ने हुअए, माने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक वा आने-आन जेना- विज्ञाने, साहित्ये इत्यादि, मुदा कोनो नव आदमीकेँ लगमे एलासँ माने सम्बन्ध बनलासँ, एकटा ओहन आदमीक निर्माण तँ भइये सकैए जेहेन ओ अपने रहल। ओना, समाजमे एहनो चलैन अछिए जे सोना भेटिनौं प्राश्चित करए पड़ै छै आ हरेनौं तँ करए पड़िते छै। खाएर सोनाक गप सोनाक भेल, मूल्यवान रहितो ओ चेतनहीन अछिए मुदा मनुक्ख तँ से नहि छिया, मनुक्ख मूल्यबानक संग चेतनशील सेहो छथिए। खाएर जे छैथ तइसँ बनर्जीए-दादा आकि कुशेसरेकेँ कोन मतलब छैन। अपन जीवन छैन, जइसँ सरोकार राखि अपन यापन कऽ रहला अछि। कुशेसर बजला-

“गाड़ीसँ उतरला पछाइत, माने गामसँ एला पछाइत स्टेशनक बगलेमे सुकदेव चाहक दोकानपर भेटला, वएह कहलैन तँए मनमे भेल जे

पहिने दादासँ भेँट करैत किए ने निश्चिन्त होइ।”

कुशेसरक विचार सुनि बनर्जीदादा मने-मन खुशी भेला मुदा बजला किछु खास नहि, बजला बस एतबे-

“गामक की हाल-चाल अछि कुशेसर?”

गामक हाल-चाल सुनि कुशेसर बजला-

“गामक की हाल-चाल रहत दादा, बिनु बरक मड़बा जेहेन रमणगर होइ छै, तहिना गाम अछि।”

ओना, कुशेसरक बात सुनि बनर्जीदादा बुझि गेला जे गामक अमूल्य बौसे हेरा रहल अछि, मुदा अनकर नीक-अधलाक चर्च अपना मुहेँ उचित नहि बुझि बजला- “से की कुशेसर?”

कुशेसर बजला-

“गाम तँ ओहिना अछि, किछु-किछु गाम कोसी-कमलासँ कटि-खोंटि बीरान जकाँ जरूर बनि गेल अछि मुदा केतबो बीरान भेल अछि तैयो हाड़-मांस तँ वएह छिऐ। मुदा असल जे..?”

‘असल’ कहि कुशेसर चुप रहि गेला। जहिना अपना घरक निन्दा केनिहारकेँ कुल्टा मनुक्ख बुझल जाइए तहिना कुशेसरक मनमे भेलैन। बनर्जीदादा सेहो अपन नियमित जीवनक समयपर धियान रखनहि छला। माने ई जे अपन जे दिनानुदिनक काज छैन, ओकरा ओ ओही तरहेँ निष्पादित करिते छैथ जे जखन जइ काजक समय आएल ओकरा ओही काल निपटबैत जाइ छैथ। जइसँ सैंकड़ो काज किए ने रहए मुदा कनियोँ हदिआइ नै छैथ। गामक जिज्ञासा माने कुशेसरक गामक जिज्ञासा बनर्जीदादाकेँ तेते जोर मारि देलकैन जे विचार बेकाबू भऽ गेलैन। मनक मनाही भेला पछातियो मन नहि मानलकैन। बजला-

“से की कुशेसर?”

कुशेसर बजला-

“गामक लोके गाम छोड़ि पड़ाए रहल अछि तखन गामक उन्नति केना हएत।”

कुशेसरक बात सुनि बनर्जीदादा महसूस केलैन जे कुशेसर देखल-भोगल बात बाजि रहला अछि, तँए किछु पुछब उचित नहि हएत। सबहक सोझक दृश्य छी, तँए अपना-अपना दृष्टिये देखैक सेहो अछिए। देखिते छी जे गामेक विद्यार्थी जखन डॉक्टर बनै छैथ वा इंजीनियर बनै छैथ तखन ओ गाम छोड़ि शहर पसिन करै छैथ आ जा कऽ बसितो तँ छथिये। विचारणीय प्रश्न अछि जे सभ तरहक विपरीत स्थितिमे गामक लोककेँ रहने बीमारीक बाढ़ि रहिते अछि, मुदा डॉक्टर नहि अछि। तहिना किसानक देश रहितो खेतमे ने मशीन अछि ने इंजीनियर आ ने कृषि विशेषज्ञ। यएह स्थिति गामक अछिए। ढोलबज्जा ढोल बजैबते छैथ जे देशक पैदावार उच्चकोटिक अछि। एकरा दू दृष्टिये देखियौ- पहिल, देशमे कृषियोग्य भूमि दू करोड़ अस्सी लाख हेक्टेयर अछि। ओना, अपना ऐठाम राज-राज्यक कोन बात जे एक राज्यक भीतर दर्जनो रंगक जमीनक नापक चलैन अछि तँए स्पष्ट रूपेँ तँ नहि, मुदा जँ हेक्टेयरकेँ अढ़ाइ बीघा मानि लइ छी, तखन ओइ जमीनक माने देशक उपजाउ जमीनक अन्नक उपज जापान, जर्मनी इत्यादि देशक हिसाबे तीन अरब टन अन्नक पैदावार हएत, मुदा उपजैत केतेक अछि? की तीसो करोड़ टन अखन होइए? खाएर जे अछि से अछि, तइसँ बनर्जीदादा आकि कुशेसरेकेँ कोन मतलब छैन। मतलब एतबे छैन जे सरकारी अन्नक गोदाम जँ ठाढ़ रहल तँ अपनो ठाढ़ रहबे करब।

अपन ऐगला काजकेँ ठिकियबैत बनर्जीदादा बजला-

"आइसँ तँ काजपर आएब किने कुशेसर?"

बनर्जीदादाकेँ अनुकूल होइत देखि कुशेसर बजला-

"असगरे किए आएब, दुनू भाँइ आएब।"

'दुनू भाँइ' सुनि बनर्जीदादाक मनक जे पहिलुका जिज्ञासा छेलैन ओ जोर मारलकैन। देवनकेँ पुछलखिन-

"बाउ, अहूँ काज करए एलौं अछि?"

देवन मुड़ी डोलबैत बाजल-

"हँ।"

देवनक मुहसँ 'हँ' सुनि बनर्जीदादाक मन चौंकलैन। चौंकलैन ई जे जहिना दुनियाँमे परिवर्तन होइत चलैए तहिना तँ मनुक्खो आ मनुक्खक जीवनोमे तँ होइते अछि। मुदा तेकरा लोक नीक जकाँ अकाइन कानपर नइ लइ छैथ। जइसँ आस-निरासक बीच जिनगी झुलैत रहै छैन। लगले सन्तुष्ट तँ लगले असन्तुष्ट होइत चलै छैथ। मुदा जँ परिवर्तनकेँ दिशाक धार बनबैत जीवन ताकि ली तँ वएह भेल अपन जीवनक खोज। जखने मनुक्ख अपन जीवनधार खोजि लेता तखने ओइमे प्रवाहित होइत समुद्रमे मिलबे करता। मुदा से अखन देवन थोड़े बुझत। ओकरा तँ क्रमे-क्रमे जखन काजोक आ विचारोक बोध करौल जाएत तखन ओ अपन मानवीय मूल्य बुझत। लगले अपने मन बनर्जीदादाक कहलकैन जे साधारण लोहोकेँ चुमक लोहा अपना दिश आकर्षित करैत सटबैए, मुदा चुमकक गुण ओकरामे ताबे तक नहि अबैत अछि जाबे तक ओकरा आगिमे तपा जोड़ल नहि जाइए। जखन देवन सम्पर्कमे आबि गेल, एतेक बढ़िया हृष्ट-पुष्ट शरीर छै, तखन तँ भेल जे ओइ शरीरमे शरीरीकेँ केना जागौल जाए। बनर्जीदादा देवनकेँ पुछलखिन-

"बौआ, परिवारमे के सभ छैथ?"

देवन बाजल-

"बाबूओ आ माइयो छैथ। बहीन सासुर बसैए। दोसर भाए नइ अछि।"

अखन तक बनर्जीदादा बुझै छला जे देवन कुशेसरक सहोदर भाए छिऐन मुदा देवनक मुहसँ सुनिते बजला-

"कुशेसर के हेता?"

देवन-

"भाय।"

ओना, बनर्जीदादाक मनमे उठलैन जे एक दिस देवन अपन भाइक चर्च नहि केलक आ दोसर दिस कुशेसर भाय कहै छैथ? मुदा लगले अपने मन जोर दैत कहलकैन जे भाए खाली सहोदरे नहि, सहोदरक संग अपन अंगीतक सेहो भाइये होइ छैथ, तैसंग भाए-भैयारीक लेल तँ दुनियेँ पसरल

अछि। भाय तँ वएह ने जे निर्भय जीवन गढ़ैक शक्ति सृजन कऽ दिअए। बनर्जीदादा बजला-

"कुशेसर, आने दिन जकाँ छह बजे तक अपने गोदाममे रहब। किसानक आन्दोलन चलि रहल अछि। ओइमे शामिल हेबाक अछि तँए हमर समयक कोनो ठेकान नहि अछि।"

कुशेसर बजला-

"दुनू भाँइ आबि जाएब।"

बनर्जीदादा बजला-

"बड़बढ़ियाँ। जँ समय भेटत तँ फेर आएब नहि तँ काज रोकैक नहि अछि।"



शब्द तिथि: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

पाँचिम पड़ाव

तीन मास बीत गेल। पिताकेँ तेसर खेप रुपैआ पठबैक जोगार देवनकेँ भऽ गेल। देवन ऐ ताकमे छल जे गाम दिसक जँ कियो गाम जाइबला भेटता तँ हुनके हथौटी रुपैआ पठाएब।

जहिना पिता धनुषधारी माने देवनक पिता, तहिना जलेसरीक मन मानि गेलैन जे जेना देवनकेँ अवढ़ंग बुझै छेलौं, तेना ओ नहि, आब ढंगर भऽ गेल। जँ एहेन किरदानी रहल तँ जरूर परिवार सम्हारि लेत, जइसँ परिवार आगू मुहेँ ससरबे करत। जहियासँ धरतीपर मनुक्ख भेला आकि परिवार बनल तहियासँ तँ अपनो परिवारो आ पूर्वजो ने जीवित रहबे कएल अछि। जँ से नहि, तँ अपन उदय केना भेल। यएह ने आइ धरिक इतिहास रहल अछि, ओकरे ने आजुक परिवेशमे समयानुसार बना चलैक अछि। जे जिम्मा सबहक कान्हपर अछिए...।

अपन दू मासक बीतल जीवनमे संतोख पेब धनुषधारी पत्नीकेँ कहलैन-

“देवनक बिआह करब जरूरी भऽ गेल।”

ओना, जलेसरीक मनमे ई धारणा बनले छेलैन जे जहिना गाममे केतेको लोक देवन सन-सन ढहलेल-बकलेल अछिए, जेकरा ने बिआह-दान भेल आ ने कोनो ठौर-ठेकान अछि। ओही धारणानुकूल जलेसरी बजली-

“देवनाकेँ के पुछत जे बिआह हेतइ?”

पत्नीक विचार सुनि धनुषधारीक मनमे नमहर द्वन्द्व उठलैन, किए तँ एक दिस गाम-समाजमे देखैथ जे देवनक कोन बात जे देवनोसँ नीक-नीक देह-दशाबलाकेँ माने जे शारीरिको आ आर्थिको रूपेँ नीक अछि तेकरो, बिआह-दान नहि भऽ रहल अछि आ देवना तँ सहजे ओइसँ दब अछिए।

ऐठाम ई नहि बुझब जे पुरुखक अपेक्षा महिलाक संख्या कम रहने बिआह नहि होइए। तँए महंथो महंथाना बेसी अछि आ महंथ तँ सहजे छथिए। ऐठाम ई अछि जे जँ बिआह करै छी तँ भविसक बाल-बच्चा आ तत्काल दोसरक (पत्नीक) भार कन्हापर आबि रहल अछि, तेकर निमरजना करैक लूरि-बुधिक खगता तँ अछिए।

एकाएक धनुषधारीक मनमे ओहन सुर्जक उदय भेलैन जेहेन मेघक झँपौन आ शीत-पालाक कुहेससँ मुक्त सुर्जक उदयक होइए। धनुषधारीक मनमे उठलैन, जखन देवनक देह-हाथ एते सुन्दर अछि, तैसंग एते नीक कमा-खटा लगल अछि जइसँ माता-पिताक माने अपने दुनू परानीक खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ रहैयोक आ बर-बेमारीमे दवाइयोक जे दुख रहल अछि ओ तँ दू माससँ, सोल्होअना समाप्त भलेँ नहि भेल हुअए मुदा पहिनेसँ तँ असान जरूर बनियेँ गेल अछि..! एकाएक मनक उत्साह जेना धनुषधारीकेँ जगलैन जइसँ तुष्टपन भरल विचार मनमे एलैन। एलैन ई जे जे बेटा माता-पिताक भार श्रवण कुमार जकाँ अपन कन्हापर उठा सकैए माने सेवा कऽ सकैए, ओ अपन स्त्री आ बाल-बच्चाक सेवा किए ने कऽ सकैए। तहूमे अखन देवनकेँ तीनियेँ मास कलकत्ता गेना भेल अछि। जेना-जेना लूरि-बुधि बढ़तै, तेना-तेना अपन परिवारक क्रियागत चिष्टो ने बढ़तै। जखने चिष्टा बढ़तै तखने ने चेष्टगर जकाँ सचेष्ट बनत आ सचेष्ट जिनगी पौत...। धनुषधारी बजला-

“केकरा बेटासँ हमर बेटा अधला अछि जे बिआह नहि हएत। एहेन-एहेन कमासुत बेटा ले ते बरतुहार सभ डाक-डाकौऐल कऽ दइए आ देवनेक बिआह नहि हएत।”

अपन विचारमे मोड़ दैत जलेसरी बजली-

“हँ, से तँ देखबे करै छी जे करांकुल जकाँ सोमन बाबूक देह छैन, मुदा धनक लोभे केहेन सुन्नरि कनियाँ रीझल रहै छैन।”

अपनो-विचार आ पत्नियोँक विचारक दूरीकेँ पाटैत धनुषधारी बजला-

“जाबे तक लोक देवनक विषयमे नहि बुझलक अछि, ताबे तक

अन्हार अछि, जखने लोक देवनकेँ बुझत-जानत तखन कि देवन देवन रहत। ओ तँ देशक ओहन योद्धा बनि जाएत जे पाँचसँ ऊपर लोकक परिवारकेँ ऐ रूपेँ सम्हारि कऽ चला लेत जेहेन केहनो-केहनो दाँव-घाँउ करैबला बुते नहि चलैए।”

ओना, अपना जनैत धनुषधारी नीक विचार पत्नीक सोझमे रखलैन मुदा जलेसरीक उनटल मन रहैन तँए उनटा कऽ ओहिना बुझि गेली जहिना कियो कोइलीकेँ कारी रंग देखि कौआक बच्चा बुझि जाइ छैथ। जखन कि बुझैक बात भेल जे कौआक पूर्वक वंश कोयली छी तेकरा छोट देखि सभ कौआक बच्चा बुझिते छैथ। ओना, खिस्सा-पीहानीमे मुँह देखि बिलाइकेँ बाघक मौसी कहले जाइए। भलेँ बाघ जकाँ बिलाइ सोल्होअना मांसाहारी हुअए वा नहि, मुदा मुँहक रूप देखि मौसी तँ कहबे करैए। जलेसरीक मनमे जेना एकाएक मोड़ एलैन। माने जहिना जीवनमे तहिना जीवनक बाटमे मोड़ एने एकाएक ओकर शकल-सूरत बदैल जाइए तहिना जलेसरीकेँ सेहो भेलैन। बजली-

“ढहलेलो-बकलेल जँ अपन बेटा अछि, तँ कहुना मांगक सिनूर तँ बँचल अछिए किने। जे कियो निपुतरी थोड़े कहत आकि मुइला पछाइत मुँहमे आगि नहि देत, आकि किरिये-करम नहि करत।”

जलेसरीक बदलल विचार देखि धनुषधारी बजला- “आइयो आ आइसँ पहिनौं, मनुक्खकेँ लोथसँ लऽ नाँगर आ नाँगरसँ लुल्ह धरि सन्तान होइत रहल अछि, कहाँ कियो एहेन बजनिहार भेला जे ओकरा अघटमे फेक दइले कहलैन अछि।”

संजोग बनल, तहीकाल धनुषधारीक ममियौत भाए रामेसर पहुँचलैन। उम्रमे छोट रहने रामेसर दुनू परानी धनुषधारीकेँ गोड़ लागि बैसैत बाजल-

“भैया, पाँच दिनसँ गौरी भाय चैन नहि हुअ देलैन अछि, तही दुआरे एलौं।”

रामेसरक मनक बेचैनी सुनि धनुषधारीक मन सेहो बेचैन हुअ लगलैन। बजला- “किए ने गौरी भाय चैन हुअ देलखुन?”

रामेसर बाजल- “भैया, देवनक बिआह कऽ लिअ। घरो बढ़ियाँ आ कुलो-खनदान बढ़ियाँ अछि।”

ऐठाम गाए-महींस आकि फल-वृक्षक कुल-खनदान नहि बुझब, मनुक्खक खनदानक चर्च छी।

‘खनदान’ सुनि धनुषधारीक मन एकाएक घिरनी जकाँ नाचि उठलैन। अपने नचैत मन कहलकैन जे जेकरा ढहलेल-बकलेल बुझै छी तइ बेटाक मांग आन गाममे केना भेल? ओ केना बुझलैन जे देवन अविवाहित अछि, जेकरा संग अपन बेटीक बिआह करए चाहि रहला अछि। धनुषधारीक मनमे ई एबे ने केलैन जे जखने बेटा काम-काजी बनए लगैए तखने ओकर प्रचार-प्रसार सेहो हुअ लगैए। कलकत्तामे देवनक केतेको संगबे माने अपन इलाकाक लोक सेहो देखिये रहल छेलैन जे नव लोक (कलकत्ताक लेल) रहितो देवन पुरान लोक माने अनुभवी लोक जकाँ कमाइयो रहल अछि आ मासे-मास माता-पिताकेँ अपन कमाइ सेहो पठा रहल अछि।

रामेसरक विचार सुनि धनुषधारी मने-मन विचारए लगला जे बेटा हमर देवन जरूर छी, मुदा कुशेसरे ने ओकरा रस्तापर आनि ठाढ़ केलक अछि, तैठाम बिना कुशेसरसँ विचार नेने ‘हँ’ कहब उचित नहि हएत। तहूमे देवनो जुआन भेल, तँए ओकरो विचार लेब जरूरी अछिए। भलेँ पिता बुझि अपन भार किए ने सुमझा दिअए, मुदा अपनो तँ किछु करतब अछिए। बेटा बिआहक विचार सुनि जलेसरीक मन खुशीसँ तर-ऊपर होइते छेलैन। धनुषधारी चुप्पे छला मुदा जलेसरी बजली-

“किए ने देवनक बिआह करब?”

ओना, जलेसरीक विचार सुनि रामेसरक मन सोल्होअना मानि लेलकैन जे काज माने देवनक बिआह, हेबे करत। नीक (शुभ) यात्रा बना घरसँ चलल छेलौं, तँए सुभर फल भेटल। कथा-कुटमैतीक गप-सप्प छी माने दू-समाज, दू परिवारक बीचक किरिया-कलापक चर्च छी तँए धड़फड़ा कऽ किछु बाजब नीक थोड़े हएत। रामेसर बाजल- “भैया, कथा-कुटुमैतीक काज छी, तँए धड़फड़ेने थोड़े हएत। तखन तँ एते बुझू जे

एकटा कन्यागतक दिससँ बेटा बिआहक नम्बर लगेलौं अछि।”

जहिना सभ माता-पिताकेँ सुशील बेटाक कामना रहिते छैन जइसँ पढ़ब-लिखब, कर-कमौनीक बिसवाससँ मनक तुष्टिक रूप प्रगाढ़ होइत सन्तुष्टिक सीमानपर पहुँचिये जाइ छैन तहिना दुनू परानी धनुषधारीकेँ सेहो भेलैन। अपना आँखिये अपन बेटाक काज आ काजक फलक संग विचार आ विचारैक विदपन देखि माए-बापकेँ खुशी हएब सोभाविके अछि। दुनू परानी धनुषधारीकेँ बेटाक प्रति सेहो तहिना भेलैन। विसमित होइत धनुषधारी बजला-

“बौआ रामेसर, कहुना भेलह तँ तूँ छोट भाए भेलह। तोरा संग झूठ-फूस बाजब गाइक हत्या बरबैर भेल तँए एहेन काज करब नीक नहियेँ भेल। तोंही कहह जे आब देवन जवान कमासुत बेटा भेल, अपन कमाइसँ केहेन परिवार गढ़त, तेते अबगैत तँ ओकरो आब भइये गेल किने?”

धनुषधारीक विचार आ समाजक बीच पसरल परिवेशक बीच रामेसरक मन ओझरा गेलैन। किए तँ एक दिस मनमे उठैन जे जे पिता अपन बेटा बिआहक भार अपने नहि उठा सकै छैथ ओ पिते केहेन अबंड भेला.! बातो ठीक अछि। जखन गुलामीक समयमे मनुक्खक जीवन नाभरोस बनि गेल छल तखन माता-पिता अपन पैतृक धर्म निमाहै दुआरे बाल-विवाहक गढ़ैन केलैन। ओ ऐ दुआरे केलैन जे जेतबे जीवन तेकरे आसमे, तँए अपन पितृ-कर्तव्यकेँ निमाहैत आबि रहल छैथ तँ दोसर दिस पचहत्तैर बर्खक देशक आजादीक परिवेश, विचारमे एते तँ मजगूती आनिये देलक अछि जे लड़का-लड़की माने बेटा-बेटी अपन माता-पिताक देल वैवाहिक विचारकेँ उल्लंघनो कइये रहल अछि। तँए नीक की आ अधला की से कहब कठिन अछिए। बिआह-दानक बीच दान-दहेज एहेन खाधि समाजमे ठाढ़ कऽ देलक अछि जे मनक सभ सपना चूरम-चूर सभक भइये रहल अछि। विचारोक तँ अपन कड़ी अछि, जइ माध्यमसँ एक-दोसर जुड़ल अछि। तैठाम जँ एकटा सोनाक कड़ी आ दोसर लोहाक कड़ीकेँ बीचमे जोड़ए चाहब तँ की ओ समतुल्य भऽ सकैए? केना भऽ सकैए, ई मूल प्रश्न भेल। जीवनक कोनो काज नीकसँ नीकतम किए ने हुअए, मुदा आगूक जँ दोसर-तेसर काज नीकक रस्तासँ पिछैड़ अधला

रस्ता पकैड़ ऐगला काज करत, तखन की पैछला काज ओहिना जगजियार रहत आकि मटमैल जकाँ भऽ जाएत..! जीवन-मरणक बीच ठाढ़ भेल रामेसर बाजल-

"भैया, देवनकेँ अहूँ पुछि लिऔ आ हमहूँ पुछि लेबइ। जे कहत तइ अनुकूल आगू करब।"

शान्तचित्तक विचार रामेसरक मुहसँ सुनि धनुषधारी बजला-

"बौआ रामेसर, जहिना हम देवनक जन्मदाता छिऐ तहिना ने कुशेसरो कर्मदाता भेल, तँए कुशेसरकेँ एते जरूर कहबै जे रामेसर कियो आन नहि छिया, जँ ओ परिवारकेँ अपन परिवार बुझि काजमे सहयोग करए चाहि रहला अछि तँ ओ घीवोसँ चिक्कन भेल किने। अपन श्रमक संग समयोक बचत तँ हेबे करत।"

ओना, लगमे बैसल जलेसरीक मन भीतरे-भीतर खौंझाइत रहैन। खौंझाइक कारण रहैन, गाममे जे आन-आन परिवारमे देखैथ जे अपना विचारे माता-पिता बेटा-बेटीक बिआह करै छैथ तैठाम अपन इज्जत अपने किए गमाएब। इज्जतक रूप चाहे जे हुअए जेहेन हुअए मुदा जलेसरीक मनमे ओहन रूप तँ बनले छेलैन जेहेन आन-आनक मनमे सेहो बनै छैन। जलेसरी बजली-

"की आन बेटाक माए-बाप जकाँ हम (अपने) मरि गेल छी, जे दोसरसँ पुछि कऽ अपन बेटाक बिआह करब।"

जलेसरीक विचार सुनि जहिना रामेसरक मनमे अपन एलहा-केलहा फलक एहसास भेलैन तहिना धनुषधारीक मनमे पत्नीक प्रति क्षोभ जगलैन। क्षोभ ई जगलैन जे जे देवन कुशेसरकेँ पेब मनुक्खक रूपमे ठाढ़ भेल तेकरा बिना पुछने ओकर बिआह करब उचित नहि हएत। मनमे ईहो होनि जे एहेन रोगसँ कि जलेसरीए-टा रोगाएल छैथ से बात थोड़े अछि। समाजे रोगाएल अछि। जहिना अपना फुरने बजली तहिना अपना केने पुरौती। मने-मन जलेसरीक विचारकेँ मनसून-कनसून करैत धनुषधारी बजला-

"बौआ रामेसर, सभ तँ अपने लोक भेलौं। तइ बीच काज बजड़ल

अछि। सभ कियो नीक जकाँ विचारि काजकेँ भसा देब। अपनो बाल-बच्चाक भारसँ उरीन भऽ जाएब।”

तीन मासक बीच देवनकेँ पेब बनर्जीदादा एते विश्वस्थ तँ भइये गेला जे जँ देवन संगमे रहत तँ अपने कार्यमुक्त माने सेवा निवृत्त जकाँ रहबे करब। एहने सोचक कारणेँ बनर्जीदादाकेँ मनमे भेल छेलैन जे जहियासँ देवन गोदाममे प्रवेश केलक, तहियासँ आन-आन श्रमिकक (मटियाक) अपेक्षा ओकरामे किछु विशेष गुण आबिये गेल अछि। एक तँ देवन सन इमानदार, ऐठाम इमानदारक माने खाली मुखौटिये इमानदार नहि क्रियागत सेहो अछि, लोक दुनियाँमे कम अछि। कम्मो केना ने रहत, जैठाम समाजमे दीक्षा पहिने देल जाइए आ शिक्षा, माने ज्ञान-लूरि ले पछातिक समय राखल जाइए तैठाम जँ दुषित समाज नहि बनत तँ की ओ समाज दुसैबला बनत जैठामक जीवन समयक संग जुड़ि क्रियागत रूपमे चलैए। खाएर जे अछि, जेतए अछि ओ तैठामक भेल। तइसँ बनर्जीए-दादा आकि देवनेकेँ कोन मतलब छैन।

देवनक काज देखि बनर्जीदादा एते तँ वशीभूत भइये गेल छैथ जे देवनकेँ जे कोनो जीवनक बात कहै छिऐ तेकरा ओ अख्यिाइस कऽ आँखिपर चढ़ा करै पाछू लागि जाइए। केते सुन्दर विचार देलक जे दू साए मीटरक (गजक) दूरीपर गाड़ी (ट्रक) सँ अनाज अनलोड करि गोदाममे रखै छी, तइ बीच जे साए किलो, माने एक क्वीन्टलक बोरा पीठपर लादि लोक उघै छैथ, तइसँ नीक ने हएत जे पीठपर उघैक बदला ठेलासँ उघब बेसी असनगर हएत। दू साए गजक (मीटर) बीच जे मनुक्खक पीठपर लादल सौ किलोक बोरा रहल आ बीचमे जँ केतौ धक-चुक भऽ गेल तँ ओ आदमी मरबे करत किने, जँ नहियोँ मरत तँ अपलांग-विकलांग भइये सकैए। जँ एहेन खतरा मेटबैक दोसर असान उपाय अछि तँ किए ने ओहन उपाय कएल जाए। ओना, बनर्जीदादाकेँ अपना मनमे गलानियोँ होनि जे जिनका पाछू सदिकाल बेहाल रहै छी तिनकर समस्ये नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छी। भाय दुनियाँ देखैक चीज छी, सभ देखैए, मुदा असल देखब तँ तखने ने होइए जखन लोक अपने-आपकेँ देखि दुनियाँ देखए विदा होइए। दुनियोँ ऊबर-खाबर, पहाड़-समुद्रसँ तँ भरले अछि। देवनक

काजसँ बनर्जीदादा गोदामक काजमे एते निधैन-निफिकिर भइये गेल छैथ जे जँ सरकारी अतिथि आबैथ आकि अपन संगी-साथीक संग कुटुम-परिवारक स्वागत-बेवहार हुअए से गुण तँ देवनमे आबिये गेल अछि।

बनर्जीदादाक अपनो मन एते कहबे करै छैन जे भाय माइटिक मुरुत जकाँ मनुक्खो अछि, तहीमे ने ओहन प्राण-प्रतिष्ठा भरैक अछि जे ओ देवक्रिया पकैड़ देवतुल्य भऽ जाए आकि सोझे मनक स्नानसँ देहक मैल छोड़ा लेब। देहक मैल तँ हाथसँ मललापर छुटैए। देवन केना विधाताक निरमौल विधिपूर्ण जीवनधारक बनत, एहेन प्रश्न बनर्जीदादाक मनमे सदिकाल नचैत रहै छैन।

जहिना दुनियाँक भौतिक वस्तु परिवर्तित होइत रहैए तहिना ने मनुक्खोक जीवन छी। अबोध बच्चाक रूपमे जन्म भेल। समयक संग बढ़ैत गेल। माने खेलब-धुपबसँ शुरू भेल, पछाइत विद्यालय आएल, तेकर पछाइत परिवार, समाज इत्यादि आएल। अपनो शरीर बच्चासँ टेल्हुक भऽ सियान होइत वृद्ध हएत। सबहक शरीरक यएह गति छी, आ अही बीच शरीरी सन शक्ति सेहो अछि। जखन अपनेकेँ नहि देखि पाएब तखन दुनियाँकेँ तँ एहेन विकट गंथले अछि जे सभ नहि देखि पबैए। केना देखि पौत। मने-मन तँ सभ सुखे-चैनसँ जीबए चाहै छी, मुदा परिवारक नून-तेलक झखैन तेहेन धेने रहैए जे झखड़ल डारिक आम जकाँ डंटीक रसं (पानि) तेना सुखा गेल अछि जे कखन छी आ कखन नहि छी, तेकर कोनो ठेकाने ने अछि।

पाँच सालसँ कुशेसर कलकत्तामे रहने अपन चिष्टासँ चिष्टा गेने एतेक तँ नीक जकाँ बुझिये रहला अछि जे मनुक्खकेँ उमेरो आ मेहनतोक हिसाबसँ, जँ सम्भव भऽ सकै तँ आरामो आ भोजनो करबेक चाही। मुदा से तँ सम्भव तखन भऽ सकैए जखन बिसवासू जीवन क्रिया-कलाप बनत। ओना, अपन-अपन उपार्जनक अनुकूल सभ कियो अपन-अपन जीवन गढ़िये लइ छैथ, मुदा ओही गढ़ैनकेँ नीकसँ गढ़लापर नीक होइए आ नीकसँ नहि गढ़लापर झुकि-झुकि झकैत-झकैत विपरीत भइये जाइए जइसँ विपरीत जीवनक निर्माण भऽ जाइए। जखने कोनो बउसे वा मनुक्खेक विपरीत दिशामे निर्माण हएत तखने ओ विपरीत बउसो आ

जीवनोक निर्माण सेहो करत। ओना, की विपरीत आ की रीत तेकरा फड़िछाएब असान सेहो नहियेँ अछि। कहब जे किए ने अछि? सोझेमे देखै छी जे गाछे-बिरीछक जड़िक सिर माइटिक तरमे अछि आ मनुक्खक सिर ऊपर अकासमे अछि। गाछ-बिरीछ केहनो दाता-फलदाता किए ने हुअए मुदा माटिमे गरल अपन जीवनक फलकेँ केते दूर धरि बाँटि-छिड़िया सकैए? ई दीगर भेल जे मिथिलाक फल गाड़ी-सवारीसँ, देशक कोन बात जे आनो देश पहुँचैए मुदा तइ बीच मनुक्खोक करामात तँ चाहबे करी। मनुक्ख ओहन मनक मनु छी जे अपन जीवनक अपने भार उठा चलैए।

कलकत्ता प्रवासक बीच जे अपन जीवनक अनुभव कुशेसरकेँ भेल छेलैन, ओ अनुभव वैचारिक रूपमे देवनकेँ सेहो दिअ चाहैथ। मुदा काजक व्यस्तता मनक यादास्त शक्तिकेँ बेठौर बना देने छेलैन जइसँ जखन मोन पड़ै छेलैन तखन दोसर काजमे लगल रहै छला आ जखन कहैक समय अबै छेलैन तखन मनेसँ विचार हेरा गेल रहै छेलैन जइसँ तेसर मास पूर्ण भऽ गेलैन मुदा मनक बात मनेमे झाँपल कोनो शिशुपन पौधा जकाँ तरेतर तँ अपन वृद्धि करै छेलैन, जइसँ खसल मुँह रहने निच्चेँ-निच्चाँ औनाइत-मुड़ियाइत रहि जाइ छेलैन। संजोग बनल। औझुके दिन माने औझुके तारीखकेँ गोदाम क्रियागत भेल। माने औझुके तारीखकेँ गोदामक काज गोदामक रूपमे शुरू भेल, जइसँ साले-साल औझुका दिन गोदाममे छुट्टी रहैए। ओना, काज बन्द रहने उट्ठा काज करैबला जे मटिया-मजदूर छैथ तिनका आमदनीमे, माने उपार्जनमे बाधा हेबे करै छैन मुदा से एते बेवस्था गोदाममे बनल अछि जे जे मासिक वेतनभोगी नहि छैथ, हुनका उपहार स्वरूप ओते अर्थ देल जाए, जेते काज-दिनक आमदनी होइए। मुदा तैयो एते घाटा तँ मटिया-मजदूरकेँ होइते अछि जे काजक दिन जे काटल-फाटल बोरासँ जे अन्न होइ छेलै, जे श्रमिकक हिस्सा मानल जाइ छल, से नहि होइ छेलैन। ओना, देहकेँ मेहनतो तँ नहियेँ करए पड़ै छेलैन।

गोदामक स्थापना दिन रहने सरकारो-विभागक आ गोदाममे काज करैबला मटियो-मजदूर एकठाम बैस उत्सवो मनबै छैथ आ जीवनक गप-सप्प सेहो करिते छैथ। जइसँ मनुक्खोक जीवन आ शासनोक (सत्तोक) जीवनक चर्च चलिते अछि।

संजोग एहेन बनल जे सरकारक एकोटा पदाधिकारी कार्यक्रममे नहि पहुँच सकलाह। लॉक-डॉनक समय, सभ स्वास्थ्य-विभागमे ओझराएल छला। बनर्जीदादा टा मात्र सरकारक पदाधिकारीक रूपमे रहला। बेवस्था नीक छेलैहे। बेवस्था माने खेबा-पीबाक आ बैसैक ओरियान। एक दिन पहिनहि बनर्जीदादा सभ श्रमिककेँ कहि देने छेलखिन जे सभकेँ रहब अनिवार्य अछि। ओना, काज बन्द रहत मुदा विभागक की किरिया-कलाप अछि तइ विषयपर चरचो हएत, हँसियो-मजाक हएत आ भोजो-भात तँ हेबे करत। तैसंग एते उपहारो भेटबे करत जेते दिनक कमाइ होइए। तेकरा मजदूरीक मिनहा बुझब।

ठीक समयपर सभ गोदामक आगू बनल सभागारमे उपस्थित भेला। समारोहक आयोजन करैमे जहिना बनर्जीदादा तहिना देवनक नीक योगदान छेलैन। बैसक शुरू होइसँ पहिने जलपानो आ चाहो-पान चलल। होइतो अहिना छै जे जखन दस गोरेकेँ सम्मिलित रूपमे एक रंग खान-पान भेल रहत तखन मनक सुआदो बुझैक-विचारैक, एक रंग भवन रहिते अछि। अपन सुअवसर बनर्जीदादा बुझि मने-मन खुशी छला जे आइ अपने मटिया-श्रमिक बनि श्रमिकेकेँ पदाधिकारी बना गप-सप्प करब। ओना, आन दिन समय पेब श्रमिक सभसँ बनर्जीदादा भरि मन गप करिते छैथ जइसँ हिनका बुझल छेलैन्हे जे जेते मनुक्ख दुनियाँमे छैथ सबहक एकटा दुनियाँ सेहो छैन आ बेकता-बेकती मनुक्खक दुनियाँ सेहो अछि। मुदा से केना अछि तैठाम भकचका जाइ छला। भकचकाइक कारण होइ छेलैन जे ओहन समाजक विचारसँ अपन विचार स्थापित कऽ नेने छैथ जइसँ केतौ-केतौ विपरीत भऽ जाइ छैन, तखन अपन विचारपर मनमे ग्लानि ईहो होइते छैन जे अपन बुधिये कँचकूह अछि। मुदा मन तैयो ने मानैन, सदिकाल मन कहबे करैन जे जिनकर पक्षधर बनि ठाढ़ हुअ चाहै छी तिनके गरदैनकट्टी भऽ जाइ छैन। तँए ओइ श्रमिकक वास्तविक अपन जीवनक की दुनियाँ अछि, माने जीवन अछि तही तहमे जखन विचार करब तखन मूलकेँ बुझि सकै छी। समयो अनुकूल अछिए, अपने दुनूक बीचक जे सीमा भेल वएह भेल जीवनक रास्ता। ओही रास्तापर ठाढ़ भऽ अपन दशा-दिशा देखैत चलब। ई बात बनर्जीदादाकेँ बुझले ने रहैन जे

कृति, स्मृति आ विनिर्गत ज्ञान केना अपन कर्मक संग चलैए। ज्ञानक समटल रूप बनर्जीदादाकेँ मनमे रहैन तँए आगूक झलअन्हारकेँ आँखि पार नहि कऽ पबैत रहैन।

चाह-पान तक चलि चुकल छल मुदा अखन तक समारोहक विधिवत रूप बनबे ने कएल। जहिना सभ दिनसँ सभक बीच चलि अबैत जीवनक गप-सप्प छल तहिना गपे-सप्पमे समारोहक विधि-विधान तर पड़ि गेल। सभ दिन एहेन क्रिया-कलाप रहिते अछि जे दोकानमे बैस जलपानो आ चाहो-पान संग मिलि सभ करिते छी तइमे कोन एहेन काज भेल जे समारोहक कोनो तरहक विघटन भेल। तहूमे सभ बुझिते छी जे समारोहक ताम-झाम मिडियाक माध्यमसँ होइए, तइले दसटा फोटो आ समारोहक विधिवत् सूत्र प्रक्रिया लीखि कऽ पठा देब, बस भऽ गेल समारोहक विधि-विधान।

काना-कानी आ फुसा-फुसी जहिना जलपानक दोकानमे होइए, चाह-पानक दोकानमे होइए तहिना बैसारमे चलिये रहल छल। सभ अपने ताले बेहाल, तँए जेते बजनिहार तेतबे सुननिहारो भेला। माने दू-दू गोरे गप-सप्प करए लगला।

आँखि उठा जखन बनर्जीदादा बैसार दिस तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे समारोहमे ने वक्ताक कमी अछि आ ने श्रोताक, तखन अपन बात (विचार) के सुनत..? तैसंग ईहो मनमे होनि जे तखन के केकर बात सुनता आ के केकर सुखे-दुख बुझता आकि जीवनेक गति-विधि बुझता..! बैसले-बैसल बनर्जीदादा विचारक ओहन सघन वनमे हेरा गेला जैठाम मात्र दुइये गोरे, बनर्जीदादा अपने आ देवन रहैथ। सेहो दुनू गोरे ऐ दुआरे बँचल रहैथ जे समारोहक बेवस्थाक पाछू लागल छला।

बनर्जीदादाकेँ हेराएल मनमे भेटलैन जे जखन सभ अपन-अपन धुनिमे मस्त छैथ तखन अपनो दुनू गोरे किए ने अपने धुनी लगा एक-एक जीवनकेँ धुनि-धुनि धुनिया बनी। एक-एक श्रमिकक (मटियाक) भेद-भेदिया जीवनक रस्साकेँ पकड़ी। तैसंग काज देखि बनर्जीदादाक मनमे ईहो खुशी एलैन जे जीवने ने जान आ जाने ने जहान दइए। मुदा मनुक्खो तँ मनुक्ख छी जे गैंची माछसँ बेसीए पीछराह होइए। कखन पानिमे

सुरकुनियाँ मारि किम्हर ससैर जाएत आ लगले थालमे केना थुसकुनिया मारि साँस छोड़ए लगत, तेकर कोनो ठीक अछि। फेर अपने मन बनर्जीदादाकेँ कहलकैन जे केतबो गैंची माछ जकाँ मनुक्ख गैंचियाह किए ने हुअए, मुदा जे जीवनी मछबार छैथ ओ पकैड़ नहि पबै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। पानिमे रहए आकि थालमे, ओ पकड़ा जाइते अछि।

दसे-बारहटा मटिया गोदाममे काज करै छैथ जइसँ बैसारोक आकार छोटे छल। मुदा किछु छल, गिनतीमे जहिना एक साए तक गिनती सीखैले साएटा बउसो चाही, नहि तँ साएटा अंक तँ चाहबे करी। जाबत से नहि हएत ताबत साएक माने मुखौटीए ने रहत। एक-एक जीवनकेँ जखन साइयो ढंगसँ गनए शुरू करब तखने जीवनकेँ सही ढंगसँ पकैड़ पएब। नहि तँ बारहमासा आ चौमासाक भेदे ने बुझि सकब। सभ जनिते छी जे बारहमासामे–जाड़, गरमी आ वर्षा–तीनू मौसमक सुख-दुखक वृतान्त कहल जाइए, जखन कि चौमासामे मात्र एक मौसमक। भलेँ स्वरलहरी एक्केरंग किए ने लहरैत हुअए।

अपन धियानकेँ समेट, धियान माने भेल विषय-वस्तु, बनर्जीदादा एकाग्र केलैन। एकाग्र होइते अपन मन विचारमे विचरण करैत बनर्जीदादाकेँ कहलकैन जे मनुक्खक शकल-सूरत जहिना बाहरी अछि, माने ऊपरसँ देखैमे अछि, तहिना भीतरमे सेहो अछिए। अनेको रंगक गुण अवगुण जहिना बाहरी अछि तहिना भीतरियो तँ अछिए। बउसो (वस्तुओ) आ विचारो एहेन छीहे जे एकठाम एकगोरे-ले गुणकारी होइए तँ दोसरठाम बदैल अगुणकारी नहि होइए सेहो बात नहियेँ अछि। मुदा बीचमे जे कारीगिरी छिपल अछि ओ तँ वएह करि सकै छैथ जिनका कारीगिरीक करीनापनक बोध होइन। ओ तँ छिड़ियाएल अछिए। एकरंग मनुक्खक शकल-सूरत रहितो जहिना विचारमे तहिना जीवन क्रियामे सेहो भेद बनियेँ गेल अछि।

जेम्हर-जेम्हर बनर्जीदादाक मन जीवनमे विचरण करैन तेम्हर-तेम्हर यएह देखैथ जे एक्के सीमापर ठाढ़ भेल सभ अपनेमे घौंचाल कऽ रहला अछि। जइसँ मनमे अकछो उठि कहैन जे अनेरे कोन लपौड़ीमे पड़ल छी। सभ अपन-अपन सीमापर ठाढ़ रहितो अपने सीमा नहि बुझि पेब रहला

अछि आ आनक सीमा सरहद कायम करए चाहि रहला अछि। भाय, बाधमे सइयो बीघा जमीनो अछि आ सइयो जमीनबला सेहो तँ छथिए। अपन-अपन जमीनक आड़ि-पाटि सभकेँ बनले छैन, जइसँ अपन-अपन खेतक परिचय सेहो सबहक बनल छैन्हे। जखन-कखनो कोनो काजे वा देखबेक खियालसँ बाध जाइ छी तँ अपने खेतक आड़िपर ने पहुँच जाइ छी। तहिना जँ अपन जीवनक आड़ि बनि जाएत तखन ने अपन खेतेक उपज जकाँ अपन कर्तव्यबोध सेहो ज्ञात हएत जे अपने की छी आ अपन कर्तव्य की अछि। तँए ईहो ने अपने सोचैत-विचारैत-करैत आगूक बाट, जीवनक बाट, बनबैत अपना जीवनकेँ आगू मुहेँ ससारैत चलब। मुदा अन्हारो तँ ओहन अछिए जे कहलो जाइते अछि जे संगेमे वैद मियाँ मरता है..! मुदा एहेन कहबो कि ओहिना बनि चलि रहल अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। नीक विचार मनमे रहितो, सभठाम बजैसँ परहेज करए पड़ैए। से खाली बाजबे धरि रहैत तखन तँ ओइसँ किछु-ने-किछु बिगड़ैत मुदा जीवनकेँ तेना सघन अन्हार छानि कऽ पकैड़ नेने अछि जे कखन मुहसँ दिनकेँ राति आ रातिकेँ दिन कहत तेकर ठेकाने ने रहि गेल अछि। अपने विचारक दुनियाँमे बनर्जीदादा विसमित भऽ गेला।

विसमित होइते बनर्जीदादाकेँ अपने मन विचार देलकैन जे सबहक मनमे रहिते छैन जे भरि दुनियाँक प्रेम भेटए आ अपनो प्रेमसँ दुनियाँक पूजन-अर्चन करी। मुदा..। ऐठाम अबैत-अबैत बनर्जीदादा देवनकेँ हाथक इशारासँ लगमे बजौलैन। लगमे अबिते देवन बजला-

“दादा, समारोहक रूखि नीक बुझि पड़ैए?”

ओना, देवनक विचार बनर्जीदादाक मनमे कठाइन लगलैन। कठाइन ई लगलैन जे जखन सभ अपने ताले बेताल अछि तखन समूहक विचार केना एकरंग हएत? जाबे सामूहिक विचारमे एकरूपता नहि रहत ताबे सामूहिक विचार बनि समाजमे ठाढ़ केना हएत। मुदा लगले बनर्जीदादाक अपने मन देवनक जीवनकेँ आँकि विचार देलकैन जे अखन देवनक जीवन निरमेबे केते केलैन अछि जे सोल्होअना बुझता। अखन तँ जीवनमे पहिले-पहिल डेग उठौलैन अछि। अपन विचारकेँ मुड़ियबैत बनर्जीदादा बजला- “देवन, जेहेन सुआद भेटक चाही से नहि भेट रहल

अछि।”

बनर्जीदादाक विचारक अभयन्तरकेँ देवन बुझि नहि सकला। मुदा आगूमे उठल प्रश्नक जवाब तँ देबे छेलैन। बजला-

“एको वस्तुक सुआद कि सभकेँ एक्केरंग लगै छैन।”

ओना, देवनक विचारमे बनर्जीदादाकेँ अमूल्य रस सेहो देखि पड़लैन मुदा देवन ओइ रसक भेद बुझि बजला आकि गपक (विचारक) क्रममे बजला, ई दुविधा मनमे जागिये गेल छेलैन। होइतो अहिना अछि जे विषय कोनो वा केहनो किए ने हुअए माने ओकरा नीक जकाँ बुझैत होइ आकि नहि बुझैत होइ, मुदा विचारक क्रममे माने गप-सप्पक क्रममे बिनु बुझनिहारो एहेन प्रश्न चालिये दइ छैथ, माने उठाइये दइ छैथ जे ओइ विषयक महत्वपूर्ण घटक होइ। विचारक दौड़मे बनर्जीदादाक अपने मन आगू-पाछू हुअ लगलैन। आगू-पाछू होइत मनकेँ थीर करैत बनर्जीदादा बजला-

“देवन, अखन ऐठाम जेते गोरे बैसल छी, सभ मजदूरे छी, भलेँ ओकरा खेतक काजमे बोनिहार, गोदामक काजमे मटिया वा अन्य काजमे आन-आन नाम किए ने हुअए, मुदा उद्देश्य तँ सबहक एक्के होइ छैन जे जीवन-यापन ले उपार्जन करी।”

बनर्जीदादाक सोझराएल विचार सुनि देवन बजला-

“हँ! से तँ अछिए।”

देवनक मुहसँ ‘हँ से तँ अछिए’ सुनि बनर्जीदादाक अपन मनक बिसवास जागि गेलैन जे देवन अपन जीवनक सीमापर ठाढ़ भऽ रहल छैथ। बजला-

“देवन, अखन जे दसो-बारहो मजदूर एकठाम बैस गप-सप्प कऽ रहल छी, की सभक ध्येय एक्केरंग अछि।”

बनर्जीदादाक विचार महाभारतक ओइ कराहक सोझे टाँगल माछक आँखिपर, जहिना अर्जुन छोड़ि किनको नजैर नहि पड़लैन, तहिना बनर्जीदादाक विचारक आँखिपर देवनक आँखि नहि पड़ि सकलैन तँए गुमे-गुम चुपे रहला। जे बात बनर्जीदादा बुझि गेला। मुदा तैयो किछु क्षण

प्रतीक्षा करब नीक बुझलैन। किछु समय बीतला पछाइत बनर्जीदादा बजला-

“देवन, ऐठाम जेतेक मटिया-मजदूर छी तइमे अनेको गुण-सोभाव अछिए, मुदा अखन से नहि, अखन मोटा-मोटी एतबे देखैक अछि जे अपन मन की कहै छैन।”

‘देखब’ सुनि देवनक मन उछैल गेलैन जइसँ बिच्चेमे बजा गेलैन-

“मोटा-मोटी की देखैक अछि?”

देवनक प्रश्न सुनि बनर्जीदादा मने-मन विचारकेँ मनेमे घोंटलैन तँ बुझि पड़लैन जे देवनकेँ अखन अपनो मनक विचार व्यक्त करैक शब्दकोष नहि अछि, जइसँ अपन भावना व्यक्त कऽ सकता। मुदा भावनाक संग भावन तँ छैन्हे। जइसँ शब्द भलेँ व्यक्त नहि कऽ पबैथ मुदा अपन हाव-भाव तँ व्यक्त कइये सकै छैथ। बनर्जीदादा बजला-

“देवन, जेतेक मजदूर ऐठाम छी तइमे गौर करियौ जे केते गोरे केते दिनसँ एक वृत्तिमे लगल छैथ, पछाइत दोसर विचार करब।”

तीनियेँ मासक देवन, माने तीनियेँ माससँ गोदाममे काज करै छैथ, तँए सबहक विषयमे बुझल छेलैन नहि, सुपुट मुहेँ बजला-

“दादा, जखन अपने नव छी तखन पुरानक विषयमे की बुझब। नहि बुझै छी।”

सोझमतिया देवन, तहूमे गमैया बकलेल, अपन विचार सादा कागज सदृश बनल छेलइ। देवनक सोझपन देखि बनर्जीदादाक मन मजगूतीसँ विचार देलकैन जे अखन देवन नव अछि, जँ काजक मर्म बुझि जाएत तँ जीवनोक मर्म बुझिये सकैए। तँए किए ने देवनकेँ जीवन देखा, जीवन निरमबैक रास्ता सुझा दिऐ। देखाएबे धरि ने अपन कर्तव्य-कर्म भेल आकि ओकर हाथ-पएर पकैड़ अपना हाथ-पैरमे जोड़ि करा देब। हँ, एते तँ सम्भव अछिए जे ओइ काजकेँ अपना हाथे करि कऽ देखा दिऐ। जैठाम खगता हेतै आ अपन हाथ-पएर लाड़ला-चाड़लासँ जँ भऽ जेतै, वएह ने भेल उचितक संग उपकार। उचित-उपकार जाबे एक-दोसरक बीच नहि हएत ताबे समाजक बीच एकरूपता केना औत। उपकारक माध्यमसँ

कर्मक विचरण होइए, माने जेहेन काजक उपकार करब, ओइ काजक तँ अपन ऐगला-पैछला जीवन सेहो अछिए। ओ तँ बीचक काज भेल।

देवनकेँ आँखिक इशारा दैत पाछूक पतियानीपर खिड़बैत बनर्जीदादा बजला-

“देवन, चारू गोरे जे पाछूमे बैसल छैथ, ओ तीस बर्ख ऊपरेसँ ऐठाम काज कऽ रहला अछि।”

जहिना सर्व-साधारण बुझै छैथ तहिना बुझि देवन बजला-

“तखन तँ आब रिटायर करै-जोकर भऽ गेला?”

देवनक बात सुनि बनर्जीदादाकेँ हँसी लगलैन। हँसीक कारण खुजली-दिनाए केर घाओ जकाँ भेलैन। जहिना खुजली-दिनाए कुरियबैकाल मनमे गुद-गुदी लगैए मुदा ओकर जलइनमे जलन नहि अबैए सेहो बात नहियेँ अछि। अबिते अछि, तहिना बनर्जीदादाक मनमे भेलैन जे देवन अखन दुनियाँक रीति-नीति नहि बुझि पेब रहल छैथ तँए एना बजला अछि। जँ से बुझैत रहितैथ तँ ईहो बुझबे करितैथ किने जे दुनियाँमे एक घर हँसैए तँ दोसर कनबो करिते अछि। तैबीच अपने केतए छी आ कोन गुण अलापै छी। विचारकेँ समटैत बनर्जीदादा बजला-

“देवन, गोदामक मटिया-मजदूरकेँ रिटायरमेन्ट नहि होइ छैन, ओ अपने थाकि हारिकऽ चलि जाइ छैथ। सरकारीकर्मी जकाँ हुनका पेंशन नहि भेटै छैन।”

पैछला पतियानीपर नजैर उठा कऽ देखैत देवन बजला-

“दादा, एक गोरेकेँ अहीठाम बजेने अबै छिऐन।”

बनर्जीदादा बजला- “नीक हएत। भने ओ अपन विचार सभक बीचमे रखता।”

हरदेव लग जा देवन कहलकैन-

“गुरुजी, दादा बजा रहल छैथ।”

ऐठाम गुरुजीक माने अखड़ाहाक खलीफा आ दर्जीक शिष्य सदृश अछि। हरदेव-सहदेवक जोड़मे गप-सप्प करै छला। हरदेवकेँ बजाहटिसँ

सहदेव सेहो उठिकऽ ठाढ़ होइत आगू बढ़ैत बजला-

“चलू! दुनू भजार संगे चलै छी।”

हरदेवो आ सहदेवो, बनर्जीदादा लग पहुँचला। लगमे दुनूकेँ पहुँचते बनर्जीदादा बजला-

“हरदेव दादा, ऐठाम सभसँ पहिनेसँ अहीं काज करै छी?”

हरदेव बजला-

“हम आ सहदेव, दुनू भजार एक्के दिन गामसँ कलकत्तो एलौं, एक्के गामक सेहो छी आ संगे-संग गोदाममे काज सेहो शुरू केलौं। बनर्जी भाय, अहाँकेँ अबैसँ पहिनहिसँ ऐ गोदाममे काज करै छी।”

ओना, बनर्जीदादाकेँ अपनो बुझले रहैन तँए दोहरा कऽ नहि पुछि सोझे बजला-

“केते दिनसँ अहाँ दुनू गोरे ऐठाम काज करै छी?”

हरदेवसँ सहदेव बजैमे बेसी चड़फड़। हरदेव मने-मन साल मोन पाड़ए लगला, तइ बिच्चेमे सहदेव बजला-

“बड़का भुमकम ओही साल भेल छेलइ।”

1934 इस्वीक भुमकमकेँ अँटकारि बनर्जीदादा बजला-

“तखन तँ तीस बर्खसँ बेसीए भऽ गेल.!”

सहदेव बजला- “से तँ नीक जकाँ ठेकान नहि अछि मुदा जहिया लौहकिये वयस छल तहियेसँ जे काज धेलौं से अखनो धेनहि छी।”

एकटा जीवन भेटने जहिना रंग-रंगक लोककेँ रंग-रंगक खुशी होइ छै तहिना अपन स्वभावानुकूल सहदेवक जीवनमे बनर्जीदादा खुशी पेलैन। जइसँ मनमे एते खुशी पनपिये गेलैन जे समुद्र मथन करैक निर्णय केलाह। मुदा सहदेवक जीवन लीलाकेँ केतए-सँ शुरू करितैथ तइ करैमे बनर्जीदादाकेँ मने उजगुजा गेलैन। दू पाँतीक शायरी सुनि अन्हरो-बहिरा जहिना ‘वाह-वाह’ करए लगैए तहिना दादाक मनक एकटा कोणमे उठि गेलैन। मुदा तेकरा दोसर कोणक मन दाबैत विचारकेँ समतूल बना देलकैन। बनर्जीदादा बजला- “आइ जे अपना सभ एकठाम बैस समारोह

मना रहल छी ओ खुशीक अछिए। मुदा दुर्भाग्य कहियौ कि सौभाग्य, भने कियो बाहरी लोक नहि एला। अहाँ दुनू गोरे सभसँ बेसी दिनसँ ऐठाम काज करै छी, अखन तकक जीवनमे की सभ देखलौं आ की सभ मोड़ आएल, तेकरा एका-एकी (क्रमश:) शुरूहेसँ सभकेँ सुना दियौन। किनको जँ कोनो घटना वा विचार बुझैमे नहि औतैन, तेकरा ओ अपन प्रश्न बना पछाइत अहाँसँ पुछि लइ जेता।”

बनर्जीदादाक विचार सुनि सहदेवक मनमे ओहिना भेलैन जहिना सभकेँ होइ छैन जे अपन दुखनामा तँ सभकेँ सुनबए चाहै छैथ मुदा सुखनामाकेँ चोराकऽ राखि लइ छैथ। सहदेवकेँ एकाएक अपन कलकत्ता प्रवासक ओ दिन मोन पड़लैन जे गाम छोड़ैसँ पाँच दिन पूर्वक छल। ओ दिन छी उन्नैस साए चौंतीस इस्वीक, जहिया भुमकम भेल छल। तिलासंक्रान्तिक दिनक घटना छी जइमे गामक सुन्दरता माने गामक खेत-पथार, बाड़ी-झाड़ी, गाछ-बिरीछ इत्यादि, एकाएक भुमकमक एहेन प्रभाव भेल जे सभकिछ नष्ट भऽ उजैड़ गेल। जनकजीक फुलवारी जकाँ फूल-फलक वृक्षसँ भरल अपन लछमीपुर गाम छल, अन्नक भण्डार खेत छल, पनरहसँ ऊपरे पोखैर छल आ पच्चीससँ ऊपरे इनार, जे अपन गामक सबलता रहए। मुदा भुमकमक एहेन प्रभाव भेल जे सभचीज नष्ट भऽ गेल। से खाली लछमियेपुरटाक नहि, काठमाण्डूसँ मुँगेर तकक अधिकांश गामक सभकिछ तहस-नहस भऽ गेल।

छोट-छीन गाछ-बिरीछ तँ लछमीपुर गाममे गोटि-पङ्गरा बँचबो कएल मुदा दस बर्खसँ ऊपरबला आमक एकोटा गाछ नहि बाँचल। घरक चरचे की, पजेबाक घर तँ गाममे छले नहि, माइटिक भीतघर आ खुट्टा-खाम्हीक टटघर छल, धरतीक एहेन डोल एलै जे सभटा तहस-नहस भऽ जमीन फाटि गेल। माइटिक नीचला परतक बालूसँ गामक उपजाऊ भूमि झँपा गेल, माने उपजाऊ माइटिक ऊपरमे बालू पसैर गेल। पोखैर-इनारक भथन भऽ गेल। जे लछमीपुर कहियो लछमीपुर छल ओ एकाएक कालीपुरमे बदैल गेल। लोकक जीवन-यापन दुभर भऽ गेल। की खाएत, की पीत आ केतए रहत, सभकिछु बेठेकान भऽ गेल। जीब तँ तखने सकै छी जखन जीबैक साधन रहत। आजुक परिवेश छल नहि जे भारी-भारी

काज करैक मशीन बनि गेल अछि। ओना, जखन भारी काज करैक साधन बनियोँ गेल अछि तखनो देशक केते उपजाऊ भूमि बालूतरमे आकि नदी-नालाक सड़ैन-गड़ैनमे मारल अछि, सेहो तँ सबहक सोझमे अछिये। गामक आशा तोड़ि दुनू गोरे (हरदेव-सहदेव) कलकत्ता आएल छेलौं।

सहदेव बजला- “बहुत दिन भऽ गेल, तँए सभ बात मनो नहियेँ अछि, मुदा जे मोन अछि से कहै छी।”

सहदेवक विचार सुनि बीचमे बैसल एक गोरे बजला- “अनेरे पैछला दुखकेँ जड़ि खोदि जे दुख मोन पाड़ब तइसँ नीक ने जे जइ वर्तमानमे जीबै छी मात्र तेतबेसँ काज चलाएब।”

ओना, तार्किक लोक बनर्जीदादा छथिए तँए कोनो विचार कानमे अबिते तर्क-विर्तक करए लगै छैथ। मनमे उठि गेल छेलैन जे जँ पैछला बातकेँ बिसैर जाएब वा जानि कऽ छोड़ि देब तखन पूर्वक महत्व की रहल आ एते जतनसँ लोक पूर्वक इतिहासकेँ मथै किए छैथ। दिनेशक विचारकेँ खण्डित करैत बनर्जीदादा बजला-

“जखन सहदेव बाजए चाहै छैथ तखन हुनकर सब विचार सुनियौन।”

जखने बनर्जीदादा दिनेशक विचारमे ब्रेक लेलैन तखने दुरुस्त गाड़ी जकाँ दिनेशक विचार रूकि गेल। तैबीच सहदेव पुन: बाजब शुरू केलैन-

“गाममे बाल-विवाहक चलैन छल, तँए अपन बिआह बच्चेमे भऽ गेल रहए, मुदा दुरागमन नहि भेल छल। स्त्री[7] नैहरेमे छेली। लछमीपुर गामक अपेक्षा सासुरमे क्षतियो कम भेल छल।”

‘सासुर’ सुनि हरदेव बजला-

“भजार, दुनू संगीक विचार संगे-संग चलए दियौ।”

अपन विचारमे सुधार करैत सहदेव बजला- “दुनू भजारक रहैक गाम तँ एक्के छी मुदा सासुरक गाम लगे-लग रहला पछातियो दू गाम छी। आन चीजमे तँ दुनू गाम एक्केरंग अछि मुदा दू परगाना रहने जहिना खेत

---

[7] घरवाली

नपैक लग्गामे अन्तर अछि तहिना मलगुजारीमे सेहो कमी-बेसी अछिए।"

विचारमे सामंजस करैत बनर्जीदादा बजला-

"चारिये घन्टाक कार्यक्रम अछि, तँए समयकेँ धियानमे रखैत आगू बढ़ू। माता-पिता जीवित छेला?"

सहदेव बजला-

"हमर पिता मरि गेल छला आ भजारक माए मरि गेल छेलैन। ओना, हमर माए तेते काजुल छेली जे सदिकाल घर-अँगनाकेँ चमकौने रहै छेली। तहिना भजारक पिता एकबोलिया लोक छेलखिन, स्त्री मुइला पछाइत गामक लोक हुनका केतबो कहलकैन जे दोसर बिआह करि लिअ। मुदा ओ एक्केठाम अड़ि गेला जे सौंसे दुनियाँ एक भाग किए ने भऽ जाए मुदा हम अपन विचार नहि तोड़ब।"

सहदेवकेँ बहलाइत देखि बनर्जीदादा बजला-

"अहाँक दुरागमन कहिया भेल?"

'दुरागमन' सुनि सहदेव बजला-

"कलकत्ता एलापर जखन कमाए-खटाए लगलौं आ माएकेँ रुपैआ पठबए लगलिऐ तखन साल भरिक पछाइत हमर दुरागमन भेल।"

विचारकेँ समटैत बनर्जीदादा बजला-

"केते दिनसँ मटियाक काज करै छी?"

अपन निचोरल विचार व्यक्त करैत सहदेव बजला-

"जहिया कलकत्ता एलौं तहिया जे काज धेलौं से अखनो धेनहि छी।"

बनर्जीदादा बजला-

"जखन लोक कमाए-खटाए लगैए आ आमदनी होइ छै तखन काजोकेँ सुधारैत चलैए, माने भरिगर काजकेँ हल्लुक बनबैत चलैए। तैठाम अहाँ?"

सहदेव बजला- "जहिना शरीरमे काज पचि गेल तहिना कमाइयो जीवनमे पचि गेल। केतए जइतौं आ की करितौं। मनमे जे विचारने रही ओ

सभटा मनेमे मेटा गेल जइसँ दुनियाँ अन्हार जकाँ लागए लगल।"

'अन्हार जकाँ लगए लगल' कहि सहदेव चुप भऽ गेला। जेना मनक रूचि उखड़ल रंग जकाँ भऽ गेलैन तहिना मुँहक सुरखी सेहो मौलाएल गाछक फूल जकाँ ऐलसा लगलैन। ओना, अनुमानसँ बनर्जीदादा सहदेवक विचारमे बहुत किछु बुझलैन जरूर, मुदा समारोहमे बैसल अधिकतर लोक नहियेँ बुझलैन। बुझबो केना करितैथ? इनारमे रहैबला बेंग गतिशील नदी (धार) वा लहराइत लहरैत बात बुझियो केना सकै छल। जीवने ने सभ किछु सिखबैए। पढ़निहारकेँ किताबक ज्ञान, रणमे रणधीरकेँ रणक कला, गायककेँ गायन कला आ चोरकेँ चोरिक कला सिखैबते अछि। समारोहमे बैसल मटिया-मजदूरोक तँ जीवन इनारेक बेंग जकाँ बनल अछि, तखन ओ अपनाकेँ केना परिवर्तित करैत आगू बढ़ि सकैए। ओना, बनर्जीदादाक मनमे एहेन भाव प्रवल रूपमे जागिये गेल छेलैन जे जाबे मनुक्ख अपन प्रवाहित होइत जीवनधारकेँ समुचित ढंगसँ नहि बुझता ताबे अपन भूतसँ अबैत जीवनकेँ भविष्येक आशापर ने कियो अपन जीवन ठाढ़ करैत संकल्पित होइ छैथ। मुदा एहेन विचार मनुक्खमे तखन ने अबैए जखन हुनकामे अपन मनुक्खपनक विचार जगै छैन। से तँ जगैए जागल मनुक्खमे मुदा जे जीवन मृतप्राय बनि सुति रहल अछि। ओहन विचार तँ ओही सीमाक भीतर ने होइए, जेहेन बहैत धार धारा मरि बालुक बुर्जा बनि मरल-पड़ल रहैए। विचारकेँ आगू बढ़बैत बनर्जीदादा गम्भीर रूपमे सहदेवकेँ पुछलखिन- "परिवारमे के सभ छैथ?"

'परिवारमे के सभ छैथ' सुनि जहिना सहदेव तिलमिला गेला तहिना हरदेव सेहो मौलाए लगला। मुदा कुशेसरो आ कुशेसरे जकाँ तीन-चारि गोरेक मन चटपट करए लगलैन जे अपन परिवारक बात हम बाजी। मुदा से नहि, मौलाएल मने सहदेवे बजला-

"बनर्जी बौआ, एहेन दुख लोक छातीमे मुक्का मारि सहि लइए मुदा केकरो कहए नहि चाहैए। ओना, दस गोरेक बीच जखन अहाँ पुछलौं तखन ऐ बुढ़ाड़ीमे चुपो रहब नीक नहि बुझै छी।"

सहदेवक विचार सुनि बनर्जीदादाक मन मानि गेलैन जे सहदेवक जीवनक धारमे केतौ मोनि फुटने प्रवाह मरि गेल छैन, मुदा एकटा हमरे

बुझने मनक मोनि थोड़े भरतैन। तहूमे दुनियाँ अरबो-अरब ब्रह्माण्डक बनले अछि। तखन तँ भेल जे अपन जीवनमे संभलपन आनैत दोसरोक जीवनकेँ सम्हारैक परियास ओते जरूर करक चाही जेते अपन शक्ति अछि।

बनर्जीदादा बजला-

“चुप रहब कि नीक नहि बुझै छी। जखन कियो फाँसीपर मृत्युक करीब आबि जीवनदाता बनै छैथ, तखने ने हुनका मुहसँ स्वाति नक्षत्र जकाँ अमृतक वर्षा झहरै छैन।”

मने-मन बनर्जीदादा विचारि रहल छला, मुदा आगूमे बैसल सघन जीवन तँ सबहक ओहने अछि जेकरा बुझैक आ करैक खगता अछि।

सहदेव बजला-

“बनर्जी बौआ, अहाँक जन्म केतौ भेल अछि आ हमर जन्म सेहो केतौ भेल अछि। कहुना-कहुना जँ जन्मभूमिकेँ गज-मीटरसँ नापब तँ सइयो किलोमीटर दूरी बीचमे अछिए। मुदा जिनगीक अधिकतर हिस्सा तँ दुनू गोरेक संगे बीतबो कएल अछि आ बीतबो करत, तँए कहए चाहै छी।”

की कहए चाहै छैथ सहदेव, तइ सुनैले सभक कान ठाढ़ भेलैन। अनुकूल परिस्थिति देखि बनर्जीदादा बजला-

“ऐठाम सभ कियो भाइए-भैयारीक रूपमे छी, जँ कोनो अवाचो वाच बजा जाएत तँ ओकरा अवाच कहि छोड़ि देब, मुदा जे सुवाच अछि ओ तँ एक ने एक दिन जीवनमे काज एबे करत। तँए ओहन विचार निर्भय होइत बाजू।”

बनर्जीदादाक सह पेब सहदेव बजला-

“बनर्जी भाय, जेहने जीवनक भागक हिस्सा हमर अछि तेहने हरिदेव भजारक सेहो छैन। मुदा दुनूक दिशाक मुँह दू दिस अछि।”

बीचमे बैसल घनश्याम उठिकऽ ठाढ़ होइत सहदेवकेँ पुछलखिन-

“की दू दिस अछि, गुरुजी?”

सहदेव बजला- “बौआ, एकसंग मृतप्राय जीवन हमरा दुनू गोरेक

रहितो, कारण अपन-अपन अछि।"

नव विचार वा नव कथा-कहानी सुनने जहिना बाल-बोधक जिज्ञासा आरो उग्र होइत बढ़ैए तहिना नव-तूरक मटिया-मजदूरकेँ सेहो भेलैन। एक गोरे उठिकऽ ठाढ़ होइत बाजल-

"गुरुजी, जखन आइ काज छोड़ि गोदामक स्थापित-दिनक समारोह मना रहल छी, तइमे जे समय भेटल तेकरा तँ अपन जीवनानुकूल बनाएबे अछि किने?"

सिंहेसरक विचार सुनि जहिना बनर्जीदादाकेँ जीवनक सार्थक रस भेटने मन मीठेलैन तहिना नव-तूरक आगूमे अपन हारल जीवनकेँ बजैमे सहदेवक मन तितेबे केलैन। मुदा मनोक बेग तँ ओहन होइते अछि जे अछियापर पड़ल लहासो जखन जरौनिहारकेँ खिहारए लगैए तखन सहदेव तँ सहजे अखनो पीठपर क्वीन्टलिया बोरा उठैबते छैथ। गुनधुनमे सहदेवकेँ पड़ल देखि बनर्जीदादा खोरनी चलबैत बजला-

"चुपा-चुपीमे समय नष्ट नहि करू। दू-अढ़ाइ घन्टा बीत गेल। मात्र एक-सबा घन्टा समय बँचल अछि।"

सहदेवक मनमे अपन परिवारक माने बेटा-पुतोहुक संग अपन सम्बन्ध धीरे-धीरे मटियामेट हुअ लागल छेलैन मुदा अपन शेष जिनगीक दिनक विचार प्रवल हुअ लगलैन। बजला-

"समारोहमे जे छी, माने गोदामसँ जुड़ल जे छी, सभकेँ हम अपन परिवार बुझै छी। तँए बजैमे कोनो संकोच नहि। पहिने अपन परिवारक आ हरदेवक विषयमे कहब।"

सहदेवक विचारमे बनर्जीदादाकेँ गम्भीरपन बुझि पड़लैन तँए अपनाकेँ सोल्होअना साकांच करैत एकाग्र होइत बजला-

"भाय साहैब, ने कोनो बात बजैसँ लजाउ, ने केकरोसँ डराउ आ ने समूहकेँ आगूमे बैसलसँ धखाउ। जीवन छी, अपन जीवनक बात किए ने बाजब। आ जँ से नहि बाजब तँ दुनियाँ देखत केना आ सुनत केना।"

एक तँ अहिना सहदेवक मनमे नव परिवारक सम्बन्ध-सूत्र बनने खुशी उपकले छेलैन, तैपर बनर्जीदादाक भर सेहो सहयोग केलकैन।

निरमोही होइत सहदेव बजला- "बहुत आशा बेटा-पुतोहुपर छल। मनमे सोल्होअना बनल रहए जे अखन जहिना बेटाक सेवा कऽ रहल छी तहिना बुढ़ाड़ीमे अपनो हएत। मुदा सभ पानिमे चलि गेल। सात-आठ बर्ख पत्नीकेँ मुइना सेहो भऽ गेलैन। असगरे गामसँ बाजार धरि पड़ल छी। कियो सुधि-बुधि लेनिहार दुनियाँमे नहि अछि।"

विचारकेँ साफ करैक खियालसँ बनर्जीदादा बजला-

"की आशा बेटा-पुतोहुपर छल आ की भेल?"

सहदेव बजला-

"दुनू छोड़िकऽ बम्बै शहर पकैड़ लेलक। जहिना हमरा जीवित रहैत छोड़ने अछि तहिना हरदेव भजारकेँ, पत्नी तँ जीवित छैन मुदा नि:सन्तान रहने कियो देखनिहार नै छैन।"

समारोह समाप्त भेल। सभ कियो चलि गेला। बनर्जीदादा, देवन आ कुशेसर रहि गेला। बनर्जीदादा दुनू गोरेकेँ माने देवनो आ कुशेसरोकेँ सम्मिलित रूपमे पुछलैन-

"एक तरहक काज करितो एक-दोसरक जीवनमे जे दूरी बनल अछि, तेकरा एकरसमे केना पाटल जाएत?"

वैचारिक चटसारपर बैसनिहार कुशेसर तँ छला नहि आ देवन तँ सहजे तीनियेँ मासक अनुभवी छैथ। कुशेसरक अपन समय तेना अपन जिनगीमे बन्हा गेल छैन जे अपन सुख-दुख छोड़ि दुनियाँमे दोसर किछु देखि नहि पबै छला, जइसँ आनो जीवनक जान-पहचान होइतैन। मुदा समारोहमे सुनल किछु विचार तँ मनकेँ मथिये रहल छेलैन। अपन विचारक इमान-धर्म बँचबैत कुशेसर बजला-

"दादा, एक दिनक भोजे की आ एक दिनक राजे की। जीवन तँ जीवन छी ओकरा जइ रूपेँ गहिकऽ गहियबैत, महियबैत रहब तेहने ने बनत। मुदा से तँ गहियबै-महियबैकेँ बुझैयोक अवसर ने भेट रहल अछि। बनर्जीदादा, अपने सभ तरहेँ विचारवानो छी आ क्रियमानो तँ छीहे। जड़िक बात कने..?"

कुशेसरक जिज्ञासा देखि बनर्जीदादा बजला- "ओना, बेकता-

बेकती जीवन अपन-अपन अछि, मुदा अखन से नहि, अखन एतबे जे मोटा-मोटी तीन रंगक विचार मटिया सबहक बीच छैन। पहिल जे पुरान पीढ़ीक छैथ, दुनियाँक सभ किछु हारि, शक्ति नहि रहितो, देहक शक्तिकेँ जीबैले जानकेँ दाँवपर लगा काज कऽ रहला अछि। दोसर ओहन छैथ जे परिवारक बीच तेना ओझरा कऽ बोहिया गेल छैथ जे दुनियाँकेँ देखिये ने पेब रहला अछि आ तेसर ओ छैथ जे अपना संग अपन परिवारोकेँ सुधार करैत भविस दिस डेग उठा रहल छैथ। मुदा तइ बुझै आ करैले अनवरतता चाही। आगूओ विचार-विमर्श होइत रहत। अबेर भऽ गेल। जाइ जाउ।"



शब्द तिथि: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

छठम पड़ाव

बारह बर्खक पछाइत, तैबीच देवनक मातो-पिता मरि गेलखिन आ पत्नी, दू बच्चाक संग नव परिवारो बनि चुकल छेलैन। बारह बर्खक बीचक जे सम्बन्ध देवन आ बनर्जीदादाक बीच रहलैन ओ दिन-रातिक बीचक सम्बन्ध जहिना होइए तहिना रहलैन। देवन गोदामक मटिया रहितो, विचारो आ बेवहारोसँ सोल्होअना नव मनुक्खक रूपमे ठाढ़ हुअ चाहै छला, मुदा जीवनक जे मूल खगता अछि, जेकरा पुरबैमे दुनियाँ बेहाल अछि, देवनोक संग तँ छेलैन्हे।

ओना, बनर्जीदादाक अपन जीवन छेलैन, नियमित बेतन छेलैन। तैबीच अपनाकेँ बान्हि-राखि चलै छैथ, मुदा देवनक तँ से नहि छल। कलकत्ता एला पछाइत देवन चारि-पाँच बर्ख तक बनर्जीदादाक विचारकेँ सुनैत रहला मुदा अपन विचारैक जगह अन्ध रहने देखा नहि पड़लैन। मुदा पाँच बर्खक पछाइत बनर्जीदादाक मुँहक सुनल बातकेँ मने-मन देवन खोद-बेद करैत-करैत नव-नव विचारो आ काजो देखए लगला। जइसँ अपन जिनगीक गतिक सभ अनुभव हुअ लगलैन।

आब वैचारिक दौड़मे देवन बुझि गेला जे गामक जीवन बिनु पाइयो-कौड़ीक चलैए, मुदा शहर-बजारक जीवन तेना नहि चलि सकैए। शहर-बाजारमे एक दिन बिताएब माने बिना पाइ-कौड़ीक, जीवनक दुर्ग बनियेँ जाइए। तँए परिवारकेँ गाममे राखब जीवनानुकूल अछि। धीरे-धीरे देवनक विचारमे ओ शक्ति जागि चुकलैन जे अपन जीवनक भविसकेँ हियासि सकै छैथ। जखने भविसकेँ हियासैक शक्ति विचारमे आबए लगैए तखने ने मनुक्ख अपन मनुष्यत्वक सीमा निर्धारित करए लगैए। जीवनक मूल पाँच तत्त्व- भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य आ शिक्षा एक-एक मनुक्खक जीवनक आधार छीहे। ओना, अहू पाँचो तत्त्वमे सभ समाने नहि अछि। एक-दोसरसँ कम-बेसी अछिए। जइसँ जइ तरहक जीवन रहल ओइ

अनुकूल अपन जीवन निर्धारित कइये लइए, मुदा ओ जीवन मानवीय जीवन नहि रहि पशुवत जीवन बनले रहि जाइए। पशुवतो जीवन केना ने बनल रहत? जहिना पशुकेँ खाइ-के, रहै-के आ बीमारीक भय बनल रहैए तहिना ओकरो रहबे करैए। भलेँ ओ बुझह वा नहि बुझह। मुदा मनुक्ख तँ से नहि छिया। बुझैक शक्ति रहने भोजनो आ वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य आ शिक्षाक महत सेहो बुझिते छैथ। देवनो जीवनक मूल तत्त्वकेँ सदिकाल मनमे रोपि विचार करबे करै छैथ जे अपन समाज-परिवारक बीच एकाकी जीवन बनले अछि, ओकरा सम-गम बनाएब तँ अपना संग परिवारे लोकक ने काज भेलैन।

एक-एक तत्त्व, जीवनक पाँचो मूल तत्त्व, ओना ऐ पाँचोक अतिरिक्तो अनेक तत्त्व अछि, मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे जइ परिवारक जीवन देवन गूदस कऽ रहला अछि ओ धारक बहैत धाराक नाहपर चढ़ल मल्लाह जकाँ कोन रूपेँ सम्हारि रहला अछि..। सभकेँ अपन-अपन जीवनयात्रा करैक छैन्हे। अपन कमाइकेँ माने अपन मजदूरीकेँ प्रति दिनक आवश्यकताक पूर्तिक हिसाब जोड़ने देवनकेँ स्पष्ट देखि पड़ैन जे जीवनक पहिल आवश्यकता, माने भोजन, जे अछि तेकरो समुचित ढंगसँ पूर्ति नहि कऽ सकै छी। माने भेल जे एहनो जीवन अछि जे भोजनक मूल तत्त्वकेँ नहि पेब जीबैले, माने प्राणक रक्षा-ले, जे भेटल तहीसँ जीवन निर्वाह सेहो कइये रहल छैथ। ओना ऐ बीच एकटा बात आरो अछि जे ओहन जीवन जीनिहारो ओहने छैथ जे भोजनक गुण-अवगुणकेँ बुझबो नहियेँ करै छैथ। मुदा जेना-जेना समय आगू बढ़ैए तेना-तेना विचारमे परिवर्तन नइ अबैए सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए। मुदा जे जेतए अछि से तेतए रहऽ तइसँ देवनकेँ कोन मतलब छैन। मतलबो किए रखता। दुनियाँक बनाबटो अजीव अछिए। जे जेतेक रक्षक अछि से तेतबे ने भक्षक सेहो अछिए, तही बीचमे ने देवनो रहै छैथ...।

देवन अपन प्रतिदिनक आमदनीक हिसाब प्रतिदिनक भोजनकेँ मिलौलैन तँ बुझि पड़लैन जे समुचित भोजन करै-जोकर अखन नहि भेलौं हेन। मनमे उठलैन, चारि गोरेक परिवार अछि आ सन्तुलित भोजनक जे मूल्य अछि तेते कहाँ कमा रहल छी? मुदा जीवनो गूदस तँ अही झुलैत

आमदनीमे करबाक अछि आ समयसँ चलबाको तँ अछिए।

सामंजस करैत देवन शहर-बाजार आ गाम-देहातकेँ समतुल्य करैत मजगूतीसँ विचारि लेला जे परिवारकेँ गामेमे राखब कल्याणकारी हएत। अखन तकक जे अपन जीवन रहल, तइमे अपन बिआह-दानक संग परिवारमे दूटा मजगूत खपड़ैल घर बनेलौं। ऐठाम घर चुबैए आकि खिड़कीसँ पानि-बिहाड़िक झटका मारैए से नहि बुझब। ऐठाम अखन ओहिना बुझू जे जहिना ईंटा-सीमेन्टक घर बनबैकाल एकटा समय निर्धारित करै छी। तहिना..। तखन माइटिक देवाल आ खपड़ाक छाड़बला घरक माने भेल पचास बर्ख ठाढ़ रहैबला घर। तेहेन घरो बनेलौं। तइ संग सभसँ पैघ काज ई केलौं जे जहियासँ कमाए लगलौं तहियासँ माता-पिताकेँ कहियो किछु खलए नहि देलिऐन जे आँखिसँ नोर खसितैन। मुइला पछातियो क्रिया-कर्म सेहो ओहन कइये देलिऐन जे सइयो मुँह जश देबे केलैन।

देवन जहिना परिवारक संग सामंजस कऽ जीवन बनौलैन तहिना पचास बर्खक औरुदाक दूटा घर सेहो आँखिक सोझमे देखिये रहल छला जइसँ जीवनक प्रति मनमे तृप्ति सेहो उपकले छेलैन। वस्त्रक ओहन समस्याकेँ समस्या नहियेँ बुझै छैथ, किए तँ आइ भलेँ लोक अपन वस्त्रकेँ बेहिसाब किए ने बना लिअए मुदा देवनक परिवारक तँ अपन वएह जीवन रहलैन जे साल भरिपर जहिना धोती तहिना परिवारमे साड़ी बदलै छैथ। सालमे एक बेर गाम जाइकाल कलकत्तेमे सभ वस्त्र कीनि कऽ लऽ जाइ छैथ आ साल भरि निचेन रहै छैथ। दवाइ-दारू तँ अन्हा-गाहींस अछिए। जरूरत भइयो सकैए आ नहियोँ भऽ सकैए।

अपन जीवनक हिसाब देखि जखन देवन गामक समाजकेँ हियासिकऽ देखला तँ बुझि पड़लैन जे बहुत नीक नहि तँ बहुत अधलो नहियेँ छी। जँ मजदूरो बनि जीबै छी तँ अपन बाँहिक बले ने जीबै छी।

अपन बाँहिक बलक तुष्टिसँ देवनक मनमे सन्तुष्टि जगलैन। देवनक मनमे सन्तुष्टि अबिते बजर्नीदादाक पाँच साल पूर्वक विचार धक-दे मोन पड़लैन। मोन पड़िते मन बिहुँसि गेलैन। बिहुसैक कारण भेलैन अपना सोझामे बेटाकेँ माने कामेसरकेँ धुरझाड़ किताब पढ़ैत देखि रहल छैथ।

आइसँ पाँच बर्ख पूर्व बनर्जीदादा देवनक जीवनकेँ देखि फूलक माला जकाँ गँथैत कहने छेलैन-

"देवन, परिवार गामेमे रहए दियौ। किए तँ मिथिलाक गाम छी। आएब-जाएबक अपनो सम्बन्ध बनल रहत मुदा पैछला पीढ़ीमे जे भेल से भेल, नीक भेल सेहो बढ़ियाँ आ अधला भेल सेहो बढ़ियाँ। किए तँ ओ भूत बनि भूतियाएल। मुदा ऐगला पीढ़ीपर नीक जकाँ धियान राखू।"

बजैक क्रममे बनर्जीदादा बाजि गेला मुदा पछाइत मोन पड़लैन जे जीवनक तँ बनर-बाँट करैबला सेहो अछिए। कखनो ऐ रोटीकेँ हबक मारि झूस बना दइए तँ कखनो ओइ रोटीकेँ, आ खाइत-खाइत सभटा वएह खा जाइए।

बनर्जीदादाक ओ विचार देवनक हृदयकेँ चुहैट कऽ पकैड़ लेलकैन। अपनो पाँच बर्खसँ परिवारक सिराकेँ नव सिरासँ विचारए लगला। बिनु बजने देवन बनर्जीदादाक सोझामे मने-मन संकल्प केलैन, माने मनमे रोपलैन जे बेटाकेँ कलकत्ते आनि पढ़ा कऽ एकटा पढ़ल-लिखल मनुक्ख बना परिवारमे ठाढ़ करब। जइ बच्चाक माए मरि जाइए कि पिता ओकरा केतौ-के फेक अबै छैथ आकि अपन पितृक दायित्वकेँ पुत्रवत निर्वहन करै छैथ। हमहूँ अपन दायित्वकेँ ओहिना बुझि ताधैर निमाहब जाधैर बेटाकेँ नव रूपमे युगानुकूल मनुक्ख नहि बना लेब। यएह ने भेल परिवारकेँ समयक संग जोड़ब। एक-एक मनुक्ख अपन चीतानुकूल घटैत-बढ़ैत रहला अछि। प्राकृतिक शक्ति एते प्रवल अछिए जे जीवन भरिक कमाईकेँ क्षणमे क्षणाक कऽ दइए। घर-परिवारक सेवामे अपन जिनगी खपबै छी, मुदा क्षणमे बाढ़ि, क्षणमे भुमकम आबि ओकरा तोड़िकऽ नष्ट कऽ दइए, तँए आगूक पीढ़ीक जीवन केहेन आ केना बनत?

अपन वौआइत विचारकेँ जहिना कृष्ण रथक सातो घोड़ाक छोर एक्केबेर खिंच, अपन जीवन लग आनि ठाढ़ केलैन तहिना देवनो अपन मनकेँ केलाह। देवन अपना आगूमे देखि रहल छला जे पढ़ै-लिखैक रंग-रंगक जे संस्थान सभ अछि तइमे हमरो सन लोकक बेटा तँ विद्यालयमे पढ़िते अछि, तखन हम अपना बेटाकेँ इंजीनियरिंग कौलेजमे किए ने दाखिला दिया सकै छी। सभ बेवस्था विद्यालय केनहि अछि। यएह ने जे

खर्च हएत। ओना, खरचो तँ सभ रंगक अछिए। कोनो विद्यालयमे बेसी खर्च अछि आ कोनोमे माने साधारण विद्यालयमे कम खर्च अछि। भलेँ बाढ़िक पलाड़िक पानियेँ जकाँ जड़िपनियेँ किए ने हुअए मुदा भेल तँ बाढ़ियेक पानि।

जइ दिन बनर्जीदादाक विचारसँ देवन प्रभावित भेल रहैथ, तइ दिन कामेसरक उम्र कम रहने काजमे बाधा देखिये रहल छला मुदा गीध दृष्टि तँ अपन बेटाक विषयमे रहबे करैन। तीन साल पूर्व धरि जे मनमे अँटकल छेलैन ओ पूर्ति केलैन। संयोग बनल, संजोग कि बनल जे समय पुरला पछाइत कामेसरकेँ कलकत्ता आनि देवन विचार केलाह जे जहिना यशोदा मैया कृष्णकेँ भोर-साँझ बेटा बुझि भेँट करै छेली, तहिना भोर-साँझ अपनो जा कऽ सभ दिन सभ बातक हिसाब सेहो बुझैत रहब। पुछबै जे बौआ आइ की सभ पढ़लेँ। एतबे नहि जे बौआ पासबुक ठीक छौ किने। दिन-दिनेक काजक रूप ने जिनगीकेँ ठाढ़ करैत चलैए।

आइ तीन साल कामेसरकेँ पूरि रहल अछि। अपन ओकातिक अनुकूल, माने भेल अपन शक्तिक अनुकूल, कामेसरकेँ देखि देवनक मनमे एतेक खुशी उपैक गेलैन जे बेटाकेँ कलकत्ता अबैक तेसर साल-गीरहपर भोज करैक विचार भेलैन। भोज कि जे विद्यालयक सभ शिक्षक भेला आ गोदामक सभ श्रमिक। ओना, जवाबदेहीक पदपर रहितो अपनाकेँ बनर्जीदादा श्रमिके मानै छैथ। देवन बनर्जी दादाकेँ कहलखिन-

"दादा, कामेसरकेँ कलकत्ताक माटि-पानि धाइर गेल। बेटाकेँ देखि मन तिरपीत अछि तँए समारोहपूर्वक भोज करब।"

देवनक मनक उद्गार देखि बनर्जीदादाक अपनो मन उद्गरित भऽ गेलैन। किए तँ जेहने दाता तेहने भोक्ता अपनाकेँ देखि बनर्जीदादा बजला- "जेते टाका खर्च करबह तही अनुकूल ने सभ किछु करब।"

मने-मन बनर्जीदादा विचारए लगला जे कामेसरकेँ ऐठाम तक एबामे माने आइ धरि जे भेल तइमे अपनो विचारक निर्वहन तँ भेबे कएल अछि, तँए खर्चक आधा सहयोग कऽ देब, जइसँ मनक उद्गार सेहो दोबर भइये जाएत।

समारोह नीक भेल। कामेसर सेहो दोसर विद्यालयमे पहुँच गेल। कामेसरक पढ़ैक जतन देखि जहिना शिक्षक तहिना देवन अपनो छथिए।

समय बीतैत गेल। कामेसर सेहो एक इंजीनियर युवकक रूपमे तैयार भऽ गेल। कामेसरक संग हजारो इंजीनियर कलकत्तामे तैयार भऽ गेला। सभकेँ नोकरी चाहिऐन, सरकारक संग नोकरीक समस्या उठल। अन्तमे समझौता भेल जे प्रत्येक इंजीनियरकेँ दू-दूटा ट्रेक्टर अनुदानक संग बैंकक माध्यमसँ देल जाएत।

आइ कामेसर ओइ सीमापर आबि ठाढ़ भेल अछि जेतए एक दिस छह मास पूर्व पिताक मृत्यु भेल छेलैन तँ दोसर दिस अपन बिआह मास दिन पूर्व भेलैन, माइक मृत्यु दू साल पहिनहि भऽ गेलैन।

बनर्जीदादाक सम्पर्कमे रहने कामेसर अपन उजरल-उपटल गाम-समाज दिस झुकि चुकल छल, जइसँ मनमे आस्ते-आस्ते रोपा रहल छेलै जे अखन तक कलकत्ता सन शहरमे, इंजीनियरिंग कौलेजक विद्यार्थीक रूपमे जे मान-प्रतिष्ठा रहल ओ गाममे थोड़े हएत। एक तँ इंजीनियरक काज नहि रहने गामक लोक इंजीनियरकेँ नीक जकाँ जानि नहि रहल अछि, तैपर हम तँ सहजे गाम-समाजसँ सभ दिन हटल रहलौं। अखन तक जे गाम जेबो-एबो करै छेलौं तँ बस पाहुन-परक जकाँ अपना घर-अँगनामे बैसल रहै छेलौं आ समय बीतलापर उठि कऽ विदा भऽ कलकत्ता आबि जाइ छेलौं..!

महाभारतक कौरब-पाण्डवक लड़ाइ जकाँ कामेसरक मनमे गाम-शहरक बीचक दूरीक द्वन्द्व उठि चुकल छल। मुदा मनक दृढ़ता गामक प्रति कामेसरकेँ एते जागि चुकल छेलै जे नइ जाइक सभ बाधाकेँ जहिना पोड़ो-सागक लत्तीकेँ हँसुआ खड़ैर कऽ काटि दइए तहिना विचारक हँसुआ खड़ैर कऽ काटि देलक। एकाएक कामेसरक मनमे विचारक नव उत्साह जागल जे जहिना पिताजी गामसँ पड़ाकऽ माने जीवन नइ चलने, कलकत्ता एला तहिना हमहूँ कलकत्तासँ इंजीनियर बनि गाम जा रहब। मुदा हमरो तँ बुझए पड़त जे जैठाम अपन जीवनकेँ स्थापित करए चाहै छी तैठाम अनुकूल परिवेश केना बनत?

अनेको प्रश्नक संग अनेको उत्तर कामेसरक विचारकेँ घेरनहि छल।

तैपर पत्नी–सुभद्रा–बजारोन्मुखी छथिन। रहबो किए ने करती। सुभद्रा जिलास्तरक ऑफिसरक परिवारक पलित-पोसित छैथ। ओना, मनक संकल्पो तँ ओहन बन्धन छीहे जे अनका तोड़ने नहि, अपनेटा तोड़ने टुटैए। तहूमे विद्यालयसँ निकलल टटका नवयुवकक संकल्प।

कलकत्ताक अन्तिम विदाइक भेँटक रूपमे कामेसर बनर्जीदादासँ असिरवाद लिअ हुनका ऐठाम पहुँचल।

सात साल पहिने बनर्जीदादा सरकारी सेवासँ निवृत्त भऽ गेल छला। समयक अनुकूलता पेब माने वेतनक बढ़ोत्तरी भेने बनर्जीदादा अखनो पेंशनक रूपमे ओते रुपैआ मासे-मास उठैबते छैथ जेते शुरूमे सेवारत् वेतन उठबै छला। मुदा महगाइ बढ़ने, किछु कम तँ भेबे केलैन। ओना, जखन वेतनभोगी जीवन छेलैन तखन परिवारक भारो बेसी छेलैन जेकरा निमाहब अनिवार्य रहैन, से आब नहि रहलैन। तहूमे दुनू बेटा तेना कमाइ छैन जे मुँहमंगा पाइ दइले तैयार रहै छैन मुदा अपनहि पेंशन ओते भेटि जाइ छैन जे बेटाक मदैतिक खगते ने छैन। तँए सदिकाल खुशी-खुशी कहैत रहै छथिन जे बौआ, अपन कमाइसँ अपन जीवन गढ़ू।

आजुक परिवेशमे खगता नहि छैन, कने कठाइन सन प्रश्न अछिए। आजुक तेहेन आर्थिक परिवेश बनि गेल अछि जे सभकेँ माने धनीक-गरीब सभकेँ, पाइक खगता सदिकाल रहिते अछि, किए तँ जिनगीक फालतू आवश्यकता तेते बढ़ि गेल अछि जे अनेरो लोक श्रमकेँ हीन बना भोगकेँ अपना रहल छैथ। मुदा से बनर्जीदादाकेँ नहि छैन। शुरूहेसँ जीवनक गठन तेना गढ़ि लेने छैथ जे जनेउ जकाँ गठिया गेल छैन, तँए साँझ-भोर गायित्री जाप करैमे सरपट दौड़ चलै छैन।

बनर्जीदादाक ऐठाम कामेसर पहुँचला तँ पता लगलैन जे अपने दस बजे दिनसँ वौड़ाएल छैथ, केतए छैथ तेकर कोनो ठेकान नहि। बान्हल जिनगीक ने निर्धारित जीवनो होइए आ जगहो निर्धारित रहैए, मुदा खुलल-खिलल जीवनक आड़ि-धुर अछि नहि। ओना, कामेसरक मनमे उठि चुकल छल जे जखन काल्हि कलकत्ता छोड़ि जाएब अछि तखन दोहरा कऽ अबैक आशा करब नीक नहि। एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे विदाइक तैयारीमे बिसैर जाइ। तैबीच बनर्जीदादाक पत्नी सुनलैन जे एक

गोटा भेँट करए आएल छैन। सुनिते सुवोधनी कोठरीसँ निकैल कामेसर लग आबि बजली-

"चलू, दरबज्जापर बैसू। जे घड़ी जे पहर ने अपने पहुँचला अछि।"

निर्भीक भऽ कऽ सुवोधनी बाजल छेली, किए तँ मन गवाही दइये देने छेलैन जे निश्चितकेँ ने समय होइए मुदा अनिश्चितकेँ समय की हएत। कहलो जाइ छै, 'उढ़ड़ाकेँ गामक ठेकान!' अखनो आबि सकै छैथ आ दू घन्टाक पछातियो आबि सकै छैथ। हम अनुमानसँ बजलौं अछि आकि हुनकर माने पतिक, काज सम्हारैत बजलौं अछि। ओना अपना मिथिलांचल आ बंगालक महिलाक बीच दूरी अछिए। कारण अनेको अछि, शहर-देहातक हुअए कि साक्षर-निरक्षरक दूरी, कि सम्पन्न-विपन्नक दूरी हुअए आकि जीवनक मर्मक संघर्षमय जीवन हुअए। मुदा से अखन नहि।

कामेसरकेँ दरबज्जापर बैसते सुवोधनीक पोती, चाहो आ पानियोँ नेने पहुँचली। तैबीच बनर्जीदादा सेहो पहुँचला। दिन भरिक थाकल, तँए मनमे रहैन जे पहिने नहाएब, पछाइत जे हएत से हएत।

बनर्जीदादाकेँ देखिते कामेसर बाजल-

"दादा, काल्हि कलकत्ता छोड़ि गाम चलि जाएब। जहिना पिताजी जीबैले कलकत्ताक बाट पकड़लैन तहिना हमहूँ गामक बाट पकैड़ गाम चलि जाएब। जीबैक रास्ता भेट गेल, दुनियाँमे केतौ स्वतंत्र रूपमे जीब सकै छी।"

एकसंग कामेसरक विचारमे बनर्जीदादाकेँ सभ किछु भेट गेलैन। सभसँ पैघ विचार 'स्वतंत्र जीवन पएब' छेलैन। बनर्जीदादा एक्के शब्दमे बजला- "अहाँ संग हमर शुभकामना अछि, कामेसर..!"



शब्द तिथि: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

सातम पड़ाव

गामेक माने पलारपुरेक दूटा ड्राइवरकेँ कामेसर पकैड़ लेलैन। अपन पिताक अमलदारी तकक जे धरोहर–चीज-वौस–छेलैन सभकेँ समेटि आ ट्रेक्टरक डालो आ फाड़ो लऽ कामेसर कलकत्ताकेँ ओहिना विदाइ केलैन जहिना यात्रीजी मिथिलाक केने छला। निमहनु नइ निमहनु ई दीगर भेल।

दोसर दिन कामेसर पलारपुर पहुँच गेला। अखन तक पलारपुरमे गामक कियो ने ट्रेक्टरे कीनने छला आ ने इंजीनियरिंगक शिक्षे पौने छला। सभ तरहेँ कामेसर अपनाकेँ नबे-नब बुझि रहल छला मुदा एते तँ मनमे बिसवास बनले छैन जे अही गामक धरतीपर जन्मो भेल अछि आ पाँच बर्ख धरिक जीवनो तँ बीतबे कएल अछि।

ओना, गामक परिवेशमे माने मिथिलांचलक गामक परिवेशमे ट्रेक्टरक उपयोग हुअ लगल छल। खेतो जोतब आ माटियो उघबबला काज चलिये रहल अछि। उत्साहसँ भरल कामेसर आन-आन ट्रेक्टरबलासँ सेहो भेँट करैक आ जे सभ ट्रेक्टरसँ काज करौने छला तिनको सभसँ अनुभव प्राप्त करैक विचार केलैन। विचारक दौड़मे कामेसर अन्तर्द्वन्द्वमे फँसि गेला। फँसि ई गेला जे बिना बजौने केतौ जाएब उचित नहि। तँए किनको ऐठाम जाइसँ मन मनाही करैन जे उपकैर कऽ किनको ऐठाम जाएब उचित नहि। कहलो जाइए जे बिनु बजौने कोहवर गेलौं आ कनियाँक माए पुछलैन केतए एलौं.? मुदा ई विचार कामेसरक मनमे उठिये ने रहल छेलैन जे बिनु काजे केतौ जाएब जरूर, उपकैर कऽ जाएब भेल, मुदा काजसँ जँ केतौ जाइ छी तँ ओ काजे जाएब भेल।

गामेक दुनू ड्राइवर, कामेसर ऐठाम गाड़ी लगा दुनू गोरे अपना-अपना ऐठाम चलि गेला। असगरे दरबज्जापर बैसल-बैसल कामेसर विचारक ओहन बोनमे फँसि गेला जहिना बेंतक बोनमे लोक फँसैए। एक तँ लतियाह गाछ बेंतक, तैपर कँटाह सेहो होइते अछि। तँए कहब जे लोक

बेंत केतौ आन बोनसँ आनै छैथ, सेहो बात नहियेँ अछि। ओही बोनसँ माने बेंतक बोनसँ ने बेंत आनि पथियो-छिट्टा बनबैए, कुर्सियो-टेबुल सेहो बनबैए आ सिपाही हाथक लाठियो तँ बनैबते अछि। कहैले तँ लत्तियेक मारि थानामे मारल जाइए माने बेंतक, मुदा लत्तीक लाठी केहेन होइ छै ओ तँ थानामे भेटैए। तँए कहब जे बेंतक बोन जँ अहाँ जेबे ने करब तखन बेंतसँ भेँट केना हएत। बेसी बात कथीले, अखन एतबे बुझू जे बेंते-बातसँ जीवन ठाढ़ो अछि आ बेंते-बातपर जीवन चलितो अछि।

चारि घन्टाक पछाइत दुनू ड्राइवर–रघुवीर आ मुनेसर–पुन: कामेसर ऐठाम पहुँचल। पहुँचब उचितो अछिए, किए तँ नोकरीक विचारपर ने दुनू गोरे गाम आएल अछि।

जीवनक सभ किछु कामेसरकेँ नबे-नब आ पहिले-पहिल बुझि पड़ि रहल छेलैन। अपन जे पाँचो दियादी परिवार छैन ओ सभ घराड़ी दुआरे बाधमे बसल छैथ। लगले कामेसरक मनमे ईहो उठि जाइन जे जहिना जीवनक बीस बर्खक साधनासँ इंजीनियर बनि समाजमे (गाममे) एलौं अछि तहिना गाम केते तपस्यासँ तेज गतिक इंजीन जकाँ दौड़ैत चलत सेहो तँ देखब अछि।

कामेसरक गाड़ीक प्रचार सौंसे गाम भऽ गेल। दूटा ट्रेक्टर गाममे आएल ऐसँ ओहन लोकक, जिनक काज पाइक अभावमे पछुआएल रहैन, मनमे विसवासू आशा जगबे केलैन जे समाज अखनो जीवित अछि किए तँ एक-दोसरक बीच पैंच-पालट चलि रहल अछि। काज हेबे करत।

कामेसरक मनमे ने ततमती छैन जे बिनु बजोने किनको ऐठाम केना जाएब। मुदा समाजमे तँ से नहि अछि, सामाजिक रूपमे सभक दरबज्जाकेँ अपन दरबज्जा मानि अपन जीवनक क्रिया-कलापक विचार-विमर्श करिते छैथ। पाँच-सात आदमी कामेसर ऐठाम पहुँच चुकल छल। ओना, बंगालीक समाजसँ कामेसर आएल छला तँए अपन शिष्टाचार निमाहैक कोशिशमे छेलाहे मुदा अबेवस्थित जीवन जाधैर सुबेवस्थित नहि बनि जाइए ताधैर अबेवस्थित विचार आ शिष्टाचार सुबेवस्थित विचार आ शिष्टाचार केना निमाहि सकैए। जाधैर विचारे बेवस्थित नहि हएत ताधैर शिष्टाचारक पालन करब तँ दूर भेल, जे निरमानो नहि कऽ सकै छी।

रघुवीर बजला- “कामे भाय, जहिना गाममे एक बनि पूर्वज संग रहि जीवन निमाहलैन, आ अपनो सभ जेना कलकत्तामे बनौने रहलौं, से गाममे केना बनि चलत, तइले तँ तीनू गोरेकेँ एक विचारमे आबि चलाबए पड़त किने। जइसँ सबहक नीक हएत।”

रघुवीर ड्राइवरकेँ अपन ड्राइवरीक अनुभव रहैन, मुदा कामेसरकेँ तँ से नहि छैन, मुदा कामेसरोक मनमे एते तँ बनले छैन जे जहिना गोदामसँ गाड़ी निकालि रघुवीर गाम तक संग आएल अछि तेकरे संग ने अपनो चलब अछि। होशियार बनि कामेसर रघुवीरकेँ कहलैन- “जहिना अपना सभ, तीनू गोरे एक उमेरिया छी आ गाममे एकटा नव जुगक शुरूआत करए माने नव काज करए कलकत्तासँ एलौं अछि, तहिना तीनू गोरेक जीवन संगे-संग चलैत रहए, यएह ने तीनू गोरेकेँ निमाहबाक सेहो अछि।”

नोकर चालक आ मालिक चलबाह, तइ बीच तँ सम्बन्ध सूत्र बनबए पड़त। तँए फूलक माला जकाँ रघुवीर आ मुनेसर अपन-अपन जगह देखबैत, जहिना सम्बन्ध रधुवीरकेँ कलकत्तामे ड्राइवरक रूपमे छल ओही सूत्रकेँ लागू करैत, अपन विचार रखलक। एक माटि-पानिपर रहनिहार तीनू गोरे, विचार-विमर्श होइते एक सूत्र स्थापित कऽ लेलैन।

विचारकेँ निचोरि कामेसर बजला- “कारोबार छी, भूल-चूक हेबे करत मुदा हम सभ प्रमुख सूत्र एकरा मानि आगू बढ़ी जे कारोबारमे झूठ-फूस नहि बाजी। सही बातो आ सही लेनो-देनक कोनो-ने-कोनो रास्ता अपनामे विचार करि निमाहैत चलब।”

कामेसरक विचार रघुवीरो आ मुनेसरोकेँ जँचल। जँचिते सबहक मन मानि गेलैन जे जँ तीनू गोरेक बीच सही काजो आ सही विचारो बनल रहत तँ जीवनमे केतौ विवादक जगह नहि रहत। मुस्की दैत रघुवीर बाजल- “आइसँ हम सभ एकसूत्रमे बन्हि अपन जीवनक भविसक तैयारीमे लागि जाइ।”



शब्द तिथि: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

आठम पड़ाव

पाँच बर्खक पछाइत, कामेसरक मन मानि गेलैन जे जँ अपन हाथक औजार दुरुस्त रहत तँ जीवन चलब किछु ने छी। माने आसानीसँ जीवनक गाड़ीकेँ खींच सकै छी।

ने खाइ-पीबैक अभाव आ ने नोकरीक दरमाहा-वेतनसँ कम आमदनी पतिकेँ देखि सुभद्रा सेहो मने-मन आनन्दित जीवनक अनुभव कइये रहल छेली। मात्र भोजन बनाएबटाकेँ अपन काज सुभद्रा बुझै छैथ। एकटा तेहेन दाइ रखि नेने छैथ, जिनकर संस्कार घरक गारजनीसँ भरल छैन माने परिवारक मुँहपुरुखीसँ। जइक चलैत चंचलिया अपन बेटा-पुतोहुसँ झगड़ा करि नोकरी करै छैथ। ओना, दरमाहाक नामपर जीवने-यापनटा छैन, मुदा से कामेसर बुझि रहला अछि जे अनुमानित जेते वेतन दाइकेँ हेबा चाही तेते हिनका नामपर मासे-मास जमा करैत रहब तँ सालमे एकबेर जे देशाटन करब तइमे हुनको तीर्थाटन करा देबैन। जइसँ एते तँ कहैले हेबे करत जे बेटा-पुतोहु छोड़ि देलकैन तैयो ओ अपना कमाइसँ अन्तिमो समयमे सात गंगाक स्नान सालमे एकबेर करिते छैथ। तइसंग ईहो हएत जे धर्मक नामपर कएल खर्च बेइमानी नहि होइए।

सोभावमे जे गारजनी चंचलियाक छेलैन तइमे बेटा-पुतोहुसँ झगड़ा भेला पछाइत किछु मोड़ लेलकैन। मोड़क कारण भेलैन जे अपन परिवार आ दोसर परिवारक बीचक मानसिक दूरी, चंचलियाक मनोभावकेँ कामेसर नीक जकाँ नहि बुझि सकला मुदा सुभद्रा तह तक आँकि लेली। जइसँ अपन बच्चोक सेवा आ परिवारक कपड़ो-लत्ता खींचबसँ लऽ कऽ चुल्हि लगक जरना-काठी धरिक सभ काजक सोल्होअना भार चंचलियाक माथपर लादि देलैन। जइसँ चंचलियाकेँ कखनो ने छुट्टी भेटैन आ ने अपन गारजनीक संस्कार जोर मारैन। अपन बेटी जकाँ सुभद्रा चंचलियाक बनि अपन भार उतारि लेली। ओना, बेटीक प्रति चंचलियाक मनमे अखनो

एहेन धारणा बनले छैन जे कमाइ-खटाइवाली जखन बेटी होइए तखन परघर गेने ओ परधन छी, तँए जेते सम्भव हुअए तेते कम सेवाक उपयोग माता-पिताकेँ करक चाही। मुदा ऐठाम ईहो प्रश्न तँ अछिए जे जन्मसँ बिआह धरिक जे बीचक समय अछि, वएह समय बेटीक निर्माणक सेहो छी। माइये ने बेटीकेँ भानस करैक लूरि सिखौथीन आकि पिता। हँ, ओहन स्थितिमे पितो जरूर सिखौथीन, जखन मातृहीन बेटी भऽ जाइए। ओना, परिवारक महजालक जाल ओहन अछिए जे जगह बदैल पिता सेहो बेटीक सेवा करिते छैथ आ सासुर बसलो पछाइत बेटी सेहो माता-पिताक सेवा करिते छैथ।

ओना, चंचलियाक मनमे सदिकाल बनल रहिते छैन जे जेकर अन-पानि खाइ-पीबै छिऐ तेकरा जँ एकटा नीक बोल नहि कहबै सेहो केहेन हएत। तँए बेसीकाल चंचलिया सुभद्राकेँ कहल करथिन-

“कनियाँ, जिनगीमे आरो की अछि, सुख-भोगसँ जिनगी जीब ली, यएह ने भेल मनुक्खक जिनगी।”

ओना, अपना धुनिमे चंचलिया बजै छेली, मुदा सुभद्राक देहमे तेकर प्रभाव नइ पड़ै छेलैन, ओना कनकनी-झनझनी नहि अबै छेलैन, सेहो बात नहियेँ अछि। तथापि सेवाकेँ हृदयसँ सेवा करबैक खियालसँ सुभद्रा नकछोहैन करबे करैथ-

“दादी, सभसँ पैघ कुकर्म छी बाल-बच्चा हएब।”

‘बाल-बच्चा’ सुनि चंचलियाक मन दहैल जाइन। दहलाइत बाजैथ-“कनियाँ, जँ से लोक बुझि कऽ मानत तँ ई दुनियाँ चलत। जे दुनियाँ देखै छी से दुनियाँ रहि भलेँ सकैए मुदा चालि तँ धरत मनुक्खे बुते। अहाँकेँ कोन दुख अछि, भगवान तेहेन कमासुत पति देलैन जे दिन दूना राति चौगुणा होइए, तैपर बाल-बच्चाक सेवा-टहल करैले हमहूँ छीहे तखनो जँ सुख-भोग नहि करब तँ जीवने की भेल।”

सुभद्रा अपन पीठपोहू बना मनसँ मनमे रोपि चंचलियाकेँ तेना राखए लगली जे चंचलिया साँझ-भोर अपन बेटा-पुतोहुकेँ दसटा गारिक असीरवाद प्रति दिन दइ छेली। संजोग बनल, पाँच बर्खक बीच सुभद्राकेँ

तीन सन्तान, तीनू बेटीए, भऽ गेलैन। सभतरहक सुविधा रहने सुभद्राकेँ अभावी महिलासँ सन्तान जन्मक पीड़ा कम होइ छेलैन।

बेटी जन्मक प्रति कामेसरक मनमे कहियो ई नहि उठलैन जे समाजक बीच पढ़ल-लिखल नौजवान युवक हमहूँ छी तँए किए ने नव पीढ़ीकेँ बुझा बेटा-बिआहक लेन-देनक प्रथाकेँ समाप्त करी।

नीक कमाइ भेने बेटी बिआहकेँ घरक सामान्य प्रक्रिया कामेसर बुझै छैथ। तँए ई बुझैक खगते की छैन जे सभ कालमे शास्त्र-पुराणक विचार सभ बुझै छिऐ मुदा बिआह आ बिआहक दान-दहेज लइ घड़ीमे सभ किछु बिसैर जाइ छी। जइ समाजमे बेटाक प्रति दहेज लेल पिताक मुँहपर दुतकारनिहार होइ छला, तही समाजमे ओहन लोक माने दुतकारनिहार, अपने अखन मुड़ी गोंति सड़कपर झुटका गनए लगल अछि। यएह छी आजुक समाज। अपन काजमे कामेसर तेना मगन भऽ गेला, माने रमि गेला जे समाजक संग अपन परिवारोकेँ बिसैर गेला।

समाजक बीच दान-दहेजक बेवहार देखि कामेसर दान-दहेजकेँ समाज चलैक प्रक्रिया, माने सामाजिक चलैन बुझि रहल छैथ। अखन तक कामेसरक जानकारीमे दूटा ट्रेक्टरक जे आमदनी छेलैन तइसँ डेढ़िया-दोबर आमदनी हुअ लगलैन। डेढ़िया-दोबर आमदनी होइक प्रक्रियामे किछु खास-खास परिस्थिति भेटलैन। पहिल ई भेटलैन जे गाम-समाजमे जेते काज अछि ओइ काजकेँ सम्हारने बिना समाज केना ठाढ़ हएत। मुदा समाजो तँ समाज छी। बेकता-बेकती समस्यो अछि आ समाधान करैक रस्तो अछिए। जेते काज करैक माने ट्रेक्टरसँ काज लइक, शक्ति कामेसरकेँ छेलैन, आठ घन्टाक, तइसँ आगू बढ़ि तेरह-चौदह घन्टा काज लिअ लगला।

दोसर परिस्थिति कामेसरकेँ ईहो संग देलकैन जे जानकार लोक जकाँ लेन-देन नहि रहलैन। गमैया लोक, गौआँ बुझि आँखि मुनि बिसवास करैत रहलैन। तइसँ ड्राइवरक माध्यमसँ किछु ऊपरी आमदनी सेहो भाइये जाइ छैन। तेसर ईहो परिस्थिति कामेसरकेँ संग देलकैन जे इलाकाक जेतेक ट्रेक्टरबला छैथ, सभक संग लेन-देनक सम्बन्ध सेहो बनि गेलैन, जइसँ नव समाजक रूपमे एकटा नव समाजक निर्माण सेहो भेलैन। जइसँ

ऐगला-पैछला कमाइक आशामे लेन-देन सेहो सहयोगी भेलैन। घरसँ सटले, माने कामेसरक घरक सटले, डेढ़ कट्ठाक चौमास, जे बासभूमि सेहो छी, डाकपर चढ़ा कीनि लेलैन। तैसंग गामक बीचमे जे चौबट्टी अछि, तैठाम सेहो कट्ठा भरि जमीन कीनलैन। ओना, कामेसरक मनमे ईहो नचिये रहल छेलैन जे मकान बनौने कारोबार कऽ सकै छी, रहैयोले तँ मकाने चाही, तैसंग ईहो तँ छेलैन्हे जे बैंकेक रुपैआक आमदनी जकाँ आमदनी सेहो अपने औत। खाएर जे किछु कामेसरक मनमे रहल होनि मुदा ईहो तँ बलिहारी देले जा सकैए जे घर लगसँ गामक चौक होइत, तीन कोस हटल बाजारमे सेहो डेढ़ कट्ठा घराड़ी कीनि लेला। तैसंग फूसिघरे किए ने होइ, मुदा घर बना कामेसर अपन परिवारकेँ बजारू जीवन तक सेहो पहुँचेबे केलैन।

पाँच सालक बीच जहिना कामेसरक जीवनमे आर्थिक बाढ़ि एलैन तहिना रघुवीरो आ मुनेसरोकेँ भेबे कएल। तेतबे नहि, गामक लोकक बीच श्रमक प्रति आकर्षण सेहो जगबे कएल।

❑ शब्द तिथि: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

नअम पड़ाव

दस बर्खक पछाइत कामेसरक जीवन जेना ढहि कऽ समतल भूमि जकाँ बनि गेलैन। ने ओ देवी आ ने ओ कराह रहलैन। लोहाक बनल इंजन एक निश्चित अवधिक लेल होइए। तेकरा तेना उपयोग करैक अछि जे अपन पारिवारिक जीवनक संग पूजीक जिनगीक सेहो केना जीवित बनि चलत तइ दिस कामेसरक नजैर गेबे ने केलैन। स्वर्गक कल्पवृक्ष जकाँ–जे मांगब, जेते मांगब भेटैत रहत–एक्के उपे पाँच बर्ख धरि दुनू ट्रेक्टर भरपूर आमदनी कामेसरकेँ देलकैन। छोट-मोट पार्ट तँ सामान्य रूपेँ लगिते अछि मुदा अस्वस्थ शरीर जकाँ जखन इंजन अस्वस्थ हुअ लगलैन, तखन एक-एक पार्टक टूटो-फूट आ मरो-मरम्मतिक खगता हुअ लगलैन, जइसँ आमदनीक अधिकांश भाग, अधिकांश भागक दू रूप पहिल गाड़ी कम चलब आ दोसर पार्ट कीनैक खर्च, गाड़ीए दिस जाए लगलैन। मुदा तैयो कामेसरक मनसूबामे मिसियो भरि डगमगाहट नहियेँ एलैन। तैसंग ईहो भेलैन जे ट्रेक्टरक बैंक लोनकेँ बंगाल सरकार माफ कऽ देलकैन।

जीवनक आमदनीमे कमी, माने आर्थिक कमी, रहितो कामेसर अपन जे छवि समाजमे बना लेलैन अछि तइमे कमी नहि हुअए, तेकर पूर्तिक शक्ति भलेँ क्षीण किए ने भेल होनि, मुदा ओइ क्षीणताकेँ अपने मनमे दाबि आनक मनमे अपनाकेँ ओहिना जीवित रखला, जेना कठ-पुतली नाच होइए। खाइ-पीबैक वस्तुसँ लऽ कऽ ओढ़ै-पहिरैक कपड़ाक संग पारिवारिक बेवहारक रख-रखावमे कमी सेहो आबए लगलैन। जइसँ अपनो आ परिवारोकेँ अकासक तरेगन दिनेमे देखाए लगलैन। ओना, सुभद्रा जे बी.ए. पास छैथ, पतिक मनोवेगकेँ सेहो आ मनीवैगक दाबकेँ सेहो बुझैत रहली, मुदा जहिना पति पत्नीक आगू आ पत्नी पतिक आगू अवाच नहि बाजए चाहै छैथ तहिना सुभद्रा सेहो सभकिछु बुझितो किछु ने नहि बाजए चाहै छेली। मनमे संतोखक गाछ हरियाएल रहबे करैन जे

अपन सीमा बुझि सभकेँ जीबाक चाही। जखन घरक (परिवारक) गारजन पति छैथ तखन हुनका काजमे किछु बाजब माने दखल देब, पत्नीक लेल अनुचित छीहे। केतौ-केतौ होइतो अछिए।

ओना, कामेसरक मनमे चिड़चिड़ापन सेहो भरपूर जागिये चुकल छेलैन। गाम-समाजक तँ अपन इज्जत-प्रतिष्ठा अछि जे समत्व रूपमे रहल अछि, ओना एकत्व रूपमे सेहो अछि, रहबो केना ने करत। समत्व-सँ-एकत्व आ एकत्व-सँ-समत्वक बीचक आबा-जाही सभक जीवनमे लगल रहिते अछि। गामक बगलेक गाममे माने पलारपुरक सटल दुलारपुर गाममे दुनियाँलाल नामक एकटा बेकती छैथ।

समाजमे दुनियाँलालक अपन पहचान छैन जइ पहचानक फल सेहो भेटिते छैन जे झूठो बजनिहार हुनका लग आबि सत्य बात सुनबो करैए आ बजबो तँ करिते अछि। भलेँ ओ ओहने बजनिहार किए ने हुअए जे बाघकेँ बिलाइक भतीजीए कहैत होउ।

दुनू गामक चौकपर, माने दुलारपुर आ पलारपुरक बीच, दसटा दोकानक चौक अछि जेकरा पलारपुरबला पलारपुरक चौक बुझै छैथ आ दुलारपुरबला दुलारपुरक चौक बुझै छैथ। संजोग भेल जे कामेसर सेहो भोरक एकतोर काज करि ओही चौकक एकटा चाहक दोकानपर पहुँचल छला आ दुनियाँलाल सेहो पहुँचला। गरमाएले कामेसर चाहक दोकानपर पहुँचिते जोरसँ बजला-

“दुलारपुरबलाकेँ जवानक कोनो ठीक नहि अछि.!”

खगल लोकक मनमे असंतोषसँ जहिना होइए जे की भेटत, केतए भेटत; तहिना कामेसरकेँ सेहो मनमे जनमियेँ गेल रहैन। घटबीए धारक पानि जकाँ कामेसरक दिन-दुनियाँ धीरे-धीरे निच्चाँ उतरए लगलैन। चाहक दोकानपर बैसल दुनियाँलाल बिना किछु बजनहि कामेसरक गट्टा पकैड़ पुछलकैन-

“की दुलारपुरबलाकेँ जवानक ठीक नहि अछि?”

संस्कारसँ कामेसर अपनाकेँ ओइ सीमापर स्थापित कऽ लेने छैथ जे सभ्य समाजक बेकती सभ्य होइए। कामेसरक मनमे किछु दिन बनल

रहलैन जे पछुआएल समाजक बीच पहिल इंजीनियर छी, कलकत्ताक माटि-पानिमे अपन वालावस्था बीतल अछि। मुदा से सभ विचार धीरे-धीरे मनसँ विलीन भऽ गेलैन, आ मनमे रोपा गेलैन जे अपनो पाइबला छीहे आ संगियो-साथी पाइयेबला छैथ।

जहिना दुनियाँलाल गट्टा पकैड़ कामेसरकेँ पुछलकैन तहिना कामेसर अपना गट्टामे झिट्टा मारि छोड़बए लगला कि दुनियाँलाल तराक-दे मुँहपर एकटा थापर मारि पुछलकैन-

“अहाँ इंजीनियरिंगक शिक्षा पौने छी, बड़बढ़ियाँ, मुदा समाज की छी, केना बनल अछि आ केना बनल आगू मुहेँ दौगैत चलत, एहेन विचार तँ हर मनुक्खमे एबा चाही। से जाबे धरि नहि औत ताबे धरि तँ समाज लड़खड़ाइते रहत किने? तैबीच जे अहाँ बेकतीक काजकेँ सामाजिक रूपमे बुझि बजै छी, तेतबो बुझैक अवगति नहि अछि।”

मुँहमे थापर लगला पछाइत कामेसरक मनमे जेना चेत जगलैन। जइसँ अपन कमी मनमे जरूर एलैन मुदा लोकक बीच जे थापर मुँहमे लगल छेलैन, तेकर विसविसी मनमे रहबे करैन। बजला-

“गाम-गामक सभ्य लोक चौक-चौराहापर बेइज्जत होइए।”

दुनियाँलाल बजला-

“की न्यायालय चलिकऽ फड़ियाएब.! आकि समाजेमे दस गोरेकेँ बइसाकऽ फड़ियाएब?”

दुनियाँलालक विचार सुनि कामेसर सकसका गेला। दुनियाँलालकेँ अखन तक कामेसर नहि चिन्हिने, से आइ चीन्हि गेला। तैबीच दुनियाँलाल पुन: बजला-

“समाज छी, सभकेँ एकेठाम रहब अछि।”

दुनियाँलालक विचार जे ‘समाजमे सभकेँ एकेठाम रहबाक अछि’ सुनि कामेसर चुपे रहि गेला। चाह पीब पुन: अपन काजपर पहुँचला। तखन दुनियाँलालक मनमे उठलैन जे ईहो बातक जानकारी तँ लिअ पड़त जे कामेसर एहेन बात बाजल किए। संजोग बनल, संजोग कि बनल जे गाम-समाजमे एना होइते अछि जे जखन दू गोरेक बीच कहा-कही होइए

तँ दुनू अपना-अपना रस्ते समाज दिस बढ़बे करैए तइले समाजोकेँ जना प्रतिकारक रस्ता सेहो बनिते अछि। रामलाल सेहो अपन विचारकेँ जनबैले चाहेक दोकानपर पहुँचला। रामलालकेँ देखिते दुनियाँलाल बजला-

"रामलाल भाय, अहाँ बहुत दिन जीब।"

जहिना कोनो खिस्सा-पिहानी वा कोनो पोथी पढ़ए लगै छी, तैबीच जहिना कोनो पात्र बेर-बेर आगूमे अबैत रहै छैथ तिनकर औरुदा बेसी भइये जाइ छैन, तहिना रामलालकेँ देखि दुनियाँलाल बाजल छला। अपन व्यथित कथाकेँ रामलाल सुनबैत बजला-

"दुनियाँ, तोहर मोल आन गाममे जे हुअ मुदा दुलारपुरक तँ शिरमौर्य हम तोरे बुझै छिअ। गामक बात छी, तोहीं सभ ने देखबहक।"

रामलालकेँ बुझल नहि जे दुनियाँलाल एक थापर कामेसरक मुँहपर मारि चुकल छैथ।

आहे-माहे, रामलालक मुहसँ सुनि, किसुनलाल चरियबैत बाजल-

"रामलाल भैया, अहूँ रामे जकाँ बड़ मायावी छी, केतौ ब्रह्म बनि जाइ छी तँ केतौ बनवासी आ केतौ सीताक भाँजमे गाछो-बिरीछसँ पुछए लगै छिऐ, तँ केतौ रामलला सेहो बनि जाइ छी.! सोझ-साझ बाजू जे कामेसरक संग की भेल अछि?"

मनक पीड़ाकेँ सुनि जहिना कियो ओकर पीड़पनकेँ पकड़ए चाहै छैथ, जइसँ पीड़ितकेँ जे पीड़पन भेटै छैन तहिना रामलालकेँ सेहो भेलैन। हलसैत बजला-

"किसुन ट्रेक्टरक काज करै छैथ। एडभान्स अधा पाइ दऽ देने छेलिऐन। काज भेला पछाइत जखन हिसाब करए लगलौं तखन एडभान्स पाइ जोड़बे छोड़ि देने छैथ।"

रामलालक विचार सुनि दुनियाँलाल घटनाकेँ बिसरजने करब नीक बुझलैन। जँ एहेन-एहेन घटनाक गिनती करए लगब तखन जे बुझै छी जे आइधरि चौदहो हजार लड़ाइ दुनियाँक धरतीपर भेल अछि, से बात नहि अछि, एक-एक गामक एहेन इतिहास अछि जे चौदह हजारसँ बेसीए लड़ाइ भेल अछि। खाएर जे अछि, घटना बिसरजन करैत किसुन लाल

बजला- “भाय साहैब, छोड़ू ऐ बातकेँ। काजक बेर अछि अपन-अपन दुनियाँ देखए चलै चलू।”

दिनुका भोजन करैले जखन कामेसर एला तखन सुभद्रा भोजने करैकाल बजली-

“डॉनवास्कोबला तीनू बच्चाकेँ चेतावनी दैत कहलक अछि जे परसू धरि जँ फीस नहि जमा करब तँ विद्यालयसँ निकालि देब।”

जहिना कोनो झंझावात कानमे पड़िते झनकारि दइए तहिना कामेसरक मन झनैक उठलैन। झनैक ई उठलैन जे अपने कलकत्ताक ओइ कौलेजमे पढ़ने छी जइमे सुभाष बाबू, विधानचन राय आदि अनेको बंगालक रत्न पढ़ने छैथ, पत्नी सेहो भागलपुरक टी.एन.बी. कौलेजसँ ग्रेजुएशन केने छैथ। तैठाम बाल-बच्चाकेँ डॉनवास्को सन विद्यालयसँ चेतावनी भेट रहल अछि.!

कामेसरक मन टुटए लगलैन। टुटैत मन बनर्जीदादाक ओ बात आइ मानैले तैयार भऽ गेलैन अछि जे बात कामेसरकेँ इंजीनियरिंग कौलेजमे प्रवेश पबै दिन बनर्जीदादा कहने छेलखिन जे ‘कामेसर, दृढ़ संकल्प ले दृढ़ पथोक खगता अछि, जँ से नहि भेल तखन ओइ संकल्पकेँ रहै-जाइक अनिश्चितता बनले रहैए।’



शब्द तिथि: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

दसम पड़ाव

अखन धरि जे सामान्य जिनगीक आयुक अँटकार रहल अछि, माने शतायुक आधारपर, तइ हिसाबे कामेसर आधापर पहुँच चुकल छैथ। माने अर्द्धायुपर पहुँच चुकल छैथ। विद्यालयमे पहिने जेना होइ छल जे सालमे वर्ग बदलै छल आ बीचमे, छह मासपर एकटा छमाही परीक्षा सेहो होइ छल, जे अखन तीन मास, छह मास, नअ मास आ बारह मासक भऽ गेल अछि। तहिना आइ जीवनक आधा उमेर बीतला पछाइत कामेसर अपन जीवनक परीक्षा मने-मन लऽ रहला अछि। लेबो केना ने करता, धर्मान्ध तँ छैथ नहि, बेवहारान्ध रूपमे एकटा श्रमिकक जीवन तँ छैन्हे।

परिवारमे कामेसर देखि रहला अछि जे छह सन्तानमे सभसँ छोट बेटा आ पाँच बेटी जेठ अछि। जइमे जेठ तीनू बेटीक बिआह, तीनू कीनल घराड़ी बेचि केने छैथ, बाँकी दू शेष छैन। केतए-सँ दुनूक बिआह करब? तहूमे दिनानुदिन बेटी बिआहक खर्च बढ़ले जा रहल अछि। जहिना अनभुआर जगहपर रस्तामे बोन-झाड़ देखने मन डेरा जाइए, तहिना कामेसरकेँ आगूक रस्ता डेरौन लगि रहल छैन। संगे मनमे ईहो सुमार उठि रहल छैन जे दुनू छोट बेटीकेँ कहुना-कहुना खाली नाम-गामटा लिखब सिखा सकलिऐ.! अपनो तँ पिता छला, जिनगी भरि गोदामक बोरा पीठपर उठा, पसीना चुबा एक सीमा तक पढ़ौलैन.! की हम अपन बाल-बच्चाकेँ तेतबो कऽ सकलिऐ.? ने अखन तक एकोटा घर बना सकलौं आ ने..! तैपर परिवार सेहो पहिनेसँ आब नमहर भऽ गेल अछि..!

विसमित भेल कामेसर मने-मन अपन जिनगीकेँ परीक्षित रूपमे निहारि रहल छला। तहीकाल सुभद्रा लगमे आबि पुछलकैन-

“मन किए मारने छी, एक गड़ूकेँ बहत्तैर आशा होइए। आबो जीवनकेँ ढंगसँ चीन्हू। जखनेसँ लोक जीवनकेँ चीन्हैक कोशिश करए लगै छैथ तखनेसँ जीवनमे जगमगपन रस्ता जगमगाए लगै छैन।”

पत्नीक विचार सुनि कामेसरक मन जेना सचेत भेलैन। जइसँ पत्नीपर जेतेक बिसवास अखन धरि छेलैन तइमे बढ़ोत्तरी भेलैन, जइसँ पत्नीक विचारक प्रति आकर्षण बढ़लैन। नि:सहाय जकाँ कामेसर सुभद्रा दिस तकैत बजला-

"की करब नीक हएत, से बुझिये ने पेब रहल छी।"

पतिक विचार सुनि अपन विचारकेँ जगमगबैत सुभद्रा बजली-

"शुरूहेमे जखन कहने रही जे सरकार दूटा ट्रेक्टर देलक, अहाँ ओकरा बेचिकऽ नोकरी पकैड़ लिअ। तैपर अहाँ की बाजल रही?"

जेना कियो केकरो उठाकऽ पटैक छातीपर बैस पुछैए, तहिना पत्नीक बोलसँ कामेसर मर्माहत हुअ लगला। सुमारक हुअ लगलैन, स्वतंत्र जीवनक स्वतंत्र बेवसाय..! मुदा स्वतंत्र जीवन जीबैक जे कला अछि, भरिसक तइमे भारी चूक भेल अछि.! जँ से नहि भेल अछि तँ केना बनर्जीदादा अस्सी बर्खक उम्र धरि दनदनाइत जीवन बितौलैन जे कहियो दोसराक खगता नहि भेलैन। जहिना नोकरीक जीवन आ क्रिया-कलाप शुरूमे छेलैन तहिना जीवनक अन्तिम सीमा धरि निमाहबो केलैन।

अतीतपर परदा दैत कामेसर बजला- "आब की करब नीक हएत?"

संजोग बनल। एन.एच.57 बनल शुरू भेल जइमे इंजीनियरक खगता भेल। प्राइवेट कम्पनीक काज, उम्रक कोनो आधार नहि, काज करै जोकर इंजीनियर चाही। ई बात जहिना कामेसरकेँ बुझल छेलैन तहिना सुभद्राकेँ सेहो बुझले रहैन। अपन विचार दैत सुभद्रा बजली-

"एन.एच. सतावनमे काज शुरू भेल अछि, जइमे इंजीनियरक खगता अछि, बहाल भऽ जाउ।"

पत्नीक विचार सुनि कामेसर आइ ओहन मोड़पर पहुँच गेला, जेतए एक दिस स्वतंत्र जीवनक विचारक हत्या भऽ रहल छैन तँ दोसर दिस आर्थिक तंगी जान लेबापर तूलल छैन।

जहिना जीवन सभकेँ प्रिय होइए तहिना कामेसरकेँ सेहो छैन्हे। मुदा जीवनो तँ जीवन छी, कियो विचारक संग जीवन बेतीत करै छैथ तँ कियो

शरीरक रक्षार्कें जीवन बुझै छैथ। ओना, कामेसरक जीवन जँ एकाएक टुटल रहैत तँ किछु जीवित रक्त विचारमे रहबो करितैन, मुदा आइ बीस बर्खसँ टुटैत-टुटैत एतेक टुटि गेलैन अछि जे विचारक रक्तो या तँ रंग बदैल पानि जकाँ भऽ गेलैन अछि वा मरुभूमिक जलाशय जकाँ सुखि गेलैन। हारैत जीवन आ ढहैत विचारक मोड़पर आबि कामेसर बजला-

"काल्हिये जाकऽ बहाल भऽ जाएब।"

पतिक विचार सुनि सुभद्राक अपन पैत्रिक परिवारक दृश्य पुन: मनमे नाचए लगलैन। बजली किछु ने, मुदा मन मधुआ गेलैन।



शब्द तिथि: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

एगारहम पड़ाव

सत्तैर बर्खक अवस्थामे कामेसर पहुँच गेला अछि। सरकारी सेवा तँ रहलैन नहि जे अवकाशक संग पेंशन भेटितैन। जेते वेतन तेते ड्यूटी तँ करइ पड़ि रहल छैन।

लगातार बारह घन्टा ड्यूटी केलाक पछाइत कामेसर डेरा पहुँचला। चूरम-चूर जहिना देह भेल छैन तहिना काजक ओझराहटिसँ मनो भइये गेल छैन। परिवारमे मात्र दुइये गोरे छैथ, अपने आ पत्नी। पाँचो बेटी अपन-अपन सासुर बसै छैन आ समुचित जिनगी नहि भेटने बेटा, गुलाब दिल्लीमे रहै छैन।

समुचित जिनगीक माने भेल जे जखन गुलाब स्कूलमे जाइ-जोकर भेल तखन कामेसरक आर्थिक स्थिति पतरा गेल छेलैन। ओना, बेटाक जन्मक उपलक्ष्यमे नीक जकाँ भोज-भात केने छला आ भोज खेनिहारो सभ माथपर हाथ दैत कहने रहबे करथिन जे 'बौआ, पितोसँ पैघ पदो पेबह आ पैघ इंजीनियरो हेबह.!' मुदा जहिना वायु स्वरूप वचन छेलैन तहिना वायुमे मिलि वायुमण्डल बनि गेलैन। एकलौता बेटा होइक कारणेँ, दुनू बेकतीक माने माता-पिताक पूर्ण इच्छा रहैन जे गुलाबकेँ नीक रहन-सहन आ नीक शिक्षा दियाबी मुदा जीवनक आर्थिक प्रवाह तँ कामेसरक सुखि गेल छेलैन, तँए विचारक धार सेहो म्रियमाण होइत ओतए पहुँच गेलैन जैठाम बेटाक प्रति सेवाक भावना मनमे भरपूर रहितो कामेसर नहि कऽ सकला।

डेरा पहुँचिते कामेसर देखलैन जे पत्नी दर्दसँ छटपटा रहली अछि, कियो देखनिहार नहि जे डॉक्टरो बजा अनितैन। थकानसँ कामेसरक देह अपने चूरम-चूर भेल, बेहोशीक अवस्थामे, दुनू आँखिसँ नोर टघरए लगलैन। अपने मन कहए लगलैन जे जिनगीक कोन मोड़पर, कोन रस्ता छुटल आ कोन पकड़ाएल से अखनो नहि बुझि पेब रहल छी। पुन: अपने

मन कहलकैन, पचास बर्खसँ ऊपर धरिक ने अपन विचारक जिनगी छल, मुदा पछातिक तँ पत्नीक विचारक रहल। ओहो ने स्नातक छथिए।

हारल-थाकल कामेसरक मुहसँ अपने निकललैन- “यएह छी जीवन, कानि जीबू कि हँसि जीबू.!”



शब्द तिथि: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

Notes